इस अङ्क का मूल्य ६ आना

कॉङ्ग्रेस-अङ्क

Price Six Annas

सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... ... ९) रु०
छः माही चन्दा ... ५) रु०
तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य ... ≡)
Annas Three Per Copy

# भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

**एक प्रार्थना**

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए!

वर्ष १, खण्ड ३ | इलाहाबाद—शुक्रवार; २७ मार्च, १९३१ | संख्या २, पूर्ण संख्या २६

# नए राष्ट्रपति सर्दार वल्लभभाई पटेल

# भविष्य



वर्ष १, खण्ड ३, | इलाहाबाद—सोमवार, ३० मार्च; १६३१ | संख्या ८, पूर्ण संख्या २६

# राष्ट्रपति सर्दार पटेल का भाषण

बहिनो और भाइयो !

मैं अपने संक्षिप्त भाषण के प्रारम्भ में पण्डित मोतीलाल जी की मृत्यु पर श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, पण्डित जवाहरलाल और अन्य कुटुम्बियों के दुःख में हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता हूँ। मैं जानता हूँ, कि समस्त राष्ट्र की सहानुभूति के कारण यह दुःख बहुत कुछ कम हो गया है। देश की इस भीषण परिस्थिति में उनकी मृत्यु होने से उस पर भयङ्कर वज्रपात हुआ है। पण्डित मोतीलाल की सहायता की उस समय सब से अधिक आवश्यकता प्रतीत हुई थी, जब महात्मा गाँधी लॉर्ड इर्विन से सन्धि की बातचीत कर रहे थे। मौलाना मुहम्मद अली की मृत्यु के शोक के अभी हमारे आँसू सूखने भी न पाए थे, कि राष्ट्र पर यह एक नया प्रहार हो गया। यद्यपि दुर्भाग्यवश मौलाना मुहम्मद अली के और हमारे विचारों में मतभेद था, परन्तु हम उनकी वीरता, देश-भक्ति और निर्भीकता को कभी विस्मृत नहीं कर सकते। उन्होंने अपने हार्दिक विचारों को कभी छिपाने का प्रयत्न नहीं किया। मैं बेगम मुहम्मद अली, मौलाना शौकत अली और उनके समस्त कुटुम्ब के साथ अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रदर्शित करता हूँ। इन महापुरुषों के अतिरिक्त मैं उन अख्यात वीरों की मृत्यु पर भी समवेदना प्रदर्शित करता हूँ, जिन्होंने गत बारह महीनों में सत्याग्रह आन्दोलन में बिना किसी प्रसिद्धि की इच्छा से आत्म-बलिदान किया है। ईश्वर उनकी आत्माओं को शान्ति दे और उनका वह आत्म-बलिदान इस विकट युद्ध में हमें अधिकाधिक आत्मोत्सर्ग के लिए प्रोत्साहित करे।

## विप्लववादियों को फाँसी

सर्दार भगतसिंह, श्री० सुखदेव और श्री० राजगुरु की फाँसी से समस्त देश में असन्तोष की आग फैल गई है। मैं उनकी कार्य-पद्धति से सहमत नहीं हो सकता और इसमें सन्देह नहीं कि राजनैतिक हत्या उतनी ही अवाञ्छनीय है, जितनी एक साधारण हत्या। परन्तु सर्दार भगतसिंह और उनके साथियों के अनन्य देश-प्रेम, उनके अतुल त्याग साहस और निर्भीकता की मैं स्तुति किए बिना नहीं रह सकता। एक विदेशी गवर्नमेण्ट की निष्ठुरता का परिचय उतना अधिक और कभी नहीं मिला, जितना इन तीन वीरों को फाँसी पर लटकाते समय। समस्त राष्ट्र ने एक स्वर से उनकी फाँसी का विरोध किया और उनकी फाँसी की सज़ा रद्द करने की प्रार्थना की, परन्तु सब प्रार्थनाएँ निष्ठुरतापूर्वक ठुकरा दी गईं; परन्तु हमें इस फाँसी से आवेश में आकर अपने पथ से भ्रष्ट न हो जाना चाहिए। पशुबल के इस नृशंस प्रदर्शन से हृदयहीन शासन-विधान की ओर हमारी घृणा बढ़ती जा रही है; और यदि हम अपने निश्चित पथ पर आरूढ़ रहेंगे तो उससे हमारी शक्ति की वृद्धि होगी और हमें अपने उद्देश्य की प्राप्ति में भी सफलता प्राप्त होगी। ईश्वर इन वीर देश-भक्तों की आत्माओं को शान्ति दें और उनके कुटुम्बियों को इस बात से सन्तोष मिले, कि समस्त राष्ट्र ने उनकी मृत्यु पर ख़ून के आँसू बहाए हैं।

## आत्म निवेदन

आपने एक सीधे-सादे किसान को जिस प्रतिष्ठित पद पर आरूढ़ किया है, उस पर किसी भी देशभक्त को अभिमान हो सकता है। मैं यह अच्छी तरह से जानता हूँ कि आपने मुझे यह सम्मान एक तुच्छ सेवक की हैसियत से नहीं दिया, बल्कि इस ज़िम्मेदारी को सौंप कर आप ने गुजरात के आश्चर्य-जनक बलिदान का स्वागत किया है। गत बारह महीनों में जो अपूर्व राष्ट्रीय जागृति हुई है, उसका श्रेय यद्यपि सभी प्रान्तों को समान रूप से है, परन्तु आपने अपनी उदारता से उसका मुकुट गुजरात को पहिना दिया है। हमें इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि यह राष्ट्रीय जागृति आत्म-शुद्धि के रूप में अवतरित हुई है।

भूतपूर्व राष्ट्रपति पण्डित जवाहरलाल नेहरू

## युद्ध के प्राङ्गण में

यद्यपि आन्दोलन में भूलें हुई हैं, परन्तु इसमें किञ्चित सन्देह नहीं, कि भारत ने संसार के सम्मुख इस बात का ज्वलन्त उदाहरण रख दिया है, कि सार्वजनिक अहिंसात्मक आन्दोलन न तो केवल मनुष्य की महत्वाकांक्षा है और न स्वप्न; उसका निर्माण ऐसे दृढ़ सिद्धान्तों पर हुआ है, जिनमें मनुष्य मात्र को उन दुःखों से निवारण करने की शक्ति है, जो हिंसात्मक प्रवृत्ति के कारण उत्पन्न हो गए हैं। हमारे अहिंसात्मक आन्दोलन की सफलता का सब से बड़ा सबूत किसानों का सङ्गठन है। लोगों का विश्वास था कि उन्हें अहिंसात्मक युद्ध के लिए सङ्गठित करना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव है; परन्तु इस युद्ध में उन्होंने जो वीरता दिखाई है वह किसी से छिपा नहीं है। किसानों के अतिरिक्त स्त्रियों और बच्चों ने भी इस युद्ध में बड़ी वीरतापूर्वक भाग लिया है। युद्ध का बिगुल बजते ही वे युद्ध में कूद पड़े और उसमें उन्होंने जो कार्य किया, उसका इस अवसर पर अनुमान लगाना सम्भव नहीं है। परन्तु यह कहना अत्युक्ति न होगा, कि उन्होंने अन्तिम दिनों में युद्ध को सजीव अहिंसात्मक बनाए रखने की बहुत चेष्टा की है। यदि अहिंसा के सिद्धान्तों के अनुसार इस आन्दोलन पर विचार किया जाय तो हमारा युद्ध विश्व की शान्ति के लिए है और संसार ने—विशेषतः अमेरिका ने उसमें अपनी सहानुभूति प्रदर्शित की है और उस सहानुभूति से हमें सन्तोष और शक्ति मिली है।

## कॉङ्ग्रेस और गोलमेज़ परिषद

हाल ही में दिल्ली में जो सन्धि हुई है, उसमें हमें अपने राष्ट्रीय जीवन के इस वीर युग पर अधिक प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं रह जाती। आपकी कार्यकारिणी समिति ने आपकी स्वीकृति की आशा से सन्धि की थी और अब आप उसे स्वीकृत करने के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं। आपको उसे अस्वीकृत करने तथा वर्किङ्ग-कमिटी पर अविश्वास का प्रस्ताव पास करने का अधिकार है। परन्तु मुझे इसमें किञ्चित सन्देह नहीं, कि सन्धि दोनों दलों के हित की कामना से की गई है और आप इसे स्वीकृत करेंगे। यदि हम सन्धि स्वीकार न करते तो वह हमारी भूल होती और हमारे गत एक वर्ष के आत्म-बलिदान का कोई उपयोग न होता। हम सत्याग्रही हैं और इस हैसियत से हमें सदैव सन्धि के लिए तैयार रहना चाहिए। और इसलिए जब हमारे सम्मुख सन्धि का अवसर आया तब हमने गोलमेज़ परिषद में ब्रिटिश प्रतिनिधियों के सम्मुख पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव रखने की आशा से तथा प्रधान मन्त्री, वायसराय और कुछ सुप्रसिद्ध भारतीय नेताओं की प्रार्थना से हमारी वर्किङ्ग कमिटी ने इस बात का विचार किया कि यदि कॉङ्ग्रेस को देश के स्वतन्त्र अधिकारों पर ज़ोर देने की स्वतन्त्रता दी जायगी तो निमन्त्रण मिलने पर कॉङ्ग्रेस गोलमेज़ परिषद में भाग लेगी और भारत के लिए उपयुक्त शासन-विधान का निर्णय करेगी। यदि हमें कॉन्फ़्रेन्स में सफलता न मिली, तो अपना पुराना आत्म-

बलिदान का मार्ग हमें फिर से ग्रहण करना पड़ेगा। और फिर संसार की कोई शक्ति हमें कलङ्क का टीका न लगा सकेगी। हम अपने इच्छानुसार पूर्ण स्वराज्य लेंगे और फ़ौज, विदेशी नीति, अर्थ-विभाग के पूर्ण अधिकारों पर ज़ोर देंगे और यदि कोई प्रतिबन्ध रहेगा तो वह केवल भारत की हित-कामना के लिए होगा। जब सन्धि के द्वारा शक्ति दूसरे के हाथों में सौंपी जाती है, तब उस दल के हित के लिए प्रतिबन्धों की आवश्यकता होती है। भारत को रूढ़ियों की .गुलामी के कारण उसे बाहरी सहायता की आवश्यकता हो गई है। यदि ब्रिटेन हमें सहायता देने के लिए तैयार होगा, तो हम उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे। हमें अपनी फ़ौज को दक्ष बनाने की आवश्यकता है और हमें उसमें अङ्गरेज़ों की सहायता लेने में कोई विरोध नहीं है। मैंने उदाहरणार्थ केवल एक का उल्लेख किया है। इस प्रकार फ़ौज में कुछ ब्रिटिश ऑफ़िसर और कुछ ब्रिटिश सैनिक रक्खे जा सकते हैं, परन्तु हम अपनी फ़ौज का शासन अङ्गरेज़ों के हाथों में नहीं सौंप सकते। हम कृतज्ञतापूर्वक उनका उपदेश ग्रहण कर सकते हैं, परन्तु उनका नेतृत्व कभी स्वीकृत नहीं कर सकते। वास्तव में बात यह है कि शान्ति-रक्षा के नाम पर ब्रिटिश फ़ौज भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित रखने के लिए यहाँ रक्खी गई है। स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है, कि ब्रिटिश फ़ौज यहाँ अतिरिक्त विद्रोह के समय अङ्गरेज़ों के अधिकारों और अङ्गरेज़ स्त्री-पुरुषों की रक्षा के लिए रक्खी गई है। मुझे ऐसी एक भी घटना स्मरण नहीं आती, जहाँ विदेशियों के आक्रमण से भारतीयों की रक्षा के लिए भारतीय फ़ौज का उपयोग किया गया हो। सीमा प्रान्त पर अफ़ग़ानी हमले हुए हैं और ब्रिटिश ऐतिहासिज्ञों ने उनसे हमें यह पाठ के पढ़ाया है कि वे युद्ध हमले थे। ब्रिटिश ऐतिहासिज्ञों की इस धमकी से हमें भयभीत न हो जाना चाहिए हमें फ़ौज की आवश्यकता अवश्य है, परन्तु ऐसी फ़ौज की आवश्यकता नहीं, जिसका ख़र्च हमारा रक्त चूस कर चलाया जाता हो। यदि कॉङ्ग्रेस ने अपने अधिकार प्राप्त कर लिए तो फ़ौज में बहुत कमी होने की सम्भावना है।

## अर्थ-व्यवस्था

फ़ौज की तरह हम अर्थ-विभाग की व्यवस्था भी ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के हाथों में नहीं सौंप सकते। यदि राष्ट्र के हाथों में अर्थ-व्यवस्था नहीं रहेगी तो वह कभी फल-फूल नहीं सकता।

हमसे यह भी कहा जाता है, कि यदि लम्बे-लम्बे वेतन वाले ब्रिटिश सिविल ऑफ़िसर भारत में नियुक्त न किए जायँगे, तो शासन सुसङ्गठित न हो सकेगा और उसका नैतिक पतन भी हो जायगा। कॉङ्ग्रेस ने अपने कुछ ही वर्षों के सङ्गठन में अपने अवैतनिक या कम वेतन वाले कार्यकर्त्ताओं के द्वारा जिस शासन-योग्यता का परिचय दिया है, उससे उनकी योग्यता स्पष्ट हो जाती है। शासन को इस नैतिक पतन से बचाने के लिए हमारे धन का जिस प्रकार अपव्यय किया जाता है, वह ग़रीब जतना के लिए सह्य नहीं है इसलिए यदि भारत अपना उद्धार करना चाहेगा तो उसे बड़े-बड़े वेतनभोगियों के वेतनों में बहुत न्यूनता करनी पड़गी।

## राष्ट्रीय ऋण

राष्ट्रीय ऋण के सम्बन्ध में हम पर बहुत से दोष आरोपित किए जाते हैं ये दोष अन्याय-सङ्गत हैं। हमने ऋण के सम्बन्ध में कभी कोई विरोध नहीं किया। हाँ! हम यह अवश्य चाहते हैं, कि उस ऋण की निरपेक्ष जाँच हो जाय और उससे इस बात का निर्णय कर लिया जाय कि इस देश पर सच्चा ऋण कितना है।

## पूर्ण-स्वतन्त्रता

लाहौर कॉङ्ग्रेस स्वतन्त्रता का जो प्रस्ताव पास कर चुकी है, हम उससे एक इञ्च भी पीछे नहीं हट सकते। परन्तु इस स्वतन्त्रता का यह अर्थ नहीं है कि हम ब्रिटेन या किसी अन्य स्वतन्त्र राष्ट्र से सम्बन्ध ही न रक्खें। इसलिए ब्रिटेन और भारत के बीच में समानता का सम्बन्ध रहना कुछ असम्भव नहीं है। हम अपने आपस के लाभ के लिए यह स्थापित कर सकते हैं और अपनी इच्छानुसार उसे भङ्ग भी कर सकते हैं। यदि परस्पर सन्धि से भारत स्वतन्त्रता प्राप्त करेगा तो उसे ब्रिटेन से सम्बन्ध रखना पड़ेगा। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि देश में एक ऐसा भी दल है, जो इस बात पर विश्वास करता है कि यदि भारत और ब्रिटेन में सम्बन्ध रहे तो उसकी अवधि निश्चित हो जाना चाहिए। मेरे विचार उस दल से भिन्न हैं। मेरी सम्मति में ऐसा करना हमारी कमज़ोरी की निशानी है।

## संयुक्त शासन

भारत के लिए भविष्य में संयुक्त शासन-प्रणाली की रचना करना, इस समय जितना आकर्षक प्रतीत होता है, उसमें उतनी ही अधिक कठिनाइयाँ हैं। राजा-महाराजा अपने शासन की बागडोर ढीली करने के लिए शीघ्र ही तैयार न होंगे; परन्तु यदि वे अपनी प्रजा के लिए शासनाधिकार देने के लिए तैयार हो जायँ तो उससे भारत को बहुत लाभ होगा। उनके सहयोग से भारत में जन-सत्तात्मक शासन प्रणाली की नींव डालने में कोई बाधा उपस्थित नहीं हो सकती। मुझे आशा है, कि राजा लोग इस शासन-विधान की रचना में रोड़े न अटकाएँगे और उसमें पूर्ण सहयोग देंगे। उनकी जनता को भी उतने ही अधिकार दिए जाने चाहिएँ, जितने बाक़ी भारत के निवासियों को हों। संयुक्त भारत के निवासियों को कुछ समानाधिकार दिए जाने चाहिएँ और यदि उन्हें समानाधिकार हों तो उन अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालय भी एक ही हो। यह कहना अत्युक्त न होगा कि देशी रियासतों के प्रतिनिधियों का संयुक्त असेम्बली में निर्वाचित होना अत्यन्तावश्यक है।

## ब्रह्मा की समस्या

गवर्नमेण्ट की ख़बरें रोक लेने की नीति के कारण हमें वहाँ की सच्ची परिस्थिति का हाल मालूम नहीं होने पाता। इस समस्या का निर्णय कि ब्रह्मा भारत के साथ मिल कर रहेगा या अलग—वही स्वयं कर सकता है; परन्तु हमारा यह कर्तव्य है कि हम उसकी समस्या के सब पहलुओं पर विचार करें। ब्रह्मा में दो दल हैं, एक ब्रह्मा को भारत के साथ रखने के पक्ष में है और दूसरा विपक्ष में। और यदि विपक्षी दल को अपनी आवाज़ उठाने का अधिकार है, तो दूसरे दल को भी अपनी आवाज़ उठाने में स्वतन्त्रता देना आवश्यक है। इसलिए कॉङ्ग्रेस को जो यह सन्देश भेजा गया है कि ब्रह्मा को भारत के साथ मिलाए रखने वाले पक्ष को अपनी सम्मति प्रकट करने की स्वतन्त्रता नहीं है, उसका विरोध करना चाहिए। इस सम्बन्ध में जो यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया है, कि ब्रह्मा की समस्या का निराकरण उसकी जनता के ऊपर छोड़ दिया जाय, उससे मैं पूर्णतयः सहमत हूँ।

## हिन्दू-मुस्लिम एकता

परन्तु अन्य सभी समस्याओं के पहले हिन्दू-मुस्लिम समस्या का सुलझाना अत्यन्तावश्यक है। कॉङ्ग्रेस ने अपनी परिस्थिति लाहौर कॉङ्ग्रेस में बिल्कुल स्पष्ट कर दी थी। इस सम्बन्ध में उसने निम्न प्रस्ताव पास किया था:—

"नेहरू रिपोर्ट का निर्णय अस्वीकृत हो जाने के कारण जातीय मामले में कॉङ्ग्रेस की सम्मति देना अनावश्यक समझती है। क्योंकि कॉङ्ग्रेस का विश्वास है कि स्वतन्त्र भारत में यह समस्या राष्ट्रीय ढङ्ग से स्वयं सुलझ जावेगी। परन्तु चूँकि मुसलमान सिक्खों और अन्य अल्प-संख्यक जातियों ने नेहरू-रिपोर्ट के निर्णय को अस्वीकृत कर दिया है; इसलिए कॉङ्ग्रेस भारत के भावी विधान में उस समय तक कोई निर्णय स्वीकृत नहीं करेगी, जब तक वे जातियाँ उसे मञ्जूर न कर लें।"

इस प्रस्ताव के अनुसार कॉङ्ग्रेस किसी शासन-विधान की रचना में उस समय तक भाग नहीं ले सकती, जब तक इन अल्प-संख्यक जातियों की समस्या न सुलझ जाय। एक हिन्दू की हैसियत से, अपने भूतपूर्व सहयोगियों के निर्णय के अनुसार मैं इन अल्प-संख्यक जातियों को एक काग़ज़ और स्वदेशी फ़ाउण्टेनपेन दूँगा और उस पर उनसे अपनी शर्तें लिखने का आदेश दूँगा; और बिना किसी हिचकिचाहट के उस पर अपने दस्तख़त कर दूँगा। मैं जानता हूँ कि समस्या सुलझाने के लिए यह सब से सरल उपाय है और उसके लिए हिन्दुओं में साहस की आवश्यकता है। वास्तव में हमें काग़ज़ पर अङ्कित एकता की नहीं, बल्कि हार्दिक एकता की आवश्यकता है। और यह हार्दिक एकता उसी समय प्राप्त हो सकती है, जब हिन्दू अपना समस्त साहस एकत्र कर अल्प-संख्यक जातियों को उनकी माँगें समर्पित करने के लिए तैयार हो जायँ। एकता चाहे उपर्युक्त रीति से प्राप्त हो और चाहे किसी अन्य रीति से, परन्तु यह बात दिन प्रति दिन स्पष्ट होती जाती है कि जब तक इस समस्या का निर्णय न हो जाय, तब तक किसी कॉन्फ़्रेन्स में भाग लेना निरर्थक है। कॉन्फ़्रेन्स ब्रिटेन और हमारे बीच में समझौता कर सकती है। वह हमें राजाओं के निकट ला सकती है, परन्तु हममें एकता नहीं ला सकती यह एकता हमें अपने में स्वयं लानी पड़ेगी। कॉङ्ग्रेस को भी उसका लाभ करने में कोई यत्न न उठा रखना चाहिए।

## विदेशी कपड़े का बहिष्कार

यह सब को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए, कि कॉङ्ग्रेस जितनी शक्ति प्राप्त कर सकेगी उतनी ही पूर्ण स्वराज्य ध्येय की प्राप्ति में उपयोगिनी सिद्ध होगी। गत बारह महीनों में उसने निश्चय ही बहुत शक्ति प्राप्त की है और उसे वे ही समझ सकते हैं, जो समय के साथ चल रहे हैं। परन्तु वह पर्याप्त नहीं है और जल्दबाज़ी और घमण्ड से जल्दी खो भी जा सकती है। जो अपनी पूँजी पर गुज़र करता है वह फ़िज़ूलख़र्च कहा जा सकता है। इसलिए हमको और भी अधिक शक्ति प्राप्त करनी चाहिए। उसे प्राप्त करने का एक उपाय है इस समझौते को अक्षरशः पूरा करना और दूसरा है प्राप्त-शक्ति को दृढ़तापूर्वक अपने में रखना। इसलिए मैं अपने कार्य के उस अङ्ग के विषय में कुछ पंक्तियाँ कहना चाहता हूँ। हम विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार-सम्बन्धी कार्य बहुत-कुछ कर चुके हैं। वह उचित है और हमारा कर्तव्य है। बिना उसके भारतवर्ष की दरिद्र जनता भूखों मरती रहेगी। क्योंकि यदि सस्ता विदेशी कपड़ा भारत के ग्रामों में आता ही रहा, तो चरख़े वालों का रोज़गार नहीं चल सकता। अतएव विदेशी कपड़े को इस देश से निकाल बाहर करना चाहिए। यदि वह मुफ़्त भी मिले तो भी मँहगा है। भारतवर्ष के लाखों आदमी इसलिए नहीं भूखों मरते कि देश में धन नहीं है, वरन् इसलिए कि उन्हें काम नहीं मिलता, वे इसलिए भूखों मरते हैं कि उनके गाँवों में उनको सरलतापूर्वक फ़सल के बाद कोई काम ही नहीं मिलता। देश को इस बेकारी के रोग से छुड़ाने के लिए लगातार आन्दोलन की आवश्य-

स्वर्गीय श्री० राजगुरु
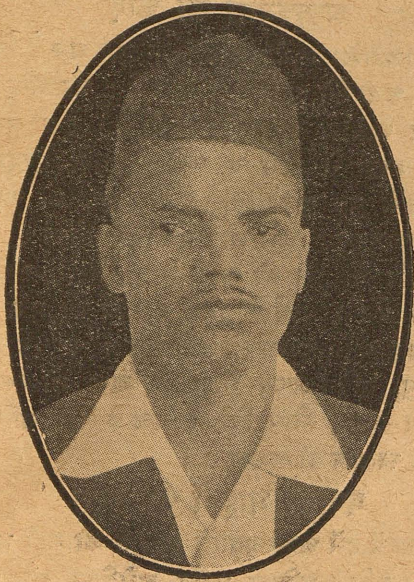
स्वर्गीय सर्दार भगतसिंह

स्वर्गीय श्री० सुखदेव

कता है। कोई उपयुक्त काम न होने के कारण बेकारी हमारे ग्राम निवासियों की रग-रग में समा गई है। इसके लिए सब से अच्छी युक्ति है, अनावश्यक होने पर भी स्वयं चर्खा कातना और खादी पहनना।

## भारतीय मिलों का कर्तव्य

अखिल भारतवर्षीय चरखा-सङ्घ ने बहुत महत्त्वपूर्ण काम किया है, परन्तु कातने और खद्दर का वायु-मण्डल पैदा करना कॉङ्ग्रेस का काम है। मेरी समझ में सब से अच्छा और प्रभावशाली बहिष्कार का आन्दोलन है। ऐसा इशारा किया जाता है, कि जो तर्क विदेशी वस्त्र के विषय में लागू होता है वही स्वदेशी मिल के कपड़े के लिए भी लागू होता है। यह कुछ हद तक ठीक है, परन्तु जितने कपड़े की भारतवर्ष में खपत है, उतना मिलों से नहीं बनता। बहुत वर्षों तक वे हमको उतना कपड़ा देती रहेंगी, जितने की हमें हाथ के कते-बुने कपड़े के अतिरिक्त आवश्यकता होगी। परन्तु यदि वे खद्दर के साथ प्रतिद्वन्दिता करेंगी, यदि उनका माल खद्दर के विरुद्ध अनुचित उपायों से बेचा जायगा, तो वे भी मार्ग-कण्टक ही सिद्ध होंगी। सौभाग्य से बहुत सी मिलें कॉङ्ग्रेस के साथ मिल कर काम कर रही हैं और उनकी वृत्ति देश-भक्तिपूर्ण है। उनके व्यापारी खद्दर के गुणों को समझ रहे हैं। वे समझ रहे हैं, कि उससे लक्ष-लक्ष ग्रामीण जनता को क्या लाभ हो रहा है। परन्तु मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ, कि यदि खद्दर के व्यापारी देश-भक्ति का लिहाज़ न रखते हुए खद्दर को सहायता पहुँचाने के बदले, उसे हानि पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे, तो उनको वैसे ही विरोधभाव का सामना करना पड़ेगा, जैसा विदेशी वस्त्र के व्यापारियों को करना पड़ता है। विदेशी वस्त्र के व्यापारियों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि विदेशी वस्त्र-बहिष्कार राजनैतिक-शस्त्र रूप से नहीं है, वरन् एक सामाजिक और आर्थिक उपाय के रूप में सर्वदा व्याप्त रहने के उद्देश्य से इस आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ है। यदि ये व्यापारी भविष्य का ध्यान रक्खें तो इन्हें जनता के हित की दृष्टि से विदेशी वस्त्र का व्यापार छोड़ देना चाहिए। उनको सहायता पहुँचाने के लिए सब कुछ किया जा रहा है, परन्तु उनके द्वारा बहुत अधिक त्याग किया जाना आवश्यक है।

## विदेशी व्यापारियों का कर्तव्य

हम आशा करते हैं कि अङ्गरेज़, जापानी और अन्य देशीय विदेशी वस्त्र के व्यापारी कॉङ्ग्रेस की इस नीति का कोई बुरा अर्थ न लगावेंगे। यदि वे भारतवर्ष में अपने वस्त्रों का व्यापार न करके, भारतवर्ष की सहायता करेंगे तो उनको भारतवर्ष में अन्य वस्तुएँ विक्रय करने को मिलेंगी और इसके उद्योग भी करने को मिलेंगे।

## पिकेटिङ्ग

इस बात से मेरा ध्यान पिकेटिङ्ग की ओर जाता है। यह न त्यागी गई है और न त्यागी जा सकती है। मैं यहाँ समझौते का वाक्य उद्धृत कता हूँ "पिकेटिङ्ग शान्तिपूर्ण होगी। अशान्त विरोध, उत्तेजनापूर्ण नीति, बलपूर्वक रोका आदि बातें न होंगी और साधारण क़ानून को भङ्ग करने वाली कोई बात न होगी और यदि किसी स्थान पर इनमें से कोई बात की जायगी, तो वहाँ पिकेटिङ्ग बन्द कर दी जायगी" पिकेटिङ्ग एक साधारण क़ानूनी अधिकार है और निर्धारित सीमा के भीतर वह केवल क़ानूनन ही जायज़ नहीं है, वरन् बहुत अधिक शिक्षात्मक भी है।

## स्त्रियों का कर्तव्य

उसका काम नम्र प्रार्थना द्वारा समझाना है, न कि विरोध तथा स्वतन्त्रता का हिंसात्मक अवरोध। मैं हिंसात्मक शब्द का प्रयोग समझ-सोच कर कर रहा हूँ। सार्वजनिक मत की अवरोधात्म शक्ति सदैव रहेगी। वह सार्वजनिक उन्नति करने वाली और स्वतन्त्र भाव की वृद्धि करने वाली है। अहिंसात्मक पिकेटिङ्ग सार्वजनिक मत पैदा करने वाली वस्तु है। वह ऐसा वायु-मण्डल ला देती है जो निर्बाध होता है। यह स्त्रियों के द्वारा बड़ी उत्तमतापूर्वक व्यवहार में लाई जा सकती है। इसलिए मैं आशा करता हूँ, कि भारतीय स्त्रियों ने जिस महान कार्य का आरम्भ किया है, उसे वे करती जायँगी। इसके लिए उनके प्रति राष्ट्र अत्यन्त कृतज्ञ होगा और लाखों भूखों मरने वाले उन्हें आशीर्वाद देंगे।

## ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार

इसके बाद मैं ब्रिटिश माल के बहिष्कार के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। यह विचार उतने ही दिनों से चला आ रहा है, जितने दिनों से कॉङ्ग्रेस चली आ रही है। यह हमें भली-भाँति ज्ञात है कि गाँधी जी के राजनैतिक क्षेत्र में आने के पश्चात ब्रिटिश माल के बहिष्कार के बदले विदेशी वस्त्र का बहिष्कार आरम्भ हुआ, (केवल ब्रिटिश वस्त्र का नहीं) उन्होंने उसे आर्थिक और सामाजिक उन्नति के भाव से किया। परन्तु ब्रिटिश माल का बहिष्कार एक अतिरिक्त-राजनैतिक शस्त्र है। गत युद्ध की आँधी में इसका महत्त्वपूर्ण व्यवहार हुआ। अब कम से कम कुछ दिन के लिए समझौता हो गया है और हम विचार-विनिमय और सभाओं द्वारा अपने उद्देश्य की प्राप्ति करना चाहते हैं। अतएव हमको अब राजनैतिक शस्त्र का उपयोग न करना चाहिए। जब तक हम अङ्गरेज़ों को इस प्रकार हानि पहुँचाते जावेंगे, तब तक उनसे मित्रतापूर्वक बात और विचार नहीं कर सकेंगे। अतएव हमको कम से कम इस समय तो ब्रिटिश माल के बहिष्कार-शस्त्र का प्रयोग न करना चाहिए। हमको स्वदेशी पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, क्योंकि वह सब राष्ट्रों का जन्म-सिद्ध अधिकार है। जो कुछ हम अपने देश में पैदा कर सकते हैं, उसको अवश्य उत्साहित करना चाहिए। उसको छोड़ कर हमें विदेशी नहीं ग्रहण करना चाहिए, चाहे वह ब्रिटिश हो चाहे

## कॉङ्ग्रेस का शोक-प्रदर्शन

कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने २७वीं मार्च को सर्दार भगतसिंह और उनके साथियों की फाँसी के सम्बन्ध में निम्न-लिखित प्रस्ताव पास किया है। प्रस्तावक स्वयं राष्ट्रपति थे।

कॉङ्ग्रेस, यद्यपि किसी भी रूप में राजनैतिक हिंसा के पक्ष में नहीं है, परन्तु वह सर्दार भगतसिंह, श्री० राजगुरु और श्री० सुखदेव की वीरता और उनके आत्म-बलिदान की प्रशंसा करती है और उनके सन्तप्त कुटुम्बियों के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट करती है। उसकी राय में ये तीनों फाँसियाँ प्रतिहिंसा के भावों से प्रेरित होकर लगाई गई हैं और उनकी फाँसी को रद्द करने की राष्ट्रीय माँग की अवहेलना की गई है। कॉङ्ग्रेस की यह भी राय है कि गवर्नमेण्ट ने दो राष्ट्रों में मैत्री-भाव उत्पन्न करने और विप्लववादियों की सहानुभूति प्राप्त करने का स्वर्ण-अवसर खो दिया है।

अन्य देश का। यह जातीय उन्नति के लिए आवश्यक है। अतएव हमें देशी बीमा कम्पनियों, बैङ्कों, जहाज़ी कम्पनियों और इसी प्रकार की अन्य कम्पनियों के पक्ष में भारी आन्दोलन करके उन्हें उत्साहित करना चाहिए। यह कह कर, कि वे निम्न कोटि की हैं या महँगी हैं, हमें उनका तिरस्कार नहीं करना चाहिए। केवल सहायतापूर्ण समालोचना और व्यावहारिक सहायता से हम उन्हें सस्ते और उच्चकोटि के बना सकते हैं।

### समानाधिकार का प्रश्न

समान स्वत्व के बारे में बहुत सी अनर्गल बातें कही जाती हैं, परन्तु बली और कमज़ोर, राक्षस और बौने, हाथी और चींटी में समान स्वत्व की बात ही क्या?

यदि अपनी अपार सम्पत्ति और सामान लेकर लॉर्ड इञ्चकेप स्वर्गीय सेठ नरोत्तम मुरारजी के साथ समान स्वत्व चाहें, तो वह समान स्वत्व का परिहास मात्र होगा। लॉर्ड इञ्चकेप और सेठ नरोत्तम के उत्तराधिकारियों में समान स्वत्व की बात तो तभी हो सकती है, जब सेठ नरोत्तम के उत्तराधिकारी धन-सम्पत्ति और सामान में उनके बराबरी पर पहुँच जायँ। अत्यन्त असमानों के बीच में समान स्वत्व की बात करना तो बहुत ग़रीब से बड़े अमीर की बराबरी करना है। इसी प्रकार उनके साथ, जिन्हें कुछ लोग उच्च 'जातियाँ' कहते हैं उनसे 'नीच जातियों' के समान स्वत्व की बात करना दोनों की बराबरी करना है और नीच जातियों का अपना बड़प्पन छोड़ कर, अपने को नीचे झुकना है। अङ्गरेज़ों की तुलना में हम लोगों की नीच जातियों से भी गई-बीती अवस्था है। अतएव भारतीय उद्योग-धन्धों की रक्षा करना और अङ्गरेज़ी या विदेशी का त्याग करना हम लोगों के राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए आवश्यक है। यह रक्षा संयुक्त शासन की अवस्था में भी रहनी चाहिए। ब्रिटिश संयुक्त राज्य के भीतर भी रक्षा की बात कोई बुरी नहीं है। उपनिवेशों में उनकी उन्नति के लिहाज़ से उसका व्यवहार है।

### नशीली वस्तुओं का त्याग

जैसे विदेशी वस्त्र का बहिष्कार लाखों भूखों मरने वालों के लिए आर्थिक आवश्यकता है उसी प्रकार राष्ट्र की नैतिक उन्नति के लिए नशीली वस्तुओं का बहिष्कार भी आवश्यक है। नशीली वस्तुओं के बिलकुल त्याग करने के विचार का आविर्भाव उसके राजनैतिक प्रभाव के दमन के बहुत पहले हुआ था। कॉङ्ग्रेस ने उसको आत्म-शुद्धि के उपाय के रूप में बहुत पहले सोचा था नशीली वस्तुओं पर जो कर उपार्जित होता है, उसको सरकार यद्यपि निषेधात्मक कार्यों के उपयोग में लाती है, तिस पर भी उनकी दूकानों पर हमारा धरना जारी रहेगा, परन्तु उसका व्यवहार निर्धारित सीमा में ही रहेगा।

मैं सरकार से अनुरोध करता हूँ, कि इस परिवर्तन काल में वह केवल दो वस्तुओं की पिकेटिङ्ग को ही अधिक उत्तम न समझे, बल्कि यह पहले ही से समझ ले कि राष्ट्र अपने क़ानून बनावेगा और उसके साथ एकमत होकर उसे काम करना चाहिए, चाहे वह ऐसा करे चाहे न करे। हम लोग तब तक शान्ति से न बैठेंगे, जब तक एक भी गज़ कपड़ा विदेश से आवेगा या यहाँ हमारे भूले हुए भाइयों को बिगाड़ने के लिए एक भी शराब की दूकान रहेगी!

### नमक की समस्या

मैं थोड़ा सा नमक के बारे में भी कहना चाहता हूँ। नमक पर आक्रमण बन्द हो जाना चाहिए। नमक-क़ानून-भङ्ग भी बन्द हो जाना चाहिए। परन्तु वे ग़रीब जो नमक के पड़ोस में बसते हैं, अपने पड़ोस में नमक बनाने और बेचने के लिए स्वतन्त्र हैं। यह सत्य है कि नमक-कर अभी रद्द नहीं हुआ है।

कदाचित कॉङ्ग्रेस कॉन्फ्रेन्स में भाग ले, चाहे इस समय हम नमक-कर बन्द करने के लिए ज़ोर न दें, पर वह आगे चल कर बन्द होगा ही। इस समय तो वे ग़रीब लोग, जिनके लिए यह युद्ध जारी किया गया था, इस कर से बच गए हैं। मैं आशा करता हूँ कि कोई भी नमक का व्यापारी सरकार की इस ढिलाई का अनुचित लाभ न उठावेगा।

## एक आवश्यक निवेदन

पूर्व सूचना के अनुसार 'भविष्य' का यह विशेषाङ्क शुक्रवार को न निकल कर आज सोमवार को केवल इस लिए निकल रहा है, क्योंकि राष्ट्रपति का भाषण तभी छापा जा सकता है जब उनकी आज्ञा प्राप्त हो ले। आज उनकी आज्ञानुसार हीं इस अङ्क को प्रकाशित करना सम्भव था। प्रेस की ओर से ज़रा भी देरी नहीं होने पाई थी—हमें केवल राष्ट्रपति के इस ऐतिहासिक भाषण की प्रतीक्षा थी। पाठकगण देरी के लिए हमें दोष न दें!

### ग्यारह शर्तें

उपरोक्त भाषण से मालूम होता है कि जिन बातों में शिक्षित जनता दिलचस्पी लेती है उन बातों में मैं दिलचस्पी नहीं लेता। मुझे रोटी, मक्खन और क़ानूनी सम्मान से कोई दिलचस्पी नहीं है। किसान उन्हें नहीं समझते और न उनका उनके ऊपर कुछ असर पड़ता है। मैं यही विश्वास करता हूँ कि गाँधी जी की ग्यारह शर्तें ही स्वराज्य का सार हैं। जो उन शर्तों के अनुसार नहीं है वह स्वराज्य नहीं है। यद्यपि मैं ज़मींदार, राजा-महाराजा आदि के अधिकारों को वहाँ तक मानता हूँ, जहाँ तक वे पसीना बहाने वाले करोड़ों किसानों को हानि नहीं पहुँचाते, तथापि मैं पददलित जनों को अपनी दुर्दशा से ऊपर उठने में सहायता देने में दिलचस्पी लेता हूँ और उनको इस देश के किसी बड़े से बड़े के बराबर बनाना चाहता हूँ। ईश्वर को धन्यवाद है, सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों ने उन्हें अपनी इज़्ज़त और शक्ति का परिचय दिया है। तब भी अभी बहुत काम करने की आवश्यकता है। हमें यह सोच लेना चाहिए कि हम इसी के लिए बने हैं न कि वे हमारे लिए। अपने क्षुद्र ईर्षा द्वेष को हमें दूर कर देना चाहिए। धार्मिक लड़ाईयों को बन्द कर देना चाहिए। सबको यह समझ लेना चाहिए कि कॉङ्ग्रेस का अस्तित्व पसीना बहाने वाले करोड़ों किसानों के लिए है और वह निर्भय मनुष्य मात्र के लिए काम करने वाली एक दुर्दमनीय शक्ति हो जावेगी।

### अस्पृश्यता का कोढ़

व्यावहारिक कार्यक्रम का एक और अङ्ग है जिसके बारे में अभी मैंने कुछ नहीं कहा है। वह अस्पृश्यता को नष्ट करने का महत्वपूर्ण कार्य है। इस समस्या में मरहम-पट्टी से काम न चलेगा। यदि हिन्दुओं ने अपने में से यह बुराई निकाल दी होती, तो राष्ट्र का विगत शान्त-युद्ध और भी गौरवपूर्ण होता। परन्तु गौरव और बहादुरी को एक ओर रखिए, इस आत्म-शुद्धि के प्रधान कार्य के बिना स्वराज्य भी प्राप्त करने योग्य वस्तु नहीं रह जायगी। हिन्दू-धर्म पर यह धब्बा रहते हुए, यदि स्वराज्य मिल भी जाय, तो ऐसा ही अस्थायी होगा, जैसा विदेशी वस्त्र के पूर्ण बहिष्कार के बिना स्वराज्य हो सकता है।

### प्रवासी भाइयों का प्रश्न

अन्त में हमें अपने प्रवासी भाइयों को नहीं भूलना चाहिए। दक्षिण अफ़्रिका, पूर्वीय अमेरिका और संसार के अन्य भागों में उनका भाग्य अब भी अधर में टँगा हुआ है। सौभाग्य है कि दीनबन्धु एण्ड्रयूज़ दक्षिण अफ़्रिका में हमारे देशवासियों की सेवा कर रहे हैं। पण्डित हृदयनाथ कुञ्ज़रू ने पूर्व अफ़्रिका के हिन्दुस्तानी मामलों में विशेष भाग लिया है। उन्हें आश्वासन देने के लिए कॉङ्ग्रेस उन्हें इनसे अपनी सहानुभूति का विश्वास दिला सकती है। वे जानते हैं, कि उनकी दशा उतनी ही सुधरेगी जितना हम अपने उद्देश्य की ओर बढ़ेंगे। आपकी ओर से मैं उन सरकारों से, जिनमें अधिकारों में हमारे भाई हैं, प्रार्थना करता हूँ, कि वे हमारे भाइयों से उचित बर्ताव करें, क्योंकि वे इस राष्ट्र के व्यक्ति हैं, जो अपना पूर्व गौरव शीघ्र ही प्राप्त करने वाला है और जो किसी की हानि पहुँचाना नहीं चाहता। हम उनसे प्रार्थना करते हैं, कि वे हमारे भाइयों के साथ वही बर्ताव करें, जो वे हमसे उस समय चाहेंगे, जब उनके साथ व्यवहार करने के लिए स्वतन्त्र होंगे। यह माँग बहुत बड़ी माँग नहीं है।

### राष्ट्रपति का निमन्त्रण

अब मैं आपको वह कार्यवाही करने के लिए आमन्त्रित करता हूँ, जिसका समयानुसार निमन्त्रण करने के लिए आपने मुझे आमन्त्रित किया है। मतभेद अवश्य होगा, परन्तु मैं विश्वास करता हूँ कि उपस्थित महाशयों में से हर एक हमें इस कार्य को गौरवपूर्ण और उद्योग को और प्रगतिशील बनाने में सहायता देंगे।

* * *

# कानपुर में भयङ्कर उपद्रव

## क़रीब २५० मरे :: ५०० घायल हुए :: ३०० मकान फूँक डाले गए

### मन्दिरों और मस्जिदों पर धावे :: घरों और दुकानों में आग :: बच्चों की निर्मम हत्या :: शहर भर में फ़ौज और पुलिस की शिकायत

## क्या विद्यार्थी जी का शव जलते हुए मकान में डाल दिया गया !

कानपुर का २४वीं मार्च का समाचार है कि वहाँ सरदार भगतसिंह और उनके साथियों की फाँसी की सज़ा के समाचार प्राप्त होते ही शहर भर में हड़ताल हो गई। सरकारी विज्ञप्ति का कहना है, कि कुछ मुसलमानो की दुकानें हड़ताल होने पर भी खुली थीं और उन्हीं को बन्द करवाने के प्रयत्न में काँङ्ग्रेस दल वालों से उनका झगड़ा हो गया और उसने भयङ्कर रूप धारण कर लिया। उपद्रव यहाँ तक बढ़ गया कि लोगों ने करेन्सी दफ़्तर, तार-घर और कचहरी पर भी धावा बोल दिया और उन पर पत्थरों की वर्षा की। इस उपद्रव से शहर भर में सनसनी फैल गई। मस्जिदों और मन्दिरों पर धावे किए गए, और दुकानें लूटी गईं तथा उनमें आग लगा दी गई है। इसके फलस्वरूप रास्तों पर आहतों और मृतकों का ढेर लगते जाने के बड़े रोमाञ्चकारी समाचार आए हैं। उपद्रव शान्त करने के लिए इलाहाबाद, गया, लखनऊ तथा जौनपूर से सशस्त्र पुलिस और फ़ौज भेजी गई है। उपद्रव में महिलाओं पर हर प्रकार के अत्याचार किए गए हैं और मासूम बच्चों की हत्याएँ की गई हैं। लाला कल्लूमल्ल के कई लाख के भवन में आग लगा देने का भी समाचार आया है।

कानपुर से २७वीं और २८वीं मार्च को जो समाचार आए हैं, उनसे स्पष्ट मालूम होता है कि वहाँ की परिस्थिति में उस दिन तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वहाँ अभी भी दङ्गे का आतङ्क फैला हुआ है। शहर भर के बाज़ार, बैङ्क, शिक्षा-संस्थाएँ, व्यापारिक केन्द्र और मिलें इत्यादि बन्द हैं। शहर में १४४वीं दफ़ा लगा दी गई है, परन्तु उससे भी परिस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। महिलाओं और बच्चों पर होने वाले अत्याचार अत्यन्त भयावह हैं। ऐसे बहुत से मृतक और घायल बच्चे और स्त्रियाँ मिली हैं, जिनके अङ्ग भङ्ग कर दिए गए हैं और बच्चों को दोनों टाँगों के बीच में से चीर डाला गया है और दोनों की निर्मम हत्याएँ की गई हैं।

### क्या श्री० गणेशशङ्कर विद्यार्थी मारे गए !

कानपुर के समाचारों से मालूम हुआ है कि हिन्दी के प्रतिभाशाली लेखक, और 'प्रताप' के यशस्वी सम्पादक श्री० गणेशशङ्कर जी विद्यार्थी गत मङ्गलवार से लापता हैं। वे इस भयानक काण्ड के समय अपनी जान हथेली पर रख कर उपद्रव शान्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। उनके एक आहत साथी का कहना है कि हम दोनों पर मुसलमानों ने धावा किया था और मैंने उन्हें एक लाश घसीटते हुए देखा था। इसके बाद का समाचार है कि वे मार कर एक जलते हुए मकान में झोंक दिए गए ! बाद के समाचारों से यह भी पता चलता है कि अभी परिस्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है।

प्रयाग के कमिश्नर श्री० कुँवर महाराजसिंह जो कानपुर गए हैं। कहा जाता है, वहाँ के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के बङ्गले पर हिन्दू और मुसलमान नेताओं की एक सभा की गई थी, पर अभी तक कुछ विशेष परिवर्तन देखने में नहीं आया। जनता को इस बात की शिकायत है कि जब से दङ्गा शुरू हुआ, शहर में एक भी पुलिस और फ़ौज का पता नहीं चलता, न उन लोगों ने जनता की किसी प्रकार की सहायता ही की है। सहयोगी 'लीडर' के विशेष प्रतिनिधि का कहना है कि कानपुर के नेताओं के साथ वे स्वयं मोटर पर प्रायः उन सभी मोहल्लों में गए, जहाँ उपद्रव विशेष भयङ्कर रूप धारण किए हुए है, पर उन्हें कहीं भी पुलिस के दर्शन नहीं हुए। पत्र छपते-छपते हमारे सम्बाददाता का कहना है, कि अब तक लगभग

एकता के प्रयत्न में शहीद होने वाले स्वर्गीय श्री० गणेशशङ्कर जी विद्यार्थी।

२५० व्यक्ति जान से मारे जा चुके हैं। ५०० से अधिक घायलों की संख्या बतलाई जाती है और कहा जाता है, क़रीब ३०० मकान और दूकानें बिल्कुल जला कर ख़ाक कर दी गई हैं।

यद्यपि यह उपद्रव हिन्दू-मुसलमानों के वैमनस्य का फल बतलाया जाता है, किन्तु फिर टकसाल, तार-घर तथा कचहरियों पर धावे क्यों किए गए—यह पहेली किसी के समझ में नहीं आ रही है—घर-घर इसी बात की चर्चा है। इन समाचारों से फ़तहपुर तथा इलाहाबाद में भी बड़ी सनसनी फैल रही है।

---

## विदेशी कपड़े के व्यापारियों के नाम "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन" की 'लाल चिट्ठी'

मुज़फ़्फ़रपुर के एक सम्बाददाता ने आज ही हमारे पास एक 'लाल चिट्ठी' प्रकाशनार्थ भेजी है, सम्बाददाता का कहना है, ऐसी 'लाल चिट्ठियाँ' प्रत्येक कपड़े तथा परचून के व्यापारियों के पास आई हैं और इसके कारण विशेषकर वहाँ के मारवाड़ियों में बड़ी सनसनी फैली हुई है। पत्र का अविकल रूप यह है:—

### सावधान ! सावधान ! सावधान !!

अख़बारों में यह ख़बर पढ़ कर हम लोगों को बड़ा ताज्जुब होता है कि मुज़फ़्फ़रपुर [ शहर का नाम हाथ से लिखा गया है, शेष छपा है।—स० 'भविष्य' ] के तुम कपड़े के व्यापारियों ने अभी तक विलायती कपड़ा मँगाना और बेचना बन्द नहीं किया है। ऐसे नाज़ुक वक़्त में, जब कि मातृ-भूमि के उद्धार के लिए देशभक्त जेलों में ठूँसे जा रहे हैं और फाँसी के तख़्तों पर लटकाए जाते हैं—तुम व्यापारियों का यह नीच काम देशद्रोहिता का नमूना है। इसलिए हमारी कमिटी ने यह फ़ैसला किया है, कि अगर तुम लोग नोटिस पाने पर विलायती कपड़ा या और किसी तरह का विलायती माल ख़रीदना और बेचना बन्द नहीं करते हो तो तुम्हारे जान व माल की ख़ैरियत नहीं है। याद रक्खो, तुम्हारी भी वही हालत होगी, जो बनारस और पेशावर के व्यापारियों की हुई है। इसलिए हम तुमको इस नोटिस के ज़रिए आगाह किए देते हैं, कि अगर तुम लोगों ने १ ली मार्च से विलायती माल बेचना बन्द नहीं किया तो हमारे दल के आदमी तुम्हारी इस करतूत का बदला अवश्य लेंगे।

सेक्रेटरी,
हिदुस्तान रिपब्लिकन
एसोसियेशन।

का० प्रे० मास्को......४,०००

## गाँधी-इर्विन-सन्धि असन्तोषपूर्ण है

### श्री० विट्ठलभाई पटेल का वक्तव्य

वियना ( ऑस्ट्रिया ) से २५वीं मार्च को भारतीय असेम्बली के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट श्री० विट्ठलभाई पटेल ने काँङ्ग्रेस के प्रेज़िडेण्ट के पास एक तार भेजा है, जिसमें उन्होंने गाँधी-इर्विन समझौते से असन्तोष प्रकट किया है। परन्तु उन्होंने यह भी लिखा है कि उसे भङ्ग करने से बड़ी भारी राष्ट्रीय क्षति होने की सम्भावना है। उन्होंने कॉङ्ग्रेस से प्रार्थना की है कि वह महात्मा गाँधी को इस बात का आदेश दे दे कि वे पूर्ण औपनिवेशिक स्वराज्य से रत्ती भर भी कम अधिकार स्वीकार न करें।

* * *

# “मैं स्वतन्त्रता का सत्व चाहता हूँ; ब्रिटेन उसकी छाया रख सकता है”

## “मैं ब्रिटिश सेना को एक दिन के लिए भी भारत में नहीं देख सकता”

**“मैं, ब्रिटिश फ़ौज को भारत में एक दिन के लिए भी नहीं देख सकता । भारत को सीमा प्रान्त के हमले का कोई भय नहीं है और न कोई विदेशी शक्ति भारत को हड़प करने के लिए लालायित ही है । मेरा अफ़रीदियों पर काफ़ी प्रभाव है और यदि अफ़रीदी हमारे ऊपर हमला करेंगे तो मैं उनका अपने सत्याग्रह से उसी प्रकार विरोध करूँगा, जिस प्रकार ब्रिटिश गवर्नमेंट का कर रहा हूँ । भारत संसार का सब से निर्धन देश है । वह वायसराय के तीन शाही महलों का बोझ सहन नहीं कर सकता । नई दिल्ली में चकाचौंध भले ही हो, परन्तु भारत के असंख्य जर्जरित गाँवों से उसकी कोई समता नहीं की जा सकती ।......सत्याग्रह-आन्दोलन में पुलिस ने जिस बर्बरता और नृशंसता से काम लिया है, उसके मेरे पास अकाट्य सबूत मौजूद हैं । मैंने वायसराय से पुलिस की उन नृशंसताओं की स्वतन्त्र जाँच करने के लिए कहा था, परन्तु उन्होंने जाँच करने से साफ़ इन्कार कर दिया ।”**

कुछ दिन पहले ‘न्यूज़ क्रॉनिकल’ के विशेष सम्वाददाता मि० रॉबर्ट बार्नेज़ ने इलाहाबाद में महात्मा गाँधी से मुलाक़ात की थी । उन्होंने उसका सार पत्रों में प्रकाशित कराया है । यहाँ पाठकों की जानकारी के लिए उसी का अनुवाद दिया जाता है :—

महात्मा गाँधी से मेरी केवल आध घण्टे मुलाक़ात हुई और उसमें निम्न बातचीत हुई :—

महात्मा गाँधी ने स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल जी नेहरू के भव्य आनन्द-भवन में, जहाँ मेरी मुलाक़ात के दूसरे ही दिन वर्किङ्ग कमिटी ने गोलमेज़ परिषद पर अपनी सम्मति दी थी, मेरा स्वागत किया । जब मैं पहुँचा तब महात्मा गाँधी धूप में ज़मीन पर बैठे हुए थे । मेरे पहुँचते ही उन्होंने मेरे लिए कुर्सी मँगाई, परन्तु मैंने कुर्सी पर बैठने से इन्कार कर दिया और उन्हीं के सामने ज़मीन पर बैठ गया ।

महात्मा गाँधी ने कहा—“मैं स्वतन्त्रता का सत्व चाहता हूँ ; ब्रिटेन उसकी छाया रख सकता है । गोलमेज़ परिषद से हमें वह सत्व प्राप्त नहीं हुआ ।”

मुझसे बातचीत करते समय वे अपना भोजन करते जाते थे । महात्मा गाँधी दिन भर में केवल एक बार भोजन करते हैं; भोजन बिल्कुल सादा—केवल गोभी की तरकारी और रोटी का—था । उनके आसपास शुद्ध खद्दर पहिने उनके कुछ शिष्य हम दोनों की बातचीत सुनने के लिए बैठे थे ।

मैंने प्रारम्भ में प्रश्न किया—“गोलमेज़ परिषद में आप किस बात के निर्णय की आशा करते थे ?”

महात्मा गाँधी ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया—“यह आपने बड़ा अच्छा प्रश्न किया ; मेरी यह आकांक्षा थी, कि गोलमेज़ में भारत को प्रतिबन्ध-रहित उत्तरदायी शासन सौंपा जाता । प्रतिबन्धों का अर्थ यह है, कि हममें अभी भी अपने देश का शासन करने की योग्यता नहीं है ।

“भारत में ब्रिटिश फ़ौज की कोई आवश्यकता नहीं है । उसके भारत में रहने का अर्थ केवल यही है कि भारत अभी भी ब्रिटेन के चङ्गुल में है । मैं तो यह चाहता हूँ, कि ब्रिटिश फ़ौज यहाँ से कल हटा ली जाय । सीमा प्रान्त के हमले का भारत को कोई डर नहीं है । किसी दूसरी विदेशी शक्ति की इच्छा भारत को हड़प करने की नहीं है । अफ़रीदी सीमा प्रान्त के गाँवों को लूटने के सिवा और कुछ न करेंगे । परन्तु यदि वास्तव में कहा जाय, तो मेरा अफ़रीदियों पर भी बहुत प्रभाव है । मैं उनका मुक़ाबला भी अपने सत्याग्रह-आन्दोलन से उसी प्रकार करूँगा, जिस प्रकार ब्रिटिश गवर्नमेण्ट का कर रहा हूँ । यद्यपि मैं व्यक्तिगत रूप से फ़ौज का विरोधी हूँ, परन्तु भारत को क भारतीय फ़ौज की आवश्यकता अवश्य पड़ेगी ।

“भारतीय फ़ौज को वर्तमान फ़ौजी शिक्षा देने के लिए हमें युद्ध-विशारदों को दूसरे देशों से बुलाने की आवश्यकता पड़ेगी । हम शायद अङ्गरेज़ ऑफ़िसरों की सहायता स्वीकार कर लें, परन्तु यदि उन्होंने इन्कार किया तो हम जर्मनी, फ़्रान्स जापान या अन्य किसी विदेशी शक्ति के सहयोग का प्रयत्न करेंगे ।

“भारत की अर्थ-व्यवस्था में भी हम कोई प्रतिकार स्वीकार नहीं कर सकते । भारतीयों को अर्थ-व्यवस्था में तो ईश्वर ने ही निपुण बना कर भेजा है । भारत संसार का सब से अधिक निर्धन देश है । वह वायसराय के लिए तीन शाही-महलों का बोझ सहन नहीं कर सकता । विशाल और आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करने वाली नई दिल्ली निराली है ; उसका भारत के असंख्य जर्जरित गाँवों से क्या सम्बन्ध है ! अभागे भारत के ऊपर यह भार नहीं तो क्या है ? राष्ट्रीय आय में से प्रायः आधा धन फ़ौज में ख़र्च किया जाता है ।

“गोलमेज़ परिषद के आर्थिक प्रतिबन्धों के अनुसार यदि हिसाब लगाया जाय, तो राष्ट्रीय आय में से केवल २० प्रतिशत हमारी व्यवस्था के लिए बच जाता है । हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते । देश की जो आमदनी होगी, उसे केवल देश की उन्नति में ही व्यय करना होगा ।”

### जाँच करने से इन्कार

इसके बाद मेरी बातचीत पुलिस के अत्याचारों के सम्बन्ध में प्रारम्भ हो गई ।

महात्मा गाँधी ने कहा—“सत्याग्रह-आन्दोलन में पुलिस ने जिस बर्बरता और नृशंसता से काम लिया है, उसके मेरे पास अकाट्य सबूत मौजूद हैं । मैंने वायसराय से पुलिस की इन करतूतों की स्वतन्त्र जाँच करने के लिए कहा था, परन्तु उन्होंने जाँच करने से साफ़ इन्कार कर दिया । यदि मैं आपसे यह कहूँ कि आपके नौकर ने मुझे लूट लिया है, तो क्या आप उसके इन्कार करने पर चुप हो जायँगे ? कोई सभ्य व्यक्ति ऐसा व्यवहार न करेगा । यदि पुलिस की करतूतों की जाँच के लिए एक जाँच-कमिटी नियुक्त होती तो यह आवश्यक नहीं था, कि मैं उसमें सम्मिलित होता ; परन्तु जाँच अतीव आवश्यक थी ।

“आप मुझसे कहते हैं, कि जब से मॉडरेट लोग गोलमेज़ के लिए इङ्गलैण्ड गए हैं, तब से वहाँ के वायु-मण्डल में बहुत परिवर्तन हो गया है । परन्तु उसका प्रभाव भारत में क्यों नहीं मालूम पड़ता ? यहाँ तो पुलिस के अत्याचार कुछ भी न्यून नहीं हुए ।”

इसके बाद मैंने महात्मा जी से यह प्रश्न किया कि क्या हिन्दू-मुसलमानों के आपसी झगड़े उत्तरदायी शासन के मार्ग में रोड़े नहीं हैं ?

महात्मा गाँधी ने उत्तर दिया—“आपसी झगड़े स्वतन्त्रता के मार्ग में कोई रोड़े नहीं हैं । उन्हें उत्पन्न करने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व ब्रिटिश लोगों पर है । गाँवों में जातीय भेद-भाव बिल्कुल नहीं है । यह आपसी भेद-भाव और जातीय लड़ाई-झगड़े केवल शहरी हैं और वहाँ अङ्गरेज़ों का प्रभाव है और वे दोनों जातियों में झगड़े उत्पन्न करने के उपाय सदैव सोचा करते हैं । ये झगड़े उस समय तक के लिए हैं, जब हमें शासन का उत्तरदायित्व प्राप्त नहीं हुआ । देश पर हिन्दू-मुसलमानों का सम्मिलित शासन होते ही ये झगड़े और भेद-भाव विलीन हो जायँगे ।

“मेरे सम्बन्ध में दूसरे दल के लोग कहा करते हैं, कि क़ानून भङ्ग कर मैं अच्छा नहीं कर रहा हूँ । इस प्रश्न पर मेरा उत्तर यही है, कि सिर तोड़ने से क़ानून तोड़ना कहीं अच्छा है । यदि देश की स्वतन्त्रता के लिए सत्याग्रह का अवलम्ब छोड़ दिया जाय, तो उसे प्राप्त करने का दूसरा मार्ग केवल खुला विद्रोह और युद्ध है । मैं पाशविक शक्ति का विरोध आत्म-दमन से करना अधिक पसन्द करता हूँ । और उसे ग़ैर-क़ानूनी नहीं कहा जा सकता । हम क़ानून भङ्ग करने के परिणामों को जानते-बूझते उन्हें भङ्ग करते हैं । कहीं-कहीं कॉङ्ग्रेस मतावलम्बियों ने भी उत्तेजित होकर वार कर दिए हैं । परन्तु सभी जगह फ़ौज में कुछ बाग़ी सैनिक सम्मिलित रहते हैं ।”

मैंने महात्मा जी से प्रश्न किया—“क्या आप इस विचार से सहमत हैं, कि ब्रिटिश लोगों ने अपने शासन-काल में भारत की कोई भलाई नहीं की ।”

महात्मा गाँधी ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया—“मैं यह नहीं कह सकता, कि ब्रिटिश लोगों ने भारत की कोई भी भलाई नहीं की । उन्होंने हमें सङ्गठन का पाठ पढ़ाया है ; परन्तु वह पाठ तो हम किसी भी हालत में पढ़ जाते । क्लाइव और हेस्टिंग्ज़ की करतूतों का स्मरण करो । भारतीय ऐतिहासज्ञों की बात छोड़ दीजिए ; परन्तु ब्रिटिश ऐतिहासज्ञ तो उनकी प्रशंसा करते कभी नहीं थकते ।

“मैं उत्तरदायी शासन का सत्व चाहता हूँ और उससे कम में कभी सन्तोषित नहीं हो सकता ।

“मैं सन्धि के अवसर की बाट जोह रहा हूँ । यदि मेरा वश होता तो मैं उसे झपट कर छीन लेता ।”

# सर शंकरननायर के स्पष्ट विचार

## "अर्थ–व्यवस्था और फ़ौज भारतीयों के हाथ में रहे बिना स्वराज्य केवल मख़ौल होगा"

## ब्रिटेन पर से भारत का विश्वास क्यों उठा ?

[ ग्रेट-ब्रिटेन के प्रधान-मन्त्री ने गोलमेज़ परिषद के समाप्त होने पर अपनी घोषणा में कहा था, कि यद्यपि शासन-सुधारों में किसी प्रकार का प्रतिबन्ध अच्छा नहीं है, परन्तु भारत की हितकामना ध्यान में रखते हुए ये प्रतिबन्ध अत्यन्तावश्यक हो गए हैं। प्रधान-मन्त्री के इन शब्दों में क्या तथ्य था, यह विचारवान पाठक स्वयं समझ सकते हैं। हमारी समझ में तो यह स्पष्ट है कि शासन-सम्बन्धी प्रतिबन्धों की योजना भारत के हित के लिए नहीं, वरन् ब्रिटेन के हित के लिए की गई है। निम्न लेख में सर शङ्करन नायर ने तर्कपूर्ण दलीलों से यह स्पष्ट कर दिया है, कि इङ्गलैण्ड के हाथों में भारतीय अर्थ-व्यवस्था और फ़ौज का क्षण भर भी रहना भारत के लिए अत्यन्त घातक है। पाठकों को स्मरण होगा कि शासन-सुधारों के सम्बन्ध में जो भारतीय समिति स्थापित की गई थी, सर शङ्करन नायर उसके सभापति थे और उन्होंने इस सम्बन्ध में जो रिपोर्ट पेश की थी, उसी के साथ एक मेमोरेण्डम भी पेश किया गया था। निम्न लेख में पाठकों की जानकारी के लिए उसीके कुछ अंशों का अनुवाद दिया जाता है।

—स० "भविष्य" ]

युद्ध कालीन क़र्ज़ का भार इङ्गलैण्ड को गर्दन ऊँची नहीं करने देता। इस बोझ को हलका करने के लिए उसने अपना भविष्य गिरवी रख दिया है और उससे अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए वह हर एक उपाय काम में लाएगा। ये उपाय चाहे न्यायपूर्ण हों या अन्यायपूर्ण, परन्तु शक्ति के साथ स्वार्थ का सम्मेलन हो जाता है, तब स्वभावतः उनके अवलम्बन में आना-कानी नहीं की जाती, और यदि सम्भव हुआ तो किसी न किसी रूप में यह बोझ भारत पर छोड़ने का प्रयत्न किया जायगा, परन्तु भारतीय जनता उसे कभी स्वीकार न करेगी।

### इङ्गलैण्ड का व्यापारिक पतन

इङ्गलैण्ड का समस्त वैभव उसके निर्यात व्यापार पर निर्भर है; भारत की सूती कपड़े की चुङ्गी लङ्काशायर के लाभ के लिए ही उठाई गई थी। मोटे कपड़े में इङ्गलैण्ड अब हार मान चुका है और महीन तथा फ़ैन्सी कपड़े में जर्मनी और जापान ने उसे चुनौती दे दी है। इस प्रकार संसार के कपड़े के व्यापार से उसके पैर उखड़ चुके हैं। स्वभावतः लङ्काशायर की दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई बेकारी को दूर करने के लिए ब्रिटिश गवर्नमेण्ट इङ्गलैण्ड का माल भारत में ठूँसने का प्रयत्न करेगी। इसी प्रकार इङ्गलैण्ड को केवल कपड़े के व्यापार ही में नहीं, लोहा, फ़ौलाद और जहाज़ी व्यापार में भी मुँह की खानी पड़ी है। जनता और गवर्नमेण्ट के सम्मिलित अथक परिश्रम करने पर भी वह अपने व्यापारिक पुनरुत्थान में असमर्थ हो गया है। उसके इस व्यापारिक पतन के कारण ही बेकारी की समस्या ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया है। ऐसी परिस्थिति में भारत को इङ्गलैण्ड के चङ्गुल से बचाने के लिए दूरदर्शी भारतीय पार्लामेण्ट और एक ऐसे ही दूरदर्शी अर्थ-सचिव की नितान्त आवश्यकता है।

### विदेशी प्रतियोगिता

भारत की आर्थिक परिस्थिति के अनुसार इङ्गलैण्ड की बेकारी की समस्या पर विचार करने की आवश्यकता है। इङ्गलैण्ड अपने व्यापारिक उत्थान के लिए अन्य देशों की तथा स्वयं अपनी आर्थिक परिस्थिति की गम्भीरतापूर्वक जाँच कर रहा है। महायुद्ध के बाद ही से उसके व्यापार पर भयङ्कर आघात हुआ है; और उसी समय से व्यापारिक उत्थान के लिए उसके व्यापार-विशारद और पूँजीपति, बैङ्कों और व्यापारिक संस्थाओं के साथ मिलने लगे हैं। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट उन्हें शक्ति-भर सहायता देती है, उसकी ओर से उसके दूत देश-देश में भ्रमण करते हैं और उसका व्यापारिक सङ्गठन दिन-प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। भारत के सम्बन्ध में उसकी अन्य देशों से प्रतियोगिता होने के कारण ही भारतीय व्यापार चौपट हो रहा है।

भारतीय व्यापारियों की संख्या नगण्य है; इस देश में पूँजीपतियों का अभाव है; हमारे बैङ्कों का अस्तित्व इङ्गलैण्ड के बैङ्कों पर निर्भर है और हमारा व्यापारिक सङ्गठन भी बिलकुल ढीला है। गवर्नमेण्ट व्यापारिक उत्थान के लिए हमें आवश्यक सहायता नहीं देती और बिना गवर्नमेण्ट की सहायता के किसी उद्योग-धन्धे का पनपना प्रायः असम्भव है। रेलों का मुख्योद्देश्य अन्य देशों के माल को देश में फैलाना और यहाँ के कच्चे माल को अन्य देशों में भेजना है। अन्य देशों का माल यहाँ के माल की अपेक्षा सस्ता बेचा जाता है। भारतीय व्यापार को इस विदेशी प्रतियोगिता के भीषण आघात से बचाने के लिए भी एक दूरदर्शी भारतीय पार्लामेण्ट की आवश्यकता है, जिसका अपने ख़ज़ाने और व्यापार पर पूर्ण अधिकार हो।

इङ्गलैण्ड के पास व्यापार के सब साधन मौजूद हैं—उसके पास अतुल पूँजी, शक्ति और ज़बरदस्त सङ्गठन है। तिस पर भी वह अमेरिका—यहाँ तक कि स्वयं अपने उपनिवेशों से ही व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में हार मान गया है। ऐसी परिस्थिति में जब तक अर्थ और व्यापार पर भारतीयों का आधिपत्य न हो जाय, तब तक उससे व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति करने की क्या आशा की जा सकती है। भारत के उद्योग-धन्धों के लिए पूँजी इतनी सस्ती नहीं मिलती, जितनी सस्ती ब्रिटेन की व्यापारिक संस्थाओं को मिल जाती है। इसका प्रधान कारण यह है, कि बैङ्कों का समस्त व्यापार अङ्गरेज़ों के ही हाथ में है। भारत का सोना इङ्गलैण्ड के लाभ के लिए वहीं सञ्चित किया जाता है, जिससे भारत को लाभ के बदले, भयङ्कर हानि हो रही है। यदि भारत का सोना भारत ही में सञ्चित किया जाय, तो इङ्गलैण्ड की व्यापारिक परिस्थिति इतनी डावाँडोल हो जायगी, जितनी इस समय भारत की है। परन्तु इस आर्थिक नीति के परिवर्तन की उस समय तक सम्भावना नहीं है, जब तक भारत की अर्थ-व्यवस्था एक दूरदर्शी भारतीय अर्थ-सचिव के हाथ में न आ जाय।

### स्वतन्त्र व्यापार

इङ्गलैण्ड में एक ऐसा ज़बरदस्त दल तैयार हो रहा है, जो अमेरिका और यूरोप से व्यापारिक प्रतिस्पर्धा करने के लिए समस्त ब्रिटिश साम्राज्य के व्यापारिक सम्मिलन के पक्ष में है। इङ्गलैण्ड की अपेक्षा भारत में श्रमजीवियों की मज़दूरी बहुत न्यून है और उसका यह परिणाम हुआ है, कि इङ्गलैण्ड के श्रमजीवियों की मज़दूरी में भी कमी होती जाती है। कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधि भारतीय मज़दूरों की मज़दूरी बढ़ाने का प्रयत्न इसलिए कर रहे हैं, कि उससे ब्रिटेन की मज़दूरी की समस्या हल हो सके। इङ्गलैण्ड का एक दल साम्राज्य के अन्तर्गत देशों में

स्वतन्त्र व्यापार के पक्ष में है। यदि उपनिवेशों को यह व्यापारिक-स्वतन्त्रता दे दी जाय तो वे स्वार्थों की रक्षा अच्छी तरह कर लेंगे; परन्तु बेचारा भारत इङ्गलिश गवर्नमेण्ट के चङ्गुल में रह कर इस घातक नीति का भी विरोध नहीं कर सकता।

### फ़ौज का भार

भारत के सुचारु शासन के लिए यह अत्यन्तावश्यक है, कि अर्थ-व्यवस्था—जनता पर टैक्स लगाने तथा उस आय को ख़र्च करने का अधिकार भारतीयों के हाथ में दे दी जाय और उसमें सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट का कोई हाथ न रहने पावे। इस अधिकार से यह स्पष्ट हो जाता है, कि भारतीयों को फ़ौज के बजट का निर्णय करने का भी अधिकार होगा। परन्तु इस सम्बन्ध में दो बातें ध्यान में रखने योग्य हैं। एक तो यह, कि जब तक निरस्त्रीकरण की समस्या हल न हो जायगी तब तक ग्रेट-ब्रिटेन की जनता पर से वर्तमान टैक्स का भार कम होने की कोई सम्भावना नहीं है। इसलिए साम्राज्यवादी दल सेना और शस्त्रों की कमी की पूर्ति भारत के ख़ज़ाने से करने का प्रयत्न करेगा। दूसरी बात यह है, कि कुछ विद्वानों का मत है कि आगामी महायुद्ध का घमासान पूर्व और प्रशान्त-महासागर के आसपास होगा और उसका अधिकांश बोझ भारत पर लाद दिया जायगा। इस प्रकार भारत का फ़ौजी ख़र्च असह्य हो जावेगा।

प्रायः यह कहा जाता है, कि 'वार ऑफ़िस' भारत-स्थित ब्रिटिश फ़ौज को केवल रिज़र्व फ़ौज के रूप में मानता है और उसका उपयोग साम्राज्य पर कोई विपत्ति आने पर किया जायगा। कुछ लोगों का तो यहाँ तक कहना है, कि 'वार ऑफ़िस' ने यह ब्रिटिश फ़ौज जान-बूझ कर भारत के ख़र्च पर भारत में रक्खी है। यह कहा जाता है, कि भारत में एक-तिहाई फ़ौज आन्तरिक शान्ति की रक्षा के लिए है और यह दलील पेश की जाती है कि उसके लिए कुछ ब्रिटिश फ़ौजों की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से साठ हज़ार ब्रिटिश सैनिक भारत में रक्खे गए हैं। यह भी कहा जाता है, कि भारतीयों के उपद्रव भारतीय फ़ौज के द्वारा दबाना उचित न होगा और ऐसे अवसरों के लिए ब्रिटिश फ़ौजों की आवश्यकता है। परन्तु गत शताब्दी के अन्त में ब्रिटिश फ़ौजों का उपयोग शान्ति-रक्षा के स्थान में प्लेग को दबाने के सम्बन्ध में किया गया था और उसी घटना के बाद से गवर्नमेंण्ट ने भारतीयों को घटाना प्रारम्भ कर दिया।

इसी प्रकार की एक दूसरी घटना, जिसमें फ़ौज की सहायता की आवश्यकता पड़ी थी, बङ्ग-भङ्ग थी। मुसलमान गवर्नमेंण्ट के पक्ष में होकर बङ्ग-भङ्ग का समर्थन कर रहे थे और हिन्दू, जो शक्ति भर उसका विरोध कर रहे थे, राजविद्रोही क़रार दे दिए गए थे, और उनका दमन करने के लिए ब्रिटिश नहीं, बल्कि गोरखा फ़ौज की सहायता ली गई थी। पञ्जाब में जो झगड़े हुए थे, उनमें भी हिन्दू गोरखों की सहायता ली गई थी। मलाबार में मोपला-विद्रोह के समय भी हिन्दू फ़ौज की ही सहायता ली गई थी। उपर्युक्त घटनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है, कि गवर्नमेंण्ट यह समझ गई है, कि ब्रिटिश फ़ौज के हाथों कोई ज़्यादती हो जाने के कारण जनता भड़क जाती है और हाल ही की घटनाओं से यह और स्पष्ट हो जाता है, कि जहाँ तक हो सकता है, गवर्नमेंण्ट ऐसे अवसरों पर भारतीय फ़ौज की ही सहायता लेती है।

### पुलिस

सन् १८५७ के विद्रोह के पहले तक फ़ौज की आवश्यकता युद्ध तथा आन्तरिक शान्ति दोनों के लिए थी; परन्तु बलवे के पश्चात् शान्ति-रक्षा के लिए पुलिस की आयोजना की गई थी। और यदि पुलिस इस आन्तरिक शान्ति-रक्षा में असफल हुई है, तो उसका सारा दोष उन लोगों पर है, जिन्होंने उसका सङ्गठन किया था। इसमें सन्देह नहीं, कि यदि पुलिस भारतीयों के हाथों में छोड़ दी जाती, तो वह अपने उद्देश्य की पूर्ति में अवश्य सफल होती और फिर पुलिस की सहायता के लिए जो फ़ौज रक्खी जाती है, उसकी आवश्यकता न पड़ती और भारत के सिर से इस प्रकार की अतिरिक्त फ़ौज का एक बड़ा भारी बोझ उतर जाता।

---

**यदि शासन-सम्बन्धी प्रतिबन्धों की सच्ची योजना और उन्हें कार्यरूप में परिणत करने की व्यवस्था की गई है, तो भारत के लिए जिस शासन-विधान की रचना की गई है, वह न तो उत्तरदायी शासन है और न औपनिवेशिक स्वराज्य। ब्रिटेन इस अप्रिय-सत्य को छिपाने का प्रयत्न कर रहा है; उसे साहसपूर्वक भारत के सम्बन्ध में अपनी नीति स्पष्ट कर देना चाहिए।**

—मि० विंस्टन चर्चिल

---

### सीमा-प्रान्त की समस्या

सीमा प्रान्त को बाहरी हमलों से सुरक्षित रखने के लिए पहले १२,००० सैनिकों की 'पञ्जाब फ़्रण्टियर फ़ौज' पञ्जाब-सरकार के अधीन नियुक्त की गई थी और वह वर्तमान ब्रिटिश फ़ौज से अधिक योग्यता से वहाँ की रक्षा करती थी। परन्तु अब उस फ़ौज के स्थान में ब्रिटिश फ़ौज रख दी गई है और जिसके कारण फ़ौज का ख़र्च बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। यदि भारतीय शासन निर्वाचित मेम्बर के हाथों में होता और उसकी अर्थ-व्यवस्था किसी योग्य भारतीय के हाथ में होती, तो वह इस फ़ौजी ख़र्च को कभी न बढ़ने देता।

### महायुद्ध और भारत

यूरोपीय महायुद्ध के समय भारत ने जर्मनी से युद्ध करने के लिए अपनी फ़ौजें भेजी थीं; यद्यपि जर्मनी से उसकी कोई दुश्मनी न थी और स्वयं लॉर्ड कर्ज़न ने इसे स्वीकार किया है। भारतीय वहाँ कुछ अपने देश तथा देशवासियों की रक्षा के लिए युद्ध करने न गए थे; और न स्वयं उन्होंने उस युद्ध की रचना की थी। भारतीय फ़ौजों को वहाँ उत्तर की कड़ाके की सर्दी का कभी स्वप्न में भी अनुभव न हुआ था; ऐसे भयानक गोली-काण्ड को उन्होंने स्वप्न में न देखा था और न उन्हें प्राणघातक रसायनिक द्रव्यों का ही कुछ अनुभव था। उन्होंने कभी आकाश का युद्ध न देखा था और खाइयों की वर्तमान लड़ाई से वे बिल्कुल अनभिज्ञ थे। परन्तु इतना होने पर भी वे मौत के मुख में ढकेल दिए गए। जिस समय भारतीय फ़ौजें इस भयङ्कर युद्ध के लिए भेजी गई थीं, उस समय कनेडा और ब्रिटेन की फ़ौजों को युद्ध के नए विज्ञान और नई कलाओं की शिक्षा दी जा रही थी और वे कई महीनों की शिक्षा के पश्चात् युद्ध के मैदान में भेजी गई थीं। ऐसी परिस्थिति में भारतीय फ़ौजों के सैनिकों का बहुत बड़ी तादाद में मरना बिल्कुल स्वाभाविक ही है।

युद्ध के अन्त में ब्रिगेडियर जनरल रॉबिन्सन ने कहा था, कि युद्ध के समय भारत लाखों सैनिकों तथा सिविल ऑफ़िसरों के लिए रसद भेजता था। और यह सहायता वह उस समय कर रहा था, जब उसे स्वयं अपने देशवासियों के भरण-पोषण के लिए गेहूँ और चावल की अतीव आवश्यकता थी। ग़ल्ला भारत से बाहर भेज कर ब्रिटिश गवर्नमेंण्ट ने अत्यधिक लाभ उठाया। और युद्ध के उस भीषण काल में, जब मित्र-राष्ट्रों के पैर उखड़ने लगे थे, जब सम्राट ने स्वयं भारतीय फ़ौज की सहायता के लिए भारत से अपील की थी और मि० लॉयड जॉर्ज दुःख-भरी आवाज़ से भारत के सामने हाथ फैलाए थे; तब पहले युद्ध में निर्बल हो जाने पर भी उसने एक बार फिर सिर उठाया और अपने लाखों सैनिकों की आहुति देकर विजय-पताका अङ्गरेज़ों के सुपुर्द कर दी। परन्तु जब विजय के उपरान्त उसके बाक़ी बचे हुए सैनिक भारत लौटे, तब उनका स्वागत पञ्जाब का हत्या-काण्ड रच कर उनके भाइयों के ख़ून से किया गया! और वे हृदय-विदारक अपीलें युद्ध का अन्त होते ही भुला दी गईं !!

युद्ध के समय यह कहा जाता था, कि इङ्गलैण्ड उन सभी राष्ट्रों की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध कर रहा था, जो विदेशी शासन से कुचले जा रहे थे। परन्तु अब कहा जाता है कि हममें देश का शासन करने की योग्यता नहीं है। महायुद्ध के प्रारम्भ में मार्सलीज़ में हमारी फ़ौजों को उसी समय, जिस समय कनेडा और ब्रिटेन की फ़ौजें युद्ध की शिक्षा प्राप्त कर रही थीं, नई-नई मैशीनें और युद्ध के घातक अस्त्र और द्रव्य प्रयोग के लिए दे दिए गए थे, परन्तु अब न तो हम युद्ध के ही योग्य हैं और न फ़ौजी शिक्षा प्राप्त करने के। जिन लोगों का मस्तिष्क इतना विषैला है, उनके हाथ में भारत का भाग्य आपत्तियों से ख़ाली नहीं है और इसलिए हमारा विचार है कि उसके ऊपर जो लाञ्छन लगाए गए हैं, वे इस बात का उपयुक्त प्रमाण हैं, कि उसे औपनिवेशिक स्वराज्य अवश्य मिलना चाहिए।

* * *

# 'भविष्य' की कराची-कॉङ्ग्रेस सम्बन्धी चित्रावली का एक पृष्ठ

☞

कॉङ्ग्रेस-भवन के दो प्रधान प्रवेश-द्वार—दाहिनी ओर वाले द्वार का नाम 'भुर्गरी द्वार' और बाँई ओर वाले का 'अमर दत्तात्रेय और मेघराज द्वार' है। प्रथम द्वार सिन्ध के स्वनाम धन्य मुसलमान नेता स्व० भुर्गरी के पवित्र नाम की स्मृति है जो बम्बई कौन्सिल के सदस्य थे और हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षपाती थे। दूसरे द्वार का सम्बन्ध उन अमर स्वदेश-सेवकों की स्मृति से है जो विगत १६ अप्रैल, १९३० को, कराची सत्याग्रह समिति के नेताओं के मुक़द्दमे के समय कराची की अदालत में पुलिस की गोलियों से शहीद हुए थे।

☞
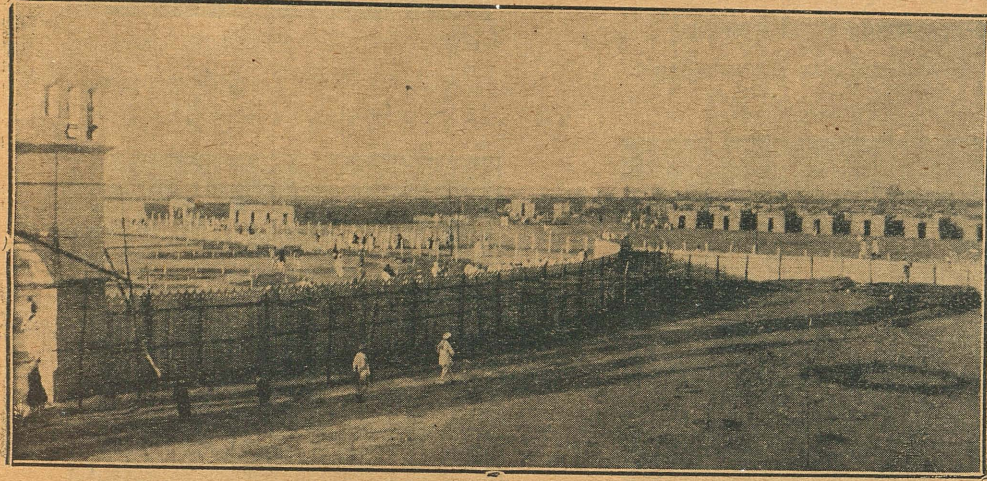
इस चित्र में, दाहिनी ओर कराची कॉङ्ग्रेस के नेताओं के निवास स्थान तथा बाईं ओर 'हरचन्द नगर' के अन्यान्य स्थानों का दृश्य है।

☞

इस चित्र में कराची कॉङ्ग्रेस-भवन का भीतरी दृश्य दिखाया गया है। एक ओर वक्ता मञ्च, तथा स्वागत-समिति का स्थान, और दूसरी ओर दर्शकों की गैलरियाँ तथा बीच में प्रतिनिधियों के बैठने के स्थान का दृश्य है।

☞
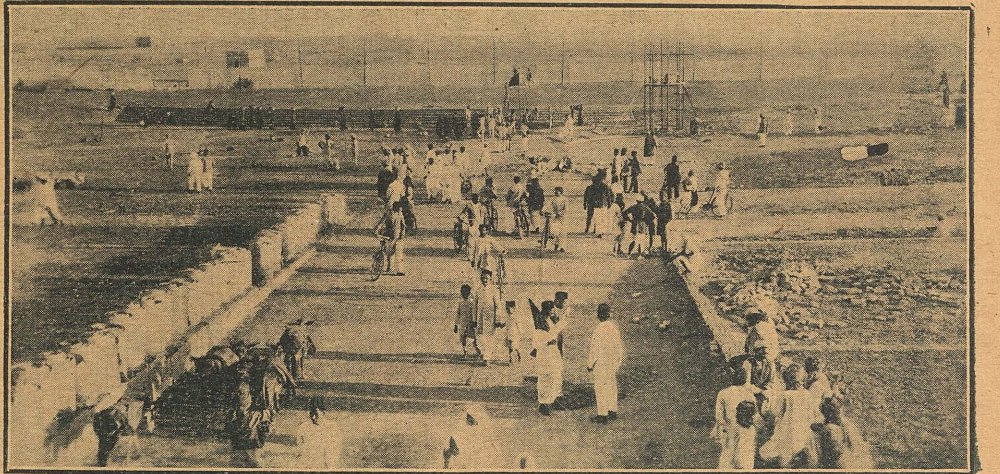
कराची कॉङ्ग्रेस-भवन के सामने राष्ट्रीय पताका-स्तम्भ का दृश्य—सभा-भवन के दो प्रधान द्वारों का दृश्य तथा सामने का खुला मैदान जहाँ से बाहरी दर्शक राष्ट्रीय समारोह की झाँकी ले सकते हैं।
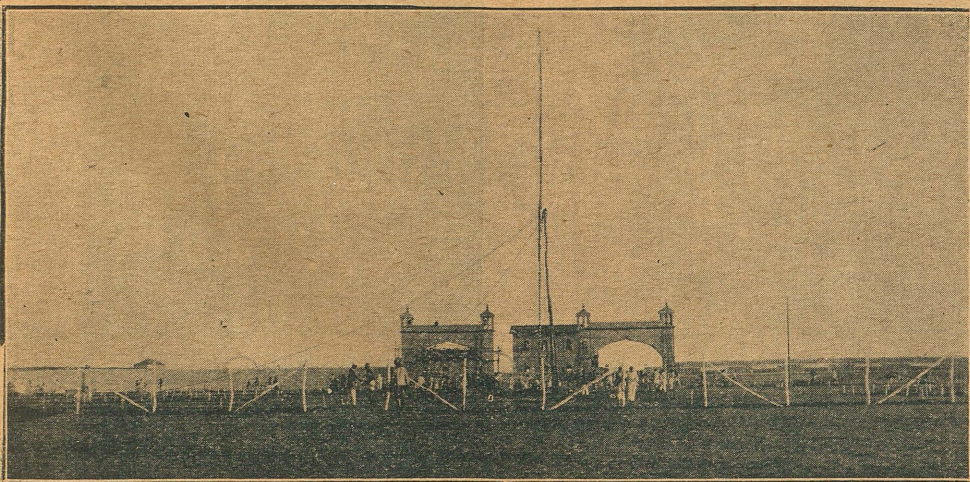
# 'भविष्य' की कराची-कॉङ्ग्रेस सम्बन्धी चित्रावली का एक पृष्ठ
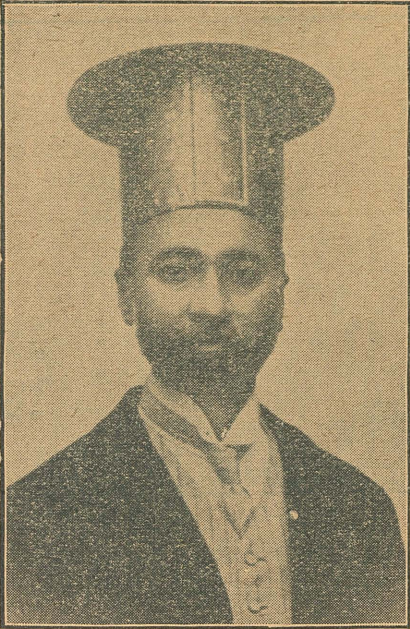
स्वर्गवासी सेठ हरचन्दराय विशनदास, भूतपूर्व एम० एल० ए०। आप कॉङ्ग्रेस के एक उत्साही कार्यकर्ता और विगत सन् १९१३ की कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के सभापति थे। आपकी आकस्मिक मृत्यु सन् १९२९ में दिल्ली में हुई थी। आप स्वर्गीय लाला लाजपतराय के बुलाने पर, एसेम्बली में साइमन कमीशन के विरुद्ध वोट देने गए थे। आप ही की अमर-स्मृति में कराची कॉङ्ग्रेस-स्थान का नाम सेठ हरचन्दराय विशनदास नगर रक्खा गया है।

श्री० सन्तदास ईदानमल, बी० ए०, एल०-एल० बी०—कराची कॉङ्ग्रेस वालण्टियर-कोर के जनरल कमाण्डिङ्ग ऑफ़िसर।
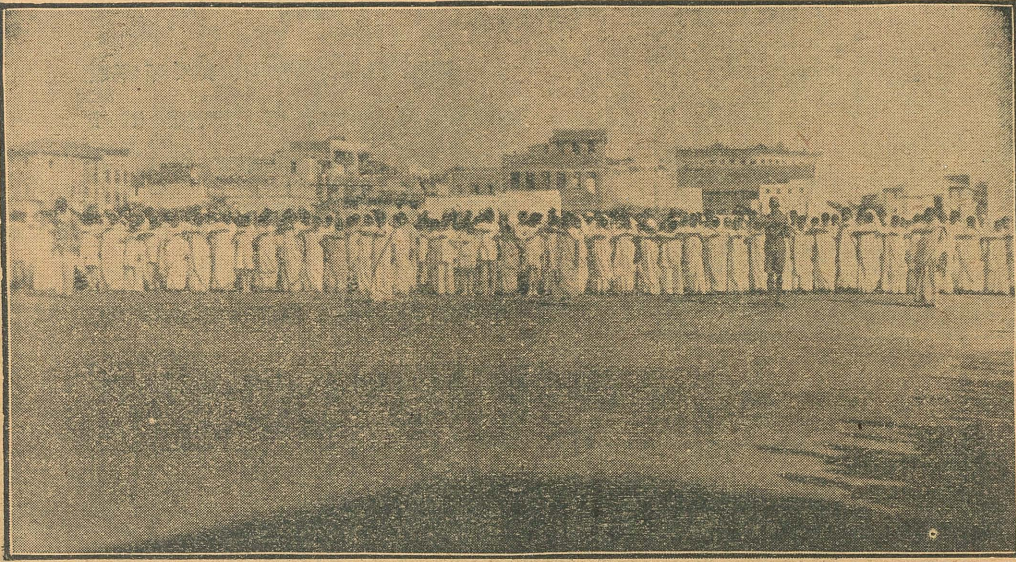
कराची कॉङ्ग्रेस की स्वयंसेविकाओं का जत्था अपने ऑफ़िसर के प्रति सम्मान प्रदर्शन कर रहा है।

श्री० कीकीबेन चावलदास लालवानी—आप कराची कॉङ्ग्रेस स्वागतकारिणी समिति की अन्यतम उप-सभानेत्री हैं।
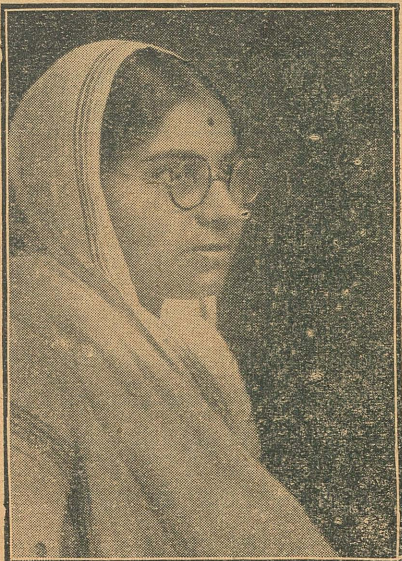
श्री० काशीबेन जी० कोटक—आप कराची सत्याग्रह समिति की अन्तिम डिक्टेटर की हैसियत से छः महीने की कठिन कारागार की सज़ा भोग कर आई हैं।

श्रीमती कुसुमबेन मुन्शी—आप भड़ोच के वकील श्री० ठाकोरलाल मुन्शी की पुत्री और भड़ोंच के देश-सेविका सङ्घ की सभानेत्री हैं।

कुमारी पार्वती टी० गिडवानी—आप कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के महिला-विभाग की मन्त्रिणी हैं।

# 'भविष्य' की कराची-कॉङ्ग्रेस सम्बन्धी चित्रावली का एक पृष्ठ
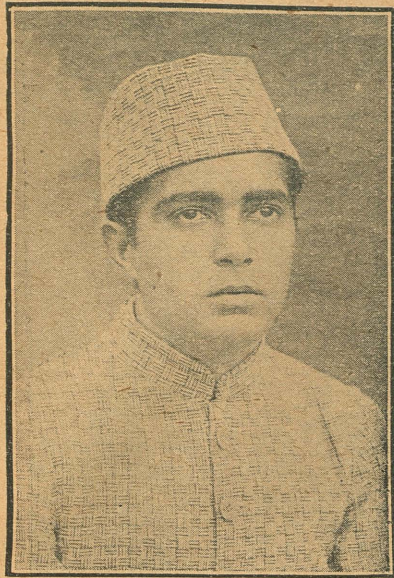
श्री० जी० एच० लालवानी—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के प्रकाशन-विभाग के सक्रेटरी इञ्चार्ज।

डॉक्टर जेमी एन० आर० सेठना—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वयंसेवक-सेना के शिक्षादाता।
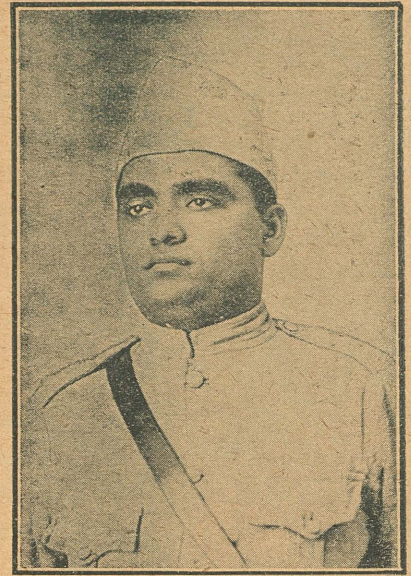
सेठ ज्येष्ठाराम भवनजी—कराची कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री तथा स्वयंसेवक-सेना के अन्यतम सीनियर ऑफ़िसर।

श्री० गुलराजमल जयरामदास—आप कराची कॉङ्ग्रेस के प्रतिनिधियों को स्टेशन से उनके निवास-स्थान पर पहुँचाने वाली समिति के मन्त्री हैं।
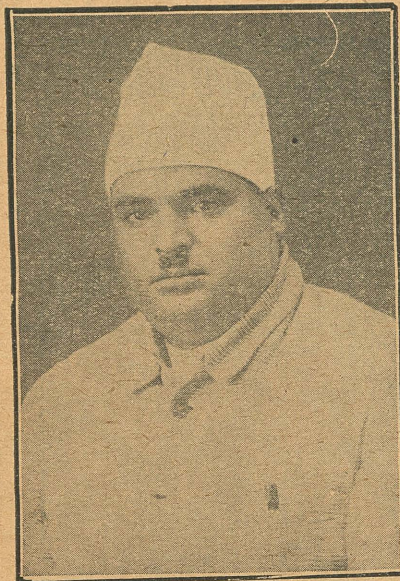
श्री० डी० डी० चौधरी—आप कराची कॉङ्ग्रेस की एडवाइसरी कमिटी के सदस्य और रेलवे-सुविधा-विधायिनी उप-समिति के मन्त्री हैं।

श्री० चैथराम टी० वलेछा, बी० ए०—आप कराची कॉङ्ग्रेस के मुद्रण और प्रकाशन-विभाग के मन्त्री हैं।

प्रो० एन० आर० मलकानी—पराडाल डिकोरेशन ( सजावट ) कमिटी के सेक्रेटरी।

श्री० लालजी एम० मेहरोत्रा, बी० ए० बी० एल०—स्पेशल कैम्प कमिटी के सेक्रेटरी।
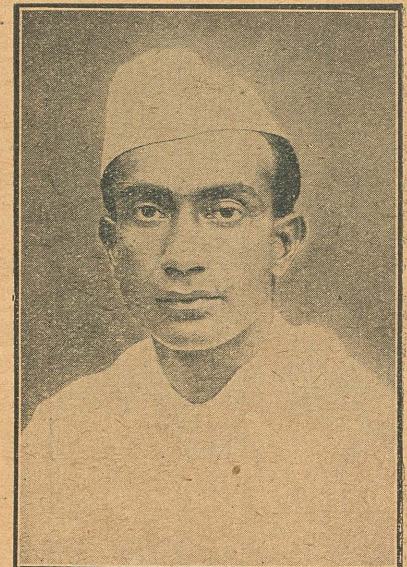
प्रो० घनश्याम जेठानन्द, एम० ए०, एल्-एल्० बी०—विषय-निर्वाचिनी समिति के मन्त्री।

# 'भविष्य' को कराची-कॉङ्गरेस सम्बन्धी चित्रावली का एक पृष्ठ

श्री० जयन्तीलाल पारिख—आप कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागत-समिति के कोषाध्यक्ष और मुनीम हैं।
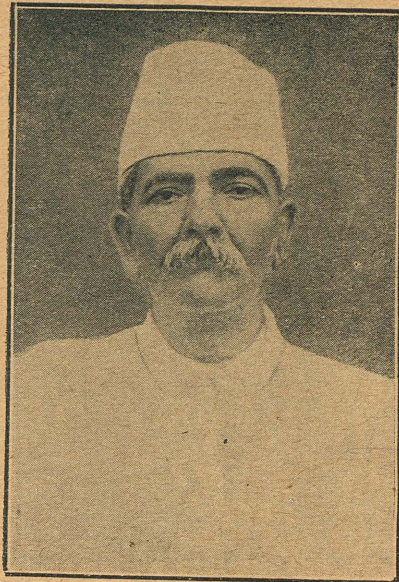
सेठ रवजी जेठाभाई—सभा-भवन सुसज्जित-कारिणी समिति के मन्त्री हैं।
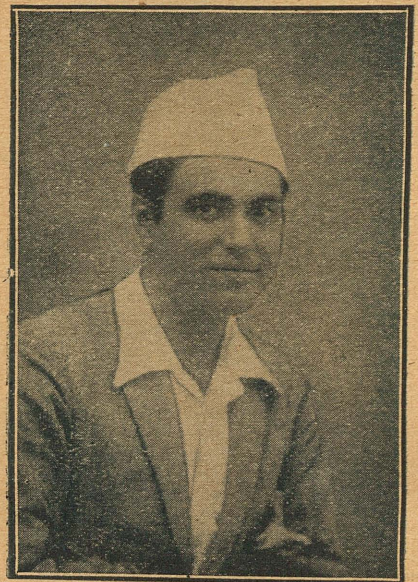
श्री० तीरथ जी० सवानी बी० ए०—कराची में होने वाले अखिल भारतवर्षीय विद्यार्थी-सम्मेलन के संयोजक

श्री० हाफ़िज़ नसीर अहमद—आप कराची में होने वाले 'जमायतुल-उलमाए-हिन्द' की स्वागत-समिति के सेक्रेटरी हैं।

कुमारी जेठो सिपाहीमलानी, बी० ए०—आप कराची के 'हरचन्द नगर' अस्पताल की मन्त्रिणी हैं, जो गाँधी अस्पताल के तत्वावधान में कॉङ्ग्रेस अवसर के लिए खोला गया है।

श्री० शिवराम चवन—आप कराची कॉङ्ग्रेस की प्रतिनिधि स्वागत-कारिणी समिति के मन्त्री हैं।

कॉमरेड मुबारकअली—कराची में होने वाले अखिल भारतीय नवजीवन सभा—सम्मेलन के प्रधान मन्त्री।
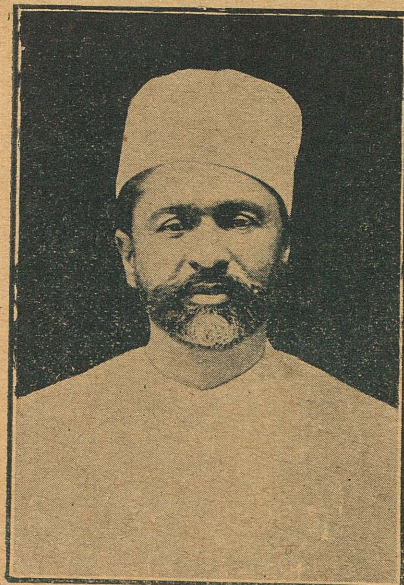
हकीम फ़तह मुहम्मद सेहवानी—आप कराची में होने वाले 'जमायतुल-उलमाए-हिन्द' कॉन्फ्रेन्स की स्वागत-समिति के प्रधान मन्त्री हैं।

सेठ शिवदास वी० मानेक—आप कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागत-समिति की 'स्टीमर-सुविधा-विधायिनी समिति' के मन्त्री हैं।

# पञ्जाब के तीनों विप्लववादी फाँसी पर लटका दिए गए

## लाहौर में सनसनी

### शहर भर में पुलिस, फ़ौज और हवाई जहाज़ों का पहरा

### ५० हज़ार स्त्री-पुरुष का रोमाञ्चकारी करुण-क्रन्दन

लाहौर का २३वीं मार्च का समाचार है, कि सन्ध्या के साढ़े सात बजे लाहौर सेण्ट्रल जेल में सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु और श्री० सुखदेव फाँसी पर लटका दिए गए। सेण्ट्रल जेल के भीतर क़ैदियों द्वारा लगभग ७ बजे बड़ी देर तक 'इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद' के नारे लगते रहे, जिससे आसपास के लोगों को इस बात का पता लग गया, कि सरदार भगतसिंह आदि फाँसी पर लटकाए जा रहे हैं।

स्व० भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह ने तार-द्वारा अधिकारियों से इस बात की प्रार्थना की थी कि भगतसिंह और उनके साथियों के मृतक शरीर अन्त्येष्टि क्रिया के लिए उन्हें दे दिए जायँ, परन्तु मृतक शरीर उन्हें नहीं दिए गए और आधी रात को सतलज नदी के किनारे जला दिए गए।

#### कुटुम्बियों से अन्तिम मुलाक़ात नहीं हो सकी

लाहौर का २३वीं मार्च का समाचार है, कि जेल के पदाधिकारियों ने उस दिन सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु और श्री० सुखदेव के माता-पिता और भाइयों और बहिनों के अतिरिक्त अन्य सम्बन्धियों को उनसे मुलाक़ात करने की आज्ञा नहीं दी। इस आज्ञा के विरोध में सरदार भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह ने वायसराय, गवर्नर और होम-मेम्बर को तार भेजा था। परन्तु उस सम्बन्ध में कोई कार्यवाही होने के पहले ही तीनों उसी दिन सन्ध्या को फाँसी पर लटका दिए गए।

भगतसिंह और उनके साथियों की फाँसी से लाहौर में बड़ी सनसनी फैल गई है। अङ्गरेज़ी और कुछ मुसलमानी दुकानों को छोड़ कर फाँसी के विरोध में २४वीं मार्च को पूरी हड़ताल रही। शहर के कोने-कोने में लोग नङ्गे सिर एकत्रित हो रहे थे। आकस्मिक घटना के भय से फ़ौज बिल्कुल तैयार रक्खी गई थी और शहर भर में सशस्त्र पुलिस का पहरा था। आकाश में वायुयानें भी इसी उद्देश्य से उड़ रही थीं। नौजवान भारत-सभा ने एक विराट सभा में फाँसी के विरोध में एक प्रस्ताव पास किया और श्री० भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव का स्मृति-चिन्ह स्थापित करने का निश्चय किया तथा उसके लिए रुपए की अपील भी की गई। सवेरे इस सभा के अतिरिक्त काले झण्डों सहित एक विराट जुलूस निकाला गया और मिण्टो-पार्क में लगभग ५०,००० स्त्री-पुरुषों की एक सभा हुई। सबके चेहरों पर उदासी छाई हुई थी। जब सभा में सरदार भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह रोते-चिल्लाते हुए उपस्थित हुए, तब सभा में उपस्थित स्त्री-पुरुषों के धैर्य का बाँध टूट गया और वे फूट-फूट कर रोने लगे। जब सभी बच्चों की नाईं रो रहे थे, तब सभा में से एक बच्चे ने उठ कर कहा कि भगतसिंह मरे नहीं हैं, वे ज़िन्दा हैं।

२ बजे दिन को नीला-गुम्बद से एक मौन जुलूस प्रारम्भ हुआ और ६ बजे शाम को मोरी गेट के बाहर समाप्त हुआ। शहर कॉङ्ग्रेस दफ़्तर और पञ्जाब सेवा-दल के झण्डे आधे अन्तर पर ( half mast ) लहरा रहे थे।

#### सरदार भगतसिंह के अन्तिम उद्गार

फाँसी के कुछ दिन पहले सरदार भगतसिंह और उनके साथियों ने दया-प्रार्थना के लिए इन्कार करते हुए पञ्जाब गवर्नर को लिखा था—"अन्त में हम केवल यह कहना चाहते हैं, कि आपकी अदालत के फ़ैसले के अनुसार हम पर सम्राट के विरुद्ध युद्ध करने का अभियोग लगाया गया है और इस प्रकार हम युद्ध के शाही क़ैदी हैं। अतएव हमें फाँसी पर न लटका कर गोली से उड़ाया जाना चाहिए! इसका निर्णय अब आपके ही ऊपर है, कि जो कुछ अदालत ने निर्णय किया है, उसके अनुसार आप कार्य करेंगे या नहीं। हमारी आपसे विनम्र प्रार्थना है और हमें पूर्ण आशा है कि आप कृपा कर फ़ौजी महकमे को आज्ञा देकर हमारे प्राण-दण्ड के लिए एक फ़ौज या पल्टन के कुछ जवान बुलवा लेंगे।"

कहा जाता है कि, इस सम्बन्ध में एक सिक्ख और एक अन्य व्यक्ति की गिरफ़्तारी हुई है।

## देश भर में असन्तोष की काली घटा

### नेताओं की निराशा

#### महात्मा गाँधी का वक्तव्य

नई दिल्ली से कराची कॉङ्ग्रेस के लिए रवाना होने के पहले ता० २४ को महात्मा गाँधी ने सहयोगी "हिन्दोस्तान टाइम्स" में प्रकाशित होने के लिए निम्न-लिखित वक्तव्य दिया है :—

"भगतसिंह और उनके साथी अमर-शहीद हो गए हैं। उनकी मृत्यु से आज लाखों व्यक्ति दुखी हैं। मैं इन नवयुवक देश-भक्तों की लगन की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ; परन्तु मैं देश के नवयुवकों को इस बात की चेतावनी देता हूँ, कि वे उनके पथ का अवलम्बन न करें। हमें भरसक उनके अभूतपूर्व त्याग, अदम्य उत्साह और विकट साहस का अनुकरण करना चाहिए, परन्तु उन गुणों का उपयोग उनकी तरह न करना चाहिए। देश की स्वतन्त्रता हिंसा और हत्याओं से प्राप्त नहीं होगी। गवर्नमेण्ट के सम्बन्ध में मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ, कि उसने विप्लववादियों की सहानुभूति प्राप्त करने का यह स्वर्ण-अवसर खो दिया है। सन्धि की शर्तों के अनुसार उसका यह कर्तव्य था, कि उनकी फाँसी की सज़ा वह कुछ समय के लिए स्थगित कर देती। अपने इस कार्य से उसने सन्धि पर बड़ा आघात किया है और इस बात का परिचय दिया है, कि उसमें अभी भी जनता के मनोभावों को कुचलने की शक्ति है। पशुबल के इस प्रदर्शन से यह स्पष्ट हो जाता है, कि बड़ी-बड़ी घोषणाएँ और सहानुभूति-सूचक सन्देश देने के उपरान्त भी वह अपनी शक्ति और शासनाधिकार से ज़रा भी हाथ खींचना नहीं चाहती। परन्तु गवर्नमेण्ट की इस दुर्नीति से कॉङ्ग्रेस को अपने उद्देश्य और अपने निश्चय से तिल-मात्र भी न डिगना चाहिए। आवेश में आकर हमें पथ-भ्रष्ट न होना चाहिए। हमें यह समझ कर सन्तोष कर लेना चाहिए, कि फाँसी की सज़ाएँ रद्द करना सन्धि के प्रस्तावों में निहित न था। गवर्नमेण्ट पर हम गुण्डापन का दोष आरोपित कर सकते हैं, परन्तु हमें उस पर सन्धि भङ्ग करने का दोष न मढ़ना चाहिए। मेरी व्यक्तिगत राय से भगतसिंह और उनके साथियों की फाँसी से हमारी शक्ति बढ़ गई है। हमें आवेश में आकर इस अवसर को व्यर्थ न खोना चाहिए। इस फाँसी के विरोध में देश भर में हड़तालें होना बिल्कुल स्वाभाविक है। इन देश-भक्तों की फाँसी के विरोध में मौन-जुलूस निकालने से अधिक उनका सम्मान नहीं हो सकता। इस अवसर पर हमें देश पर और अधिक आहुति देने के लिए तैयार होना चाहिए।"

#### सरदार पटेल

२४वीं मार्च को सरदार पटेल ने भगतसिंह और उनके साथियों की फाँसी के सम्बन्ध में नई दिल्ली में निम्न वक्तव्य दिया :—

"अङ्गरेज़ी क़ानून इस बात पर अभिमान से झूमता था, कि वह गवाही में जिरह के द्वारा प्रमाणित किए बिना किसी अभियुक्त को सज़ा नहीं देता, परन्तु उसी क़ानून ने ऐसी गवाही के विश्वास पर, जो घटना के बहुत देर बाद प्राप्त हुई थी और जिसमें जिरह का नाम न था—भारत के एक श्रेष्ठ युवक की हत्या कर डाली। किसी व्यक्ति को ढीठता और उच्छृङ्खलता के अपराध में सज़ा दी जा सकती है, परन्तु उसे फाँसी पर लटका देना कहाँ का न्याय है।"

### पं० मदनमोहन मालवीय का क्लेश

पं० मदनमोहन मालवीय ने कराची को प्रस्थान करने के पहले मुलाक़ात में कहा—"इस फाँसी से मुझे इतना दुख हुआ है कि मेरे मुँह से शब्द नहीं निकलते।"

### पं० जवाहरलाल नेहरू का वक्तव्य

२४ ता० को नई दिल्ली में राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपने वक्तव्य में कहा—"मैंने इन देश-भक्तों के अन्तिम दिनों में अपनी ज़बान पर लगाम लगा रक्खी थी, क्योंकि मुझे सन्देह था, कि मेरे ज़बान खोलते ही कहीं फाँसी की सज़ा रद्द होने में बाधा न पहुँचे। यद्यपि मेरा हृदय बिलकुल पक गया था और ख़ून अन्दर से उबाल खा रहा था, परन्तु तिस पर भी मैं मौन था। परन्तु अब फ़ैसला हो गया। हम देश भर के लोग मिल कर भी भारत के ऐसे युवक की रक्षा न कर सके, जो हमारा प्यारा रत्न था और जिसका अदम्य उत्साह, त्याग और विकट साहस भारत के युवकों को उत्साहित करता था। भारत आज अपने प्यारे बच्चों को फाँसी से छुड़ाने में असमर्थ है। इस फाँसी के विरोध में देश भर में हड़तालें होंगी और जुलूस निकलेंगे। हमारी इस परतन्त्रता और असहायता के कारण देश के कोने-कोने में शोक का अन्धकार छा जायगा। परन्तु उनके ऊपर हमें अभिमान भी होगा और जब इङ्गलैण्ड हमसे सन्धि का प्रस्ताव करेगा, उस समय उसके और हमारे बीच में भगतसिंह का मृत-शरीर उस समय तक रहेगा, जब तक हम उसे विस्मृत न कर दें।"

### मौलाना ज़फ़रअली का वक्तव्य

"अभागे भारत ने अपने इतिहास में ऐसी असहायता का कभी अनुभव नहीं किया था, जैसी असहायता का अनुभव उसने २३ ता० को भगतसिंह की फाँसी के अवसर पर किया है।"

### श्री० आसफ़अली का वक्तव्य

लाहौर में २३ वीं मार्च को श्री० आसफ़अली ने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' को निम्न वक्तव्य प्रकाशनार्थ भेजा है :—

"मैं दिल्ली से लाहौर, पञ्जाब-गवर्नमेण्ट से आज्ञा लेकर भगतसिंह से इस आशय से मिलने आया था, कि मैं क्रान्तिकारी दल के नाम उनसे एक पत्र प्राप्त करूँ, जिसमें वे उन्हें इस बात का आदेश दें, कि जब तक महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक आन्दोलन से भारत के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त करने की आशा है, तब तक के लिए वह अपने हिंसात्मक कार्य स्थगित कर दें। मैंने उनसे मुलाक़ात करने के लिए हर एक उपाय से काम लिया, परन्तु चारों ओर से दरवाज़ा बन्द पाया। मैंने पदाधिकारियों को यह स्पष्ट रूप से समझा दिया था, कि भगतसिंह से मिलने का उद्देश्य केवल अहिंसात्मक आन्दोलन के लिए सहायता प्राप्त करना है और उन्हें यह विश्वास भी दिलाया था, कि उस मुलाक़ात से मुझे बहुत सफलता मिलने की आशा है, परन्तु मेरी अनुनय-विनय का मुझे जो उत्तर मिला, उसमें अधिकार का मद निहित था। यदि मुझे भगतसिंह से मुलाक़ात करने का अवसर दिया जाता, तो मुझे विश्वास है कि क्रान्तिकारी दल से महात्मा गाँधी के मार्ग का अनुकरण कराने में बहुत सहायता मिलती। ऐसे मामले में, जिसका सम्बन्ध लाखों भारतवासियों से है, भगतसिंह जैसा देश-भक्त उन लोगों को, जिनका यह विश्वास है कि राजनैतिक दोषों को पूरा करने के लिए राज्यक्रान्ति की आवश्यकता है—उपदेश देने में किञ्चित सङ्कोच न करता।

* * *

## कुछ समाचार-पत्रों की सम्मतियाँ

भगतसिंह और उनके साथियों को फाँसी पर लटकाने में जल्दबाज़ी कर गवर्नमेण्ट ने समस्त देश के मनोभावों को कुचलने का प्रयत्न किया है। उसने ऐसे अवसर पर जो भयङ्कर भूल की है, उसका सन्धि पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता।

—हिन्दू ( अङ्गरेज़ी )

राजनैतिक दृष्टि से इससे अधिक शैतानी कार्य की योजना नहीं की जा सकती।

—स्वराज्य ( अङ्गरेज़ी )

गवर्नमेण्ट ने विप्लववादियों की सहानुभूति प्राप्त करने का सुवर्ण-अवसर हाथ से खो दिया है।

—स्वदेश मित्रम् ( अङ्गरेज़ी )

भगतसिंह और उनके साथियों की फाँसी से देश के शिक्षित युवकों में भयङ्कर असन्तोष फैलने की सम्भावना है। उनके प्राणों की भिक्षा के लिए गवर्नमेण्ट के पास हज़ारों प्रार्थना-पत्र भेजे गए, सैकड़ों सभाएँ हुईं; परन्तु अन्त में उनका परिणाम कुछ भी न निकला। यद्यपि जनता ने इन वीर और अमर देशभक्तों को, जिन्हें क़ानून ने अन्तिम दण्ड दिया था, जुलूस निकाल कर और अन्य प्रकार से बचाने का प्रयत्न किया था; परन्तु उनकी क़ानूनी कार्यवाही में इतनी भूलें थीं, कि यदि गवर्नमेण्ट चाहती तो उन्हें क़ानून के आधार पर मुक्त कर सकती थी। इसमें सन्देह नहीं, कि गवर्नमेण्ट ने कराची कॉङ्ग्रेस के अवसर पर उन्हें फाँसी पर लटका कर महात्मा गाँधी के मार्ग में काँटे बिखरा दिए हैं।

—लीडर ( अङ्गरेज़ी )

सरदार भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव की फाँसी की सज़ा रद्द न कर, गवर्नमेण्ट ने जैसी भयङ्कर भूल की है, उसकी तुलना कई वर्षों की किसी भयावह घटना से नहीं की जा सकती। इस देश के इतिहास में इतनी सनसनी किसी मामले में नहीं फैली, जितनी इस मामले में; और न कभी किसी मामले में फाँसी की सज़ा रद्द कराने के लिए देश ने इतनी अनुनय-विनय ही की है।

—ट्रिब्यून ( अङ्गरेज़ी )

सरदार भगतसिंह को फाँसी हो गई और सरकार समझती है, कि शायद इन देश-भक्तों को फाँसी देकर उसने विप्लववाद का नाश कर दिया है, पर उसे मालूम होना चाहिए, कि इस एक ही घटना से उसकी कठिनाइयाँ हज़ार गुना बढ़ गईं। और इससे केवल यही भय नहीं है कि विप्लव की आग और भी भड़केगी, वरन् यह भी सम्भव है कि इस घटना से महात्मा गाँधी का प्रभाव भी एकदम कम हो जाय, जिसने देश को ख़ून-ख़राबी से अब तक बचा रक्खा है।

—रियासत ( उर्दू )

सरदार भगतसिंह आदि को फाँसी देकर सरकार ने केवल अपने ही मार्ग में कठिनता का सामान पैदा नहीं कर लिया है, बल्कि कॉङ्ग्रेस को भी मुश्किल में डाल दिया है।

—अवध अख़बार ( उर्दू )

हम यह तो नहीं कह सकते, कि सरकार ने यह काम बुद्धिमानी का किया है या मूर्खता का, क्योंकि यह तो समय ही बताएगा। परन्तु यह अनुमान करना कठिन नहीं, कि इससे देश में बेचैनी बढ़ेगी और महात्मा गाँधी जैसे बुद्धिमान और प्रभावशाली नेताओं का स्थान नवयुवक छीन लेंगे।

—शेर ख़ालसा ( उर्दू )

×××जहाँ तक देश में शान्ति की प्रतिष्ठा और भारत तथा इङ्गलैण्ड के सम्बन्ध को क़ायम रखने का प्रश्न है, हमारी राय में इस फाँसी से उसको असह्य चोट लगी है। लॉर्ड इरविन और मि० मैकडॉनल्ड ने एक से अधिक बार दोनों देशों में अच्छा सम्बन्ध स्थापित करने की अपील की थी, जिसके उत्तर में महात्मा गाँधी ने अपना सत्याग्रह बन्द कर दिया और सरकार को मौक़ा दिया......परन्तु शोक है कि इन्हीं लॉर्ड इरविन और मि० मैकडॉनल्ड के शासन-काल में सरदार भगतसिंह आदि को फाँसी के तख़्ते पर लटका कर देश की शान्ति के पर्दे पर बिजलियाँ गिराने की चेष्टा की गई है।

—वतन ( उर्दू )

×××शासन-तन्त्र ने एक ऐसा क़दम बढ़ाया, जिसका परिणाम किसी दशा में अच्छा नहीं हो सकता। शासन-तन्त्र में सञ्चालकों को सोचना चाहिए, कि जिस भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव के लिए पेशावर से बम्बई और काश्मीर से कन्याकुमारी तक के लोग मेमोरियल भेज रहे हैं, आख़िर कोई बात है, जिसकी वजह से देश उन्हें जीवित रखना चाहता है। अफ़सोस है कि नौकरशाही ने शासन को सर्व-प्रिय बनाने का एक नायाब मौक़ा सदा के लिए खो दिया।

—मिलाप ( उर्दू )

समस्त भारत के एक स्वर से प्रार्थना करने पर भी आख़िर भगतसिंह फाँसी पर लटका ही दिया गया और नौकरशाही ने अपनी अदूरदर्शिता से हिंसावादी दल को अहिंसावादी राजनीतिकों के विरुद्ध आन्दोलन करने तथा सर्वसाधारण को उत्तेजित करने का मौक़ा दे ही दिया।

—रोज़ाना ख़िलाफ़त ( उर्दू )

सरदार भगतसिंह को फाँसी देने में यदि क़ानून से मजबूर थी, तो क्या यह ग़ैर-क़ानूनी तौर पर फाँसी देने के लिए भी वह मजबूर थी? जिस न्याय की नींव पर ब्रिटिश सरकार का दावा है, कि उसका महल खड़ा है, क्या वह यही है?

—अर्जुन ( हिन्दी )

सरकार की ज़िद से यह बात सिद्ध होती है, कि उदारता के ढोल पीटने पर भी सरकार अपने हाथ की शक्ति कम नहीं करना चाहती।

—नवीन भारत ( हिन्दी )

सरकारी हल्क़ों में इङ्गलैण्ड और भारत के सम्मानपूर्ण समझौते के शत्रु तो बहुत से हैं, परन्तु जिस व्यक्ति ने वायसराय को इस आख़िरी मौक़े पर इन नौजवानों को फाँसी पर लटकाने की सलाह दी है, वह सचमुच दोनों देशों का कट्टर दुश्मन भी है और अत्यन्त मूर्ख भी।

—पञ्जाब-केसरी ( हिन्दी )

समस्त राष्ट्र के आवेदन-निवेदन से भी भारत-सरकार विचलित नहीं हुई। भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी पर लटक कर प्राण दे देना पड़ा! ये जीवनाञ्जलि देकर मृत्यु का स्वागत करने को प्रस्तुत थे। इन्होंने क्षमा की प्रत्याशा नहीं की थी—प्रार्थना भी नहीं की थी, इनका अन्तिम पत्र इस बात का प्रमाण है। तब भी इनकी मृत्यु के कारण सारे देश पर विषाद की काली छाया पड़ गई है। यह शोक की स्तब्धता नहीं, क्षोभ का गाम्भीर्य है।..............सरकार के मनोभावों में परिवर्तन हुआ है—ऐसा विश्वास न होता तो समस्त देश इस तरह क्षमा-प्रार्थना और प्रत्याशा न करता। विप्लवी और विप्लव के सन्देह में गिरफ़्तार व्यक्तियों को उत्पीड़ित न करके, अगर दया द्वारा उन्हें हिंसा के पथ से लौटा लाने की नीति का अवलम्बन किया जाता तो तोप व बन्दूक़ के बल से बलवान ब्रिटिश सरकार को कोई दुर्बल समझ कर उपहास नहीं करता!

—आनन्द बाज़ार पत्रिका ( बँगला )

* * *

## भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व, सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्बाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

## सम्पादकीय विचार

भविष्य

२७ मार्च, सन् १९३१

# परीक्षा का अवसर

अन्त में वही हुआ, जिसकी किसी भी विचारशील व्यक्ति को आशा नहीं थी। सारे देश की संयुक्त प्रार्थना ठुकरा दी गई। जीवन-भिक्षा के लिए पसारी हुई भारतवासियों की झोली में तीन अभागे भारतीय नौजवानों की ठण्डी लाशें डाल दी गईं! तीनों असहाय राजबन्दी २३वीं मार्च की शाम को लाहौर सेण्ट्रल जेल में फाँसी के तख़्ते पर लटका दिए गए! इस एकाङ्गी नाटक का सब से लज्जापूर्ण पहलू यह था, कि अकारण ही ऐसी-ऐसी अड़चनें उपस्थित कर दी गईं, कि पिता पुत्र को और पुत्र पिता को, माँ-बेटे को और बेटा माँ को; भाई बहिन को और बहिन भाई को, अन्तिम बार आँखें भर कर देख भी नहीं सके थे, कि काला पर्दा गिरा दिया गया। इससे भी ग्लानिपूर्ण बात यह थी, कि इन अभागे (अभागे इसलिए, कि इन बेचारों ने पराधीन भारत में जन्म लिया था) नवयुवकों की लाशें तक सम्बन्धियों को नहीं दी गईं और बेचारों को हृदय मसोस कर रह जाना पड़ा! ऐसी परिस्थिति में नवयुवकों को अपनी परवशता पर घृणा उत्पन्न होना बिल्कुल स्वाभाविक है। मूर्तिमती करुणा का निरीक्षण उन लोगों ने किया है, जो २४वीं मार्च को होने वाली लाहौर की शोक-सभा में उपस्थित थे। समाचार-पत्रों का कहना है, कि लगभग ५०,००० लोगों की उपस्थिति थी और सभों की आँखें भरी हुई थीं—ठीक उसी समय, जब कि सभा की कार्यवाही प्रारम्भ होने जा रही थी, स्वर्गीय सरदार भगतसिंह के पूज्य पिता सरदार किशनसिंह जी बालकों के समान फूट-फूट कर रोते हुए आए—वे पुत्र-वियोग में अपने बाल नोचते और कहते थे कि, "हाय साडे पुत्तर दी लाश तक ज़ालमाँ ने नहीं दित्ती" (अर्थात् ज़ालिमों ने मेरे पुत्र का शव तक मुझे नहीं दिया) उनके करुण-विलाप के प्रारम्भ होते ही सारी सभा फूट-फूट कर रोने लगी, स्त्रियों की हिचकियाँ बँध गईं। उपस्थित महिलाओं के बार-बार आग्रह करने पर स्वर्गीय श्री० शिवराम राजगुरू की पूजनीय माता और बहिन को प्लेटफ़ॉर्म पर दर्शन देने के अभिप्रायः से खड़ी होना पड़ा। कहा जाता है, उस समय सारी उपस्थिति अपने सर्वोच्च स्वर से ढाढ़ें मार-मार कर रो रही थी। श्री० राजगुरु की भगिनी के अतिरिक्त, अन्य कई महिलाएँ बेहोश तक हो गईं! बच्चे माता-पिता को रोते देख कर रो पड़े! दुखित परिवारों को धैर्य धराने वाला और उन्हें सान्त्वना देने वाला सभा में एक भी व्यक्ति नहीं था; यद्यपि प्रत्येक हृदय में सहानुभूति और समवेदना की प्रत्यक्ष-भावनाएँ हिलोरें ले रही थीं, किन्तु इन अभागों के पास साधन ही क्या था? हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य रूपी कोढ़, विश्वासघातियों की टोली और पाण्डु-वर्ण के नवयुवकों के अतिरिक्त इन अभागों के पास रक्खा ही क्या था?? एक ओर था विशाल एवं सङ्गठित ब्रिटिश साम्राज्य, क़िले के समान बड़ी-बड़ी सुरक्षित जेलें और भाड़े की पुलिस और पल्टनों के चमकते हुए शस्त्रों का आतङ्क और दूसरी ओर थी निरीह भारतवासियों की खुली छातियाँ और ठण्डी साँसें! कौन किसको धैर्य बँधवाने का साहस करता? अस्तु।

महात्मा गाँधी, राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू तथा श्री० जे० एम० सेन गुप्त-जैसे प्रतिभाशाली नेताओं के वक्तव्यों को पढ़ कर सहसा इस दुखदाई समाचार पर विश्वास करने की इच्छा नहीं होती थी, किन्तु दुर्भाग्य से समाचार सत्य था। महात्मा गाँधी बार-बार—२२वीं मार्च की सन्ध्या तक—देशवासियों को खुले शब्दों में आश्वासन दिलाते रहे हैं, कि यदि "भारतवासी सन्धि की शर्तों का पूर्णतः पालन करेंगे तो अहिंसात्मक ही नहीं, वरन हिंसात्मक क़ैदियों तक के मुक्त होने की पूरी सम्भावना है" कलकत्ते में अपना वक्तव्य देते हुए, श्री० सेन गुप्त महोदय ने भी इसी प्रकार की अनेक अनर्गल एवं निराधार बातें कह डाली थीं। लाख चेष्टा करने पर भी देशवासी नेताओं की इस पहेली को आज तक नहीं समझ सके हैं—वे जानना चाहते हैं, कि महात्मा गाँधी-जैसे प्रतिष्ठित नेता ने आख़िर किस भ्रम में पड़ कर यह ख़्याली-पुलाव पका डालने का साहस किया था? तरुण-भारत आज महात्मा जी से इस बात की कैफ़ियत तलब करना चाहता है और एक हद तक उसका यह कार्य क्षम्य भी है।

इस सिलसिले में यह बतला देना भी अप्रासाङ्गिक न होना चाहिए, कि यद्यपि गाँधी-इर्विन समझौते की सफलता पर एक ओर जहाँ अधिकांश जनता ने हर्ष और सन्तोष प्रगट किया था, वहाँ दूसरी ओर एक छोटा-सा दल ऐसा भी था, जिसने सदा इस समझौते को सन्देह एवं घृणा की दृष्टि से देखा था; दुर्भाग्य से आज देश में ऐसी विषम परिस्थिति उत्पन्न हो गई, जिसने बलात् बहुमत को दूसरे दल वालों की दूरदर्शिता का क़ायल कर दिया है और २२वीं मार्च को देश का जो सब से कमज़ोर दल था, वही स्वेच्छाचारिता का पुट पाकर २३ वीं मार्च की शाम को देश का सब से प्रबल अङ्ग बन गया है। आज एक ऐसा दल भी देश में उपस्थित हो गया है, जो महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कार्य करना चाहता अवश्य है, किन्तु इच्छा से नहीं—बाध्य होकर, क्योंकि देश के समक्ष कोई दूसरा कार्यक्रम उपस्थित ही नहीं है, अतएव कर्तव्य समझ कर ही यह दल महात्मा गाँधी और उनकी राजनीति का साथ दे रहा है। गर्म-दल के नवयुवक तो आज खुले-आम महात्मा जी को गालियाँ दे रहे हैं। बम्बई में मज़दूर-दल के नेताओं ने "गाँधी का नाश हो" के खुले नारे लगाए थे और २५ वीं मार्च का समाचार है, कि कराची पहुँचने पर एक दल ने महात्मा गाँधी का काले झण्डे लेकर इसी प्रकार के नारों से स्वागत किया है।

"हमें नेताओं की ज़रूरत नहीं"
"गाँधी-इर्विन समझौते का नाश हो"
"महात्मा गाँधी का नाश हो"

आदि अनेक प्रकार के नारों द्वारा देश के पूज्य एवं प्रतिष्ठित नेताओं का स्वागत होना, भविष्य के गर्भ में छिपी हुई एक विषम परिस्थिति का परिचायक है, इसमें सन्देह नहीं।

इस गर्म दल के नेताओं का कहना है, कि जिस समझौते के लिए अगस्त में स्वयं गवर्नमेण्ट ने कॉङ्ग्रेस को आमन्त्रित किया था, वह आज के समझौते की अपेक्षा बहुत सस्ता सौदा होता। उस समय भी गवर्नमेण्ट समस्त राजनैतिक क़ैदियों को बिना किसी शर्त के छोड़ देने को तैयार थी, पुलिस के अत्याचारों की जाँच, न तब होती और न आज हुई। रह गया नमक का मामला, वह भी किसी तरह हल हो ही गया होता। फिर इन ७-८ महीनों में (अगस्त से ३री मार्च तक) इतनी आहुतियाँ देने की क्या आवश्यकता थी? सैकड़ों लोगों की जानें पुलिस की लाठियों और गोलियों द्वारा गवाँ कर, माँ-बहिनों का इतना असहनीय निरादर करा कर तथा ५०-६० हज़ार देशवासियों को आख़िर जेल भेजने की ज़रूरत ही क्या थी; जब कि कॉङ्ग्रेस को उन्हीं माँगों पर सन्तोष कर लेना था, जो कि अगस्त में स्वयं उसके चरणों पर लोट रही थीं?

इस समझौते में यदि गर्म दल के भारतवासियों को आशा की कोई झलक दिखाई दी थी, तो केवल महात्मा गाँधी तथा कुछ अन्य नेताओं का यह भ्रमपूर्ण आश्वासन कि हिंसात्मक राजबन्दी अवश्य ही छोड़ दिए जावेंगे। स्वर्गीय सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव के सम्बन्ध में महात्मा जी का स्पष्ट वक्तव्य था, कि "इन नवयुवकों की केवल फाँसी की सज़ा को बदल कर आजीवन कारावास-दण्ड ही नहीं कर दिया जायगा, बल्कि यदि इस समझौते को मनसा-वाचा-कर्मणा से कार्यरूप में परिणत किया गया, तो ये सारे राजबन्दी बिल्कुल मुक्त कर दिए जावेंगे।" जहाँ तक हमारा ख़्याल है, भारतवासियों की ओर से—जिसमें हम हिंसात्मक क्रान्तिकारियों को भी जोड़ लेते हैं—कोई भी बात ऐसी नहीं की गई, जो गाँधी-इर्विन समझौते के विरुद्ध कही जा सके। ऐसी हालत में देशवासियों का महात्मा गाँधी के प्रति क्षणिक असन्तोष का फैलना अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता।

गर्म दल के भारतवासियों का स्पष्ट मन्तव्य यह है, कि जब तक लॉर्ड इर्विन की सरकार सभी राजनैतिक क़ैदियों को छोड़ना स्वीकार न कर लेती—चाहे वे हिंसात्मक राजबन्दी थे अथवा अहिंसात्मक—तब तक इस समझौते को उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखना चाहिए था। गर्म दल के भारतवासियों का यह पूर्ण विश्वास है, कि महात्मा गाँधी यदि इस शर्त पर अड़ गए होते—ख़ासकर, जब कि उनकी अधिकांश शर्तें पूरी नहीं की गई थीं, तो झक मार कर लॉर्ड इर्विन को उनके सामने इस मामले में नत-मस्तक होना पड़ता। इस दल वालों का यह निर्णय बिल्कुल निराधार भी नहीं है। आयर्लैण्ड में भी स्वतन्त्रता-युद्ध के अन्त में ठीक ऐसे ही समझौते का अवसर उपस्थित हुआ था, महात्मा गाँधी के स्थान पर वहाँ आसीन थे श्री० डी० वेलेरा और लॉर्ड इर्विन के आसीन को बृटिश-प्रतिनिधि की हैसियत से सुशोभित करने वाले थे, मि० लॉयड जॉर्ज। कार्यवाही प्रारम्भ होने के पूर्व ही मि० डी वेलेरा ने पहिला प्रश्न उपस्थित किया था समस्त राजबन्दियों को फ़ौरन छोड़ देने का—चाहे वे हिंसात्मक क्रान्ति के पुजारी हों अथवा अहिंसात्मक क्रान्ति के! दूसरा कोई उपाय न देख कर, ब्रिटिश प्रतिनिधि मि० लॉयड जॉर्ज को घुटने टेक देने पड़े थे और अन्त में मि० डी वेलेरा की पूर्ण विजय हुई। सारे राजबन्दी जब रिहा कर दिए गए, तब कहीं समझौते के प्रश्नों पर विचार किया गया। ओडूगन (Mr. Odugan) और मि० मैकगोमन (Mr. MacGoman) जैसे भयङ्कर हिंसात्मक क्रान्तिकारी, जिन्हें मृत्यु-दण्ड की आज्ञा सुना दी गई थी—केवल रिहा ही नहीं कर दिए गए, बल्कि उनके परामर्श से समझौते का ढाँचा निर्माण हुआ था। कौन कह सकता है, यदि महात्मा गाँधी भी ज़रा अधिक दूरदर्शिता से काम लिए होते, तो इन नवयुवकों की सम्भवतः जानें बच गई होतीं। गर्म दल के लोगों का महात्मा गाँधी पर इसी बात का रोष है और हमें भय है, इस दल के लोगों को कराची-कॉङ्ग्रेस के अवसर पर शान्त रखना महात्मा जी के लिए सहज कार्य नहीं होगा।

इस सिलसिले में हम फिर उन नवयुवकों से भी अपील करना अपना कर्तव्य समझते हैं—जिनका विश्वास प्रतिहिंसा और परिशोध में है—कि उन्हें 'भविष्य' के गताङ्क में प्रकाशित हमारी उन पंक्तियों पर अवश्य विचार करना चाहिए, जो उन्हीं को सम्बोधन करके लिखी गई थीं। सरदार भगतसिंह, श्री० शिवराम राजगुरु तथा श्री० सुखदेव के शरीर अब इस नश्वर जगत की वस्तु नहीं रहे, मिट्टी और शक्ति वाला अंश आज क्रमशः मिट्टी और भगवान में मिल गया होगा। उनके अधिकांश साथी, सहायक और सलाहकार आज जीवन के उस पार हो गए हैं, जो थोड़े-बहुत शेष बचे हैं, वे भूखे प्यासे रह कर जगह-जगह मारे फिर रहे हैं—इस समय जीवन-रक्षा का प्रश्न उनके लिए सर्वोपरि एवं स्वाभाविक है। ऐसी असङ्गठित परिस्थिति में क्षणिक रोष और आत्म-ग्लानि के वशीभूत होकर उन्हें कोई भी ऐसा कार्य न करना चाहिए, जिससे अकारण ही और भी क्षति उठानी पड़े। उन्हें स्मरण रखना चाहिए, कि महात्मा गाँधी ने अपना आन्दोलन आरम्भ करते हुए कहा था, कि उन्हें अपने असहयोग और अहिंसा के उपयोग में सच्चा विश्वास है और सफलता की उन्हें पूर्ण आशा भी है। उन्होंने हिंसात्मक क्रान्ति के उपासकों से बड़े ज़ोरों से इस बात की अपील की थी, कि परमात्मा के नाम पर वे उनके आन्दोलन को कम से कम ३ वर्षों तक अपने हिंसात्मक कार्यों द्वारा धक्का न पहुँचावें। उन्होंने यह भी कहा था, कि इस अवधि में यदि भारत स्वतन्त्र न हो गया, तो अपने इस आन्दोलन में स्वयं उन्हें अविश्वास हो जायगा और फिर "उन्हें हिंसात्मक क्रान्ति के पुजारियों के रास्ते में रोड़े अटकाने का कोई नैतिक हक़ न होगा।" उनके इस आन्दोलन का एक वर्ष ३री मार्च को समाप्त हो चुका है; अतएव महात्मा गाँधी के शब्दों में आगामी दो वर्षों तक यदि किसी भी प्रकार की उद्दण्डता का परिचय दिया गया, तो स्वतन्त्रता के इस युद्ध की सारी विफलता का दोष उनके माथे में सदा के लिए कलङ्क की भाँति लग जायगा, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। अस्तु।

इसी प्रश्न का एक दूसरा पहलू भी है। अन्यत्र प्रकाशित "भारत की स्वाधीनता-साधना" शीर्षक लेख के कुशल लेखक ने कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन के साथ ही साथ रौलेट कमिटी की रिपोर्ट के आधार पर भारतीय हिंसात्मक आन्दोलन की भी चर्चा की है, उसे एक बार ठण्डे दिल से विचार करने पर उन्हें मालूम होगा, कि उनका दल आज की अपेक्षा सन् १९०७ से १९२४ तक हज़ार गुना सुदृढ़ और सङ्गठित था। अपनी ओर से भारत में विप्लव उपस्थित कर देने में उन्होंने कोई कसर उठा नहीं रक्खी थी, फिर भी उन्हें पग-पग पर असफलता हुई थी और अन्त में एक प्रकार से उनके सारे ही दल का नाश हो गया; फिर आज उनकी संख्या और शक्ति कितनी है, जिसके बल पर वे संसार के सब से शक्तिशाली राष्ट्र से लोहा लेना चाहते हैं? अधिक से अधिक उनकी संख्या समस्त भारत में एक से दो सहस्र तक आँकी जा सकती है, जिनके पास न धन है, न अस्त्र-शस्त्र; न देशवासियों का पूर्ण सहयोग है और न सङ्गठन! ऐसी परिस्थिति में हिन्सात्मक क्षेत्र में बिना समझे-बूझे कूद पड़ना कहाँ तक बुद्धिमानी है, इसका निर्णय हमारी अपेक्षा वे अधिक उत्तमता से कर सकते हैं।

हमारी तो निश्चित-धारणा है, कि जहाँ उन्हें इतनी अधिक क्षति उठानी पड़ी है, वहाँ इन तीन प्रतिभाशाली नवयुवकों की भी आहुति समझ कर वे सन्तोष करें और अपनी सारी शक्ति कॉङ्ग्रेस के अहिंसात्मक आन्दोलन में उस समय तक लगा दें, जब तक कोई निश्चित निबटारा नहीं हो जाता।

सहसा विश्वास करने की इच्छा तो नहीं होती, किन्तु यदि कॉङ्ग्रेस और गवर्नमेण्ट में किसी भी प्रकार का समझौता हुआ, तो अब यह समझौता तभी सम्भव होगा, जब शेष सारे राजनैतिक बन्दी—चाहे वे हिंसात्मक अपराध के दोषी हों अथवा अहिंसात्मक अपराधों के—छोड़ नहीं दिए जाते। उन्हें आशापूर्ण नेत्रों से उस शुभ दिन का स्वागत करना चाहिए, उनका रास्ता रोकना बुद्धिमानी का परिचायक नहीं है।

गवर्नमेण्ट से हमें केवल इतना ही कहना है, कि एक ऐसे समय में, जबकि भारत की राष्ट्रीय महासभा का अधिवेशन होने जा रहा था—उसने इन तीन नवयुवकों को फाँसी पर लटका कर ऐसी भयङ्कर अदूरदर्शिता का परिचय दिया है, जिसका प्रायश्चित्त केवल भारत को ही नहीं, इङ्गलैण्ड को भी करना होगा। इन तीन नवयुवकों को यदि फाँसी पर लटकाना ही गवर्नमेण्ट का अभीष्ट था, तो दो-चार सप्ताह उनके और जीवित रहने से ब्रिटिश राज्य का ध्वंस नहीं हुआ जाता था। जहाँ वे न्याय के नाम पर वर्षों से कारागार में पड़े सड़ रहे थे, वहाँ २-४ सप्ताह और भी वास्तविक शान्ति के नाम पर रक्खे जा सकते थे; किन्तु यह प्रश्न नहीं था, प्रश्न यह था, कि इस सुअवसर को ब्रिटिश गवर्नमेण्ट हाथ से इसलिए नहीं जाने देना चाहती थी, कि उसे इतने तुमुल राष्ट्रीय संग्राम के बाद अपनी तथा महात्मा गाँधी के शक्ति की परीक्षा करनी थी। पर आज जबकि ये पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं, हमारे लिए इस परीक्षा के नतीजे पर टिप्पणी करना सम्भव नहीं है। बिना कॉङ्ग्रेस का यवनिका पतन हुए, किसी भी निश्चित-धारणा पर पहुँचना एक बार ही असम्भव है; किन्तु इतना तो स्पष्ट है कि आज भारत के सभी राजनीतिज्ञ परीक्षा की कसौटी पर चढ़े हुए हैं, आज इनकी दूरदर्शिता पर भारत का भावी कल्याण और इनकी अदूरदर्शिता पर देश का सर्वनाश निश्चित है।

## धन्यवाद

मेरे जेल से मुक्त होने पर जिन मित्रों तथा सम्बन्धियों ने बधाई के पत्र तथा तारादि मेरे पास भेजे हैं, समयाभाव के कारण उनकी सेवा में व्यक्तिगत-पत्र लिखना मेरे लिए सम्भव नहीं है; अतएव इन पंक्तियों द्वारा उन सभी भाई-बहिनों को मैं हृदय की सारी सच्चाई से धन्यवाद देता हूँ और मुझे आशा है, वे इसे स्वीकार करेंगे।

मेरी अनुपस्थिति में आए हुए पत्रों का उत्तर देना भी सम्भव नहीं था और चूँकि इतनी जल्दी मेरे मुक्त होने की कोई सम्भावना नहीं थी, इसलिए अनेक पत्रों का फ़ाइल कर दिया जाना भी स्वाभाविक ही था।

जिन मित्रों को पत्रोत्तर न मिला हो, उनसे मैं क्षमा-प्रार्थी हूँ।

—रामरखसिंह सहगल

# हमारा सरदार!

[ श्री० दीनानाथजी, एम० ए० ]

राष्ट्र-निर्माण के समय किसी भी देश की आधार-शिला उसके योद्धाओं पर रक्खी जाती है। इसीलिए योद्धा देश के प्राण होते हैं। शताब्दियों की ग़ुलामी के उपरान्त आज देश ने करवट बदली है और उसमें जागृति का सञ्चार हुआ है। आधुनिक भारत का नए सिरे से निर्माण हो रहा है और इस राष्ट्रीय निर्माण के उद्योग में सन् १८५७ से लेकर अब तक भारत अपने अगणित योद्धाओं की आहुति दे चुका है। आधुनिक भारत की नींव में जिन योद्धाओं की अस्थियाँ गारे के रूप में लग चुकी हैं, वे इस देश के चमकते हुए नक्षत्र के समान हैं। देश की भावी सन्तति सदैव उनकी पूजा करेगी। सरदार वल्लभभाई पटेल उन्हीं योद्धाओं में से हैं, जिनका भारतीय राष्ट्र-निर्माण में ज़बरदस्त हाथ है। बारडोली का उदाहरण सम्मुख रख उन्होंने देश के किसानों को जिस प्रकार स्वतन्त्रता के संग्राम के लिए अग्रसर किया है, वह भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में चिर-स्मरणीय रहेगा। बारदोली के सत्याग्रह संग्राम में कुछ दिन पहले उन्होंने जिस वीरता से नौकरशाही से लोहा लिया था, उसे पाठक अभी भूले न होंगे। नौकरशाही ने वहाँ हर सम्भव-उपाय से सरदार को परास्त करने का प्रयत्न किया था। नौकरशाही मशीन के छोटे से पुर्ज़े से लेकर बड़े तक ने उनके आन्दोलन को कुचलने के लिए घृणित से घृणित उपाय से काम लिया, परन्तु सरदार पटेल ने अपनी शान्त और सत्याग्रह की निर्दोष नीति पर दृढ़ रह कर नौकरशाही को ऐसा करारा जवाब दिया, कि अन्त में उसे घुटने टेक देने के लिए विवश होना पड़ा। उस समय से देश यह अच्छी तरह समझ गया है, कि उनमें इस युद्ध का सेनापति होने की पूरी क्षमता है और ऐसे भीषण समय में युद्ध-समिति ने उनके हाथों में राष्ट्रीय संग्राम का भार सौंप कर अत्यन्त दूरदर्शिता से काम लिया। 'भविष्य' के पाठकों की जानकारी के लिए 'सर्दार वल्लभभाई पटेल' शीर्षक पुस्तक के कुछ महत्वपूर्ण पृष्ठ यहाँ उद्धृत किए जाते हैं :—

### वंश-परिचय

गुजरात में लवा और कदवा नाम की, कुरमी जाति की दो उपजातियाँ हैं। ये जातियाँ लव और कुश की वंशज कही जाती हैं। सरदार वल्लभभाई इन्हीं में से लवा उपजाति के एक रत्न हैं। गुजरात के पेटलाद ताल्लुका में करमसद एक गाँव है। उसी गाँव में सरदार पटेल के माता-पिता रहते थे। उनके यहाँ खेती होती थी। उनके पास घर की कुछ ज़मीन भी थी। सरदार पटेल के पिता श्री० झवेरभाई बड़े वीर और साहसी थे। सन् १८५७ की आज़ादी की लड़ाई में उन्होंने ख़ूब खुल कर भाग लिया था। झाँसी की वीराङ्गना महारानी लक्ष्मीबाई का प्रान्त उनका अच्छी तरह देखा-भाला था। ग़दर के दिनों में तीन बरस तक घरवालों को उनका पता तक न चला।

श्री० झवेरभाई बड़े ईश्वर-भक्त थे। वे 'स्वामी-नारायण' की सेवा में रात-दिन लगे रहते थे। ५५ वर्ष की उम्र से वे उनकी सेवा करने लगे थे। घर में केवल एक बार भोजन के लिए आते थे। सारा समय उनका भजन-पूजन में ही लगता था। झवेरभाई का स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। जीवन के अन्तिम समय तक वे प्रतिदिन मुट्ठी भर कच्चे चावल और बाजरा चबाया करते थे। ९२ बरस की उम्र में उनका देहान्त हो गया। सरदार पटेल की पूजनीया माता भी उनके पिता के ही समान संयमी और धर्मशीला हैं। आजकल उनकी उम्र ८० बरस की है, तो भी वे दिन-दिन भर भजन-पूजन और चरख़ा कातने में लगी रहती हैं।

माता-पिता के इन गुणों का प्रभाव सरदार पटेल के चरित्र पर भी ख़ूब पड़ा है। उनके जीवन में संयम, सादगी, कष्ट-सहन, साहस आदि गुणों का बहुत व्यापक विकास हुआ है। सचाई और दृढ़ता तो उनमें कूट-कूट कर भरी है। बड़े से बड़े ख़तरे और कष्ट-सहन के समय पीछे हटना तो वे जानते ही नहीं। बारदोली के सत्याग्रह-संग्राम के अवसर पर 'सरदार' की दृढ़ता का परिचय देश भर को मिल चुका है।

### बाल-जीवन और शिक्षा
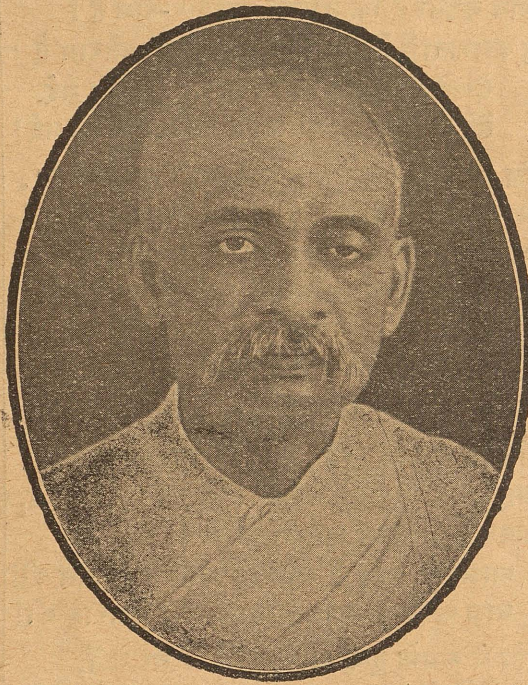
राष्ट्रपति वल्लभभाई पटेल

वल्लभभाई का बाल-जीवन माता-पिता के साथ गाँव में ही बीता। आरम्भ ही से पिता को उनकी शिक्षा का बड़ा ध्यान था। वे रोज़ सवेरे बालक-वल्लभ को खेत पर ले जाते और रास्ते में आते-जाते उसे पहाड़े याद कराते थे। वल्लभ का बाल-जीवन बड़ा मनोहारी था। उनके विद्यार्थी-जीवन में अनेक ऐसी मनोरञ्जक घटनाएँ हुईं, जिनसे घर और बाहर के सभी लोगों को समय-समय पर बड़ा आनन्द मिला।

वल्लभभाई को, प्रारम्भिक शिक्षा कुछ तो गाँव में, और कुछ पेटलाद में मिली। माध्यमिक शिक्षा के लिए उन्हें नड़ियाद और बड़ौदा जाना पड़ा। जब वे नड़ियाद में पढ़ते थे, तब उन्होंने अपने स्कूल में एक आन्दोलन खड़ा कर दिया। बात यह थी कि स्कूल के एक मास्टर स्कूली पुस्तकों का व्यापार करते थे। वल्लभभाई ने आन्दोलन उठाया कि कोई लड़का उनसे पुस्तकें मोल न ले। लड़कों में बड़ी उत्तेजना फैली, यहाँ तक कि हड़ताल हो गई। ५-६ दिन तक स्कूल बन्द रहा। अन्त में शिक्षक को झुकना पड़ा इस पर वल्लभभाई ने हड़ताल का भी अन्त करा दिया। वहीं से उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की।

### मुख़्तारी

वल्लभभाई के माता-पिता की आर्थिक दशा अच्छी न थी। वे बहुत साधारण हैसियत के आदमी थे। इसलिए वल्लभभाई ने कॉलेज की पढ़ाई का मोह छोड़ दिया। कॉलेज की पढ़ाई के लिए बहुत रुपए की ज़रूरत होती है। एक मामूली आदमी इस पढ़ाई का ख़र्च नहीं उठा सकता। असल बात यह है, कि वल्लभभाई को ऊँची साहित्यिक शिक्षा प्राप्त करने का चाव था ही नहीं। ४-५ बरस का समय कॉलेज की ऊँची पढ़ाई में खो देना उनके लिए बहुत कठिन था। उन्होंने मुख़्तारी का इम्तिहान पास किया और गोधरा में मुख़्तारी करने लगे।

आरम्भ ही से वल्लभभाई को विलायत जाकर बैरिस्टरी पढ़ने की धुन थी। इसी धुन में उन्होंने मुख़्तारी शुरू कर दी थी। गोधरा के बाद उन्होंने बोरसद में मुख़्तारी का काम किया। वल्लभभाई के पास अधिकतर फ़ौजदारी के मामले आते थे। अपनी कार्य-पटुता और बुद्धि-कौशल के बल पर थोड़े ही दिनों में वे ज़िले भर में प्रसिद्ध हो गए।

वल्लभभाई के पास क़त्ल, डाका, धोखा-धड़ी से रुपया मार लेने आदि के मामले बहुत आते थे। दीवानी मामलों की ज़िम्मेदारी वे अपने ऊपर बहुत कम लेते थे। वे अपने मुक़द्दमों को बड़ी चतुरता से लड़ते थे। उनकी सूझ-बूझ विलक्षण थी। अपने मामले को सिद्ध करने के लिए वे जिस ढङ्ग से दलीलें देते थे, उससे अदालतों के हाकिम दङ्ग रह जाते थे। फ़ौजदारी अदालतों के अधिकारियों तथा पुलिस आदि महकमों के हाकिमों पर वल्लभभाई का बड़ा रोब था। हाकिम-हुक्काम उनके डर से काँपते रहते थे।

### पत्नी-वियोग

एक बार गोधरा में प्लेग की बड़ी भयङ्कर बीमारी फैली। अदालत के नाज़िर का लड़का बीमार हो गया। वल्लभभाई ने उसकी भरसक दवा-दारू और सेवा-शुश्रूषा की, पर वह बच नहीं सका। उसका देहान्त हो गया। श्मशान से लौटते ही स्वयं भी बीमार पड़े। उनके गिल्टी निकल आई। इससे वल्लभभाई तनिक भी नहीं घबड़ाए। बीमारी की दशा में ही वे गाड़ी में बैठ कर पत्नी के साथ आनन्द चले आए और उनसे कहा—"तुम करमसद जाओ और मैं नड़ियाद जाता हूँ, वहाँ अच्छा हो जाऊँगा।" इस दशा में किस पत्नी को पति का साथ छोड़ देने का साहस हो सकता है? वल्लभभाई ने बड़ा ज़ोर डाल कर अपनी पत्नी को करमसद भेज दिया।

नड़ियाद पहुँच कर वे अच्छे हो गए। करमसद में उनकी पत्नी बीमार पड़ीं। वल्लभभाई उन्हें 'ऑपरेशन' के लिए बम्बई पहुँचा आए। प्रति दिन उनके ऑपरेशन की ख़बर यहाँ उन्हें मिलती ही रहती थी। थोड़े दिन बाद पत्नी की तबीयत ज़्यादा गिर गई। एक दिन वल्लभभाई अदालत में एक मुक़द्दमा लड़ रहे थे, कि उन्हें तार से पत्नी के देहान्त की ख़बर मिली। तार को पढ़ कर उन्होंने मेज़ पर रख लिया। जब मुक़द्दमे का काम समाप्त हुआ, तब अदालत से बाहर आकर उन्होंने मित्रों से उस तार की चर्चा की। इस घटना से उनके दृढ़ स्वभाव का पता चलता है। कठिन से कठिन समय पर, बड़े से बड़ा सङ्कट पड़ने पर भी, वे धीरज को नहीं खोते। जीवन की एकमात्र सहचरी के देहावसान का तार मिलने पर उनके माथे पर शिकन तक नहीं पड़ी। वे

अदालत में बराबर अपना काम करते रहे। असल बात यह है, कि कठिन से कठिन परीक्षा के अवसर पर भी उनका हृदय विचलित नहीं होता। वीरता, साहस, धीरज आदि गुण वल्लभभाई की उँगली के इशारे नाचते हैं।

## विदेश-यात्रा

वल्लभभाई को विलायत जाकर बैरिस्टरी पास करने की धुन आरम्भ ही से थी। मुख़्तारी करते हुए वे विदेश-यात्रा की तैयारी करने लगे। विलायत जाने के लिए जिस कम्पनी से पत्र-व्यवहार हो रहा था, उसका अन्तिम पत्र वल्लभभाई के बड़े भाई विट्ठलभाई के हाथ पड़ गया। अङ्गरेज़ी में दोनों का नाम वी० जे० पटेल होने के कारण यह गड़बड़ हो गई। श्री० विट्ठलभाई ने छोटे भाई से कहा—"मैं तुमसे बड़ा हूँ, पहले मुझे इङ्गलैण्ड हो आने दो। मेरे वापस आ जाने पर तुम्हें जाने का अवसर मिल सकेगा, पर तुम्हारे लौट कर आ जाने पर मेरा जाना नहीं हो सकेगा।" इस बातचीत के १५ दिन बाद श्री० विट्ठलभाई पटेल इङ्गलैण्ड चले गए। वे तीन वर्ष बाद देश में वापस लौटे। फिर वल्लभभाई विलायत गए। वहाँ पहुँचते ही वे पढ़ाई में जुट गए। इस समय उनकी उम्र आधी हो चुकी थी। संसार का व्यावहारिक ज्ञान भी उन्हें हो चुका था और अपनी लाभ-हानि, भला-बुरा समझने की क्षमता उनमें थी। अब उनके पथ-भ्रष्ट होने की कोई सम्भावना नहीं थी।

बचपन में वल्लभभाई बड़े नटखट और चञ्चल स्वभाव के थे। किन्तु इङ्गलैण्ड पहुँच कर वे एक गम्भीर स्वभाव के सौम्य विद्यार्थी बन गए। पढ़ने में उन्होंने बड़ा परिश्रम किया। वल्लभभाई के रहने की जगह से 'मिडिल टेम्पिल' का पुस्तकालय ११ मील दूर था। वे सवेरे उठ कर पुस्तकालय में जा बैठते और पढ़ने में जुट जाते। वहीं वे दूध और रोटी खा लेते और दिन भर पुस्तकें पढ़ने में लगे रहते। शाम होने पर जब सब लोग चले जाते और कर्मचारी उन्हें पुस्तकालय के बन्द होने की सूचना देते, तब वे उठ कर घर आते। कहते हैं, कि इन दिनों उन्होंने सत्रह-सत्रह घण्टे तक लगातार अध्ययन किया। इसका फल भी उन्हें वैसा ही मिला। वे बैरिस्टरी की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम उत्तीर्ण हुए। इससे ५० पौण्ड की एक छात्रवृत्ति मिली और चार टर्म की फ़ीस मुआफ़ हो गई। इम्तिहान में प्रश्न-पत्रों के जो उत्तर वल्लभ भाई ने लिखे, उन्हें पढ़ कर परीक्षकों को बड़ा ताज्जुब हुआ। उनमें से एक ने हिन्दुस्तान में रहने वाले चीफ़ जस्टिस स्कॉट के नाम वल्लभभाई को एक पत्र भी लिख दिया था। पत्र में लिखा था कि वल्लभभाई-जैसे आदमी को न्याय-विभाग की ऊँची से ऊँची जगह दी जानी चाहिए। वल्लभभाई बैरिस्टरी की परीक्षा पास कर लेने के दूसरे ही दिन हिन्दुस्तान के लिए जहाज़ पर रवाना हो गए। विलायत की सैर करने के लिए दो-चार दिन को भी वे वहाँ नहीं ठहरे।

## बैरिस्टरी

हमारे देश में वकालत और बैरिस्टरी का पेशा प्रायः अच्छा नहीं समझा जाता। इस पेशे से आमदनी तो ख़ूब होती है, पर मनुष्य का नैतिक पतन हो जाता है। लेकिन दुर्भाग्य या सौभाग्य से हमारे देश के बड़े-बड़े नेता इन्हीं वकील या बैरिस्टरों में से निकले हैं। उनमें से अधिकांश इस समय अपनी वकालत छोड़ चुके हैं। महात्मा गाँधी पहले स्वयं बैरिस्टर थे। परन्तु इस पेशे में छल, कपट, बेईमानी, झूठ, मक्कारी आदि बातों की भरमार देख कर उनका कोमल हृदय व्यथित हो उठा। उन्होंने सदा के लिए इस अनैतिक धन्धे से अपना पीछा छुड़ा लिया। बैरिस्टर के रूप में अधिक समय तक वे 'नैतिक दिवालिया' कैसे बने रहते? उन्हें तो गले में झोली डाल कर, एक महापुरुष के रूप में भारत का हृदय-सम्राट होना था!

श्री० वल्लभभाई विलायत से एक सुयोग्य बैरिस्टर बन कर लौटे। थोड़े ही दिनों में उनकी बैरिस्टरी अच्छी चमक निकली। अहमदाबाद में वल्लभभाई की बैरिस्टरी की धाक जम गई। लोग अपने मामले इन्हीं के पास लाने लगे। उनकी योग्यता के सामने पुराने-पुराने वकील-बैरिस्टरों का रङ्ग फीका पड़ गया। बैरिस्टरी से उन्होंने धन भी कमाया और नाम भी।

## नाज़ करती है बजा, तुझ पर ज़मीं गुजरात की

[ कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी ]

मञ्ज़िले मक़सूद[१] का, बस रहनुमा[२] तू है पटेल,
कश्तिए हिन्दोस्ताँ का, नाख़ुदा[३] तू है पटेल!
मुफ़लिसों का, बेकसों का आसरा तू है पटेल,
देश वाले मानते हैं, पेशवा तू है पटेल,
तेरी कुरबानी पे, दिल कुरबान, जी कुरबान है,
देवता है दर-हक़ीक़त, कहने को इनसान है!

हो वतन आज़ाद, ले देकर तुझे यह काम है,
बैठते-उठते यही अरमान सुबहो-शाम है!
कौन कहता है कि तुझको आरज़ूए-नाम है?
तू समझता है कि क्या तकलीफ़, क्या आराम है।
देखते ही देखते क्या ज़ोर पर यह आ गई,
तेरे दम से और भी "गाँधी" की आँधी छा गई!

रञ्ज भी सहता है तू, तकलीफ़ भी सहता है तू,
अपनी धुन में मस्त रहता है, मगन रहता है तू!
शान से मौजों की सूरत हर घड़ी बहता है तू,
बात कहने की जो होती है, वही कहता है तू!
बारडोली से ज़माने भर ने जाना है तुझे,
क्यों न हो, गाँधी ने भी सरदार माना है तुझे!

तेरी भी सजधज निराली और अनोखी शान है,
बाँकपन में बाँकपन है, आन में क्या आन है!
शम्ए[४] आज़ादी पे परवाना सिफ़त[५] कुर्बान है,
आबरू है तू वतन की, तू वतन की जान है।
आज तेरी बात है, फिर हो कमी किस बात की?
नाज़ करती है बजा, तुझ पर ज़मीं गुजरात की!

पाँव वे समझे हुए, आगे कभी धरता नहीं,
सब हँसें जिस काम पर, वह काम तू करता नहीं।
कहते हैं डरना किसे, हरगिज़ कहीं डरता नहीं,
सौ मुसीबत में भी, आहे-सर्द तू भरता नहीं!
रङ्ग तेरा देख कर, यह ऐसा आलम देखकर,
सर झुका देती है दुनिया तेरा दम-ख़म देखकर!!

१—इरादा किया हुआ, २—रास्ता दिखाने वाला, ३—खेवट ४—दीपक, ५—तरह।

परन्तु विलायत की शिक्षा और बैरिस्टरी का नशा वल्लभभाई पर अधिक दिनों तक न ठहर सका। खेड़ा ज़िले के ग़रीब किसान अपना दुखड़ा लेकर उनके पास आने लगे। दिन पर दिन उनका ध्यान देश की दर्दनाक हालत की ओर खिंचने लगा।

समय-समय पर वल्लभभाई और उनके बड़े भाई विट्ठलभाई पटेल में देश की वर्तमान अवस्था पर बातचीत होती थी। विट्ठलभाई पटेल बम्बई में बैरिस्टरी करते थे। उनका काम भी अच्छा चलता था। परन्तु उनका बहुत सा समय सार्वजनिक कामों में चला जाता था। एक बार दोनों भाइयों में देश के सामयिक प्रश्नों पर बातचीत हो रही थी। दोनों भाइयों ने निश्चय किया कि देश की आज़ादी के लिए ऐसे लोक-सेवी संन्यासियों की ज़रूरत है, जो अपना जीवन उत्सर्ग कर सकें। श्री० विट्ठलभाई ने देश-सेवा का काम अपने ऊपर लिया और परिवार के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी वल्लभभाई के कन्धों पर पड़ी।

## महात्मा गाँधी का प्रभाव

पहले-पहल जब महात्मा गाँधी अहमदाबाद आए, तब वल्लभभाई की बैरिस्टरी ख़ूब चल रही थी। महात्मा गाँधी ने आकर बहुतों की शान्ति भङ्ग की। परन्तु वल्लभभाई का ध्यान उनकी ओर आकर्षित न हो सका। 'गुजरात क्लब' में बैठ कर अपने मित्रों से उन्होंने एक बार कहा था—"गाँधी क्यों इन लोगों के सामने ब्रह्मचर्य की बातें करते हैं? यह तो भैंस के सामने भागवत सुनाने की सी बात है!"

थोड़े दिन बाद महात्मा गाँधी गुजरात के राजनैतिक कामों में भाग लेने लगे। इससे वल्लभभाई का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ। उन्हें अब कुछ सार्वजनिक काम होने की आशा दिखाई दी। उन्होंने सोचा, कि अब शायद प्रान्त में कुछ ठोस काम हो सकेगा।

गोधरा में प्रान्तीय राजनैतिक कॉन्फ़्रेन्स का अधिवेशन हुआ। उसके सभापति थे महात्मा गाँधी। उसमें रचनात्मक कार्यक्रम का एक ढाँचा बनाया गया। कार्यक्रम को पूरा करने के लिए एक कमिटी बनी। वल्लभभाई उसके मन्त्री नियुक्त किए गए।

वल्लभभाई ने अपने साथियों के साथ बड़े उत्साह से काम आरम्भ कर दिया। उन्होंने कमिश्नर मैंट से बेगार के सम्बन्ध में लिखा-पढ़ी की। कमिश्नर का उत्तर न मिलने पर उन्होंने फिर एक ७ दिन का नोटिस भेजा और लिख दिया, कि इसका उत्तर न मिला तो हाईकोर्ट के फ़ैसले के आधार पर बेगार को ग़ैर-क़ानूनी ठहराने और प्रान्त भर में लोगों के बेगार बन्द कर देने की सूचना दे दी जायगी। नोटिस की मियाद पूरी होने के एक दिन पहले ही कमिश्नर ने वल्लभभाई को बुला कर बातचीत कर ली। गाँधी जी इससे बड़े ख़ुश हुए। और उसी समय से वल्लभभाई अधिकाधिक उनके सम्पर्क में आने लगे। आगे चल कर तो गाँधी जी के साथ सार्वजनिक क्षेत्र में इतने घुले-मिले कि एक-दूसरे के जीवन-मरण के साथी बन गए।

## सत्याग्रह और असहयोग

सत्याग्रह और असहयोग में महात्मा गाँधी के जीवन का वह अमर तत्व निहित है, जो आज भारत के कोने-कोने में गूँज रहा है। देश के अनेक स्थानों में सत्याग्रह के परम तत्व ने पशु-बल और मदान्ध सत्ता पर विजय प्राप्त की है। इसी तत्व के सहारे न्याय को अन्याय पर, आत्म-बल को पशु-बल पर, और सत्य को झूठ और मक्कारी पर विजय मिली है। इसी तत्व के बल पर देश के सैकड़ों निर्बल प्राणियों के सामने बड़े-बड़े शक्तिशाली अधिकारियों तक को झुकना पड़ा है।

असहयोग के युग में देश की जनता में पञ्जाब-हत्याकाण्ड से बड़ा असन्तोष फैल रहा था। महात्मा गाँधी ने इस देश के लोगों से अपील की कि विदेशी शासन के ज़ुल्मों से त्राण पाने का अमोघ अस्त्र असहयोग है। महात्मा जी की अपील पर देश के हज़ारों आदमी सरकार से असहयोग करने पर तुल पड़े।

वल्लभभाई ने असहयोग में बैरिस्टरी छोड़ दी। पहले वे अपने लड़के, लड़की को ऊँची शिक्षा के लिए विलायत भेजना चाहते थे। परन्तु अब उन्होंने असहयोग की दीक्षा लेकर उन्हें सरकारी स्कूल से भी उठा

लिया। यह सब करके वल्लभभाई गुजरात में असहयोग का प्रचार करने लगे। उन्होंने प्रान्त भर में दौरा किया और घर-घर में नवयुग का पुनीत सन्देश पहुँचा दिया।

देश भर में असहयोग की आग जल रही थी। लोगों में बड़ी भारी उत्तेजना थी। हज़ारों आदमी देश के लिए सहर्ष जेल जाने लगे। असहयोग की सी आँधी देश में आज तक पहले कभी न चली थी। शक्तिशाली सत्ताधारियों के आसन हिल उठे। उन्होंने आन्दोलन की आग को दबाने के लिए सारी शक्ति लगा दी। परन्तु सरकार के सारे उद्योगों पर पानी फिर गया। सरकारी दमन ने आन्दोलन की आग को अधिकाधिक प्रज्वलित करने के लिए घी का काम किया। जैसे-जैसे सरकार ने दमन किया, वैसे ही वैसे लोगों में उभाड़ आया और आन्दोलन की आग ने उग्र रूप धारण किया।

अन्त में वह दिन भी आया, जब असहयोग के प्रवर्तक महात्मा गाँधी गिरफ़्तार करके जेल में बन्द कर दिए गए। वल्लभभाई उन्हें जेल के फाटक तक पहुँचा आए। वहाँ से वापस आकर वे बड़ी सरगर्मी से काँङ्ग्रेस का काम करने लगे। महात्मा जी की अनुपस्थिति में तो गुजरात के काम का सारा भार वल्लभभाई के कन्धों पर आ पड़ा। उन्होंने उस भार को जिस योग्यता से वहन किया, वह सचमुच उन्हीं के अनुरूप था।

वल्लभभाई गाँधी जी की पल्टन के बड़े ज़बरदस्त योद्धा हैं। वे तर्रार नहीं, ठोस काम करना ख़ूब जानते हैं। गाँधी जी की गिरफ़्तारी के बाद देश भर में एक सन्नाटा छा गया। थोड़े दिन बाद ही आन्दोलन के काम में शिथिलता के आसार दिखाई देने लगे। परन्तु वल्लभभाई मैदान में डटे हुए बराबर रचनात्मक कार्य में जुटे रहे। काँङ्ग्रेस के उसी काम में उन्हें सफलता दिखाई देती थी। चरख़ा, खादी का पुनरुत्थान, किसानों का सुदृढ़ सङ्गठन, अछूतोद्धार, राष्ट्रीय शिक्षा के लिए कुछ व्यावहारिक ठोस काम, आदि बातों में वल्लभभाई को किसी हद तक देश की वर्तमान समस्या के सुलझने की आशा दिखाई पड़ती थी। वे गुजरात प्रान्त में इसी उद्योग में जुटे रहे। उस दशा में, जब कि प्रायः देश भर में असहयोग-आन्दोलन की प्रतिक्रिया की लहर उमड़ रही थी और हिन्दू-मुसलमान आपस ही में एक-दूसरे के सर फोड़ने में लग रहे थे, वल्लभभाई अपने पथ से तनिक भी विचलित न हुए और निरन्तर अपने उद्योग में लगे रहे।

उस समय वल्लभभाई ही राष्ट्रीय-गुजरात के एकमात्र कर्णधार थे। इन्हीं दिनों उन्होंने ब्रह्मा की यात्रा की और गुजरात-विद्यापीठ के लिए १० लाख रुपए इकट्ठे करके लाए। असहयोग आन्दोलन में वल्लभभाई ने देश के लिए जो त्याग और सेवाएँ कीं, उन्हें देश कभी भुला नहीं सकता। स्वतन्त्र भारत के इतिहास में उनके ऐसे कार्य-दक्ष योद्धाओं की अमर-कृतियाँ बड़ा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेंगी।

## पूर्ण स्वतन्त्रता

लाहौर-काँङ्ग्रेस के बाद देश में पूर्ण स्वतन्त्रता का आन्दोलन बढ़ने लगा। युवक-दल तो बहुत पहले ही से इधर अग्रसर हो रहा था। राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू और श्री० सुभाषचन्द्र बोस बहुत पहले से युवकों के द्वारा देश को समझाते आ रहे थे, कि ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर स्वराज्य का स्वप्न देखना केवल ढकोसला है। सरकार से निराश होकर, लाहौर-काँङ्ग्रेस से तो महात्मा गाँधी और पण्डित मोतीलाल नेहरू ने भी पूर्ण स्वतन्त्रता की आवाज़ बुलन्द की। महात्मा गाँधी ने सरकार को चेतावनी दी कि यदि सरकार देश की माँगें पूरी न करेगी, तो सत्याग्रह-आन्दोलन का सूत्रपात होगा। परन्तु सरकार के ऊपर महात्मा जी की चेतावनी का कोई असर नहीं पड़ा। वह सदा की तरह इस बार भी चुपचाप कान में तेल डाले बैठी रही। महात्मा गाँधी ने नमक-सत्याग्रह की तैयारी आरम्भ कर दी। १२ मार्च, सन् १९३० को ७८ स्वयंसेवकों के साथ महात्मा गाँधी साबरमती-आश्रम से डाँडी में नमक-क़ानून तोड़ने के लिए रवाना हुए। सरदार वल्लभभाई अपने उसी पवित्र क्षेत्र बारदोली के मैदान में डटे हुए अपना काम कर रहे थे।

७ मार्च, सन् १९३० को सरदार वल्लभभाई बोरसद ताल्लुक़े के रासगाँव में एक भाषण देने गए। वहाँ पहुँचने पर ज़िला-मैजिस्ट्रेट का उन्हें एक ऑर्डर मिला। उसमें भाषण देने की मनाही की गई थी। सरदार ने मैजिस्ट्रेट की आज्ञा भङ्ग कर भाषण दिया, इसलिए वे गिरफ़्तार कर लिए गए। इसी अपराध में सरदार को ३ महीने की क़ैद और ५०० रुपए जुर्माने की सज़ा दे दी गई। जुर्माना न देने के कारण उन्हें ३ सप्ताह तक और जेल में रहना पड़ा। वे साबरमती जेल में रक्खे गए। जेल में सरदार वल्लभभाई को बड़ा कष्ट सहना पड़ा। कहते हैं, कि उन्हें वहाँ पाँच पैसे रोज़ की ख़ुराक पर रहना पड़ता था। जेल की अवधि पूरी होने पर सरदार वल्लभभाई २६ जून को छोड़ दिए गए। जेल में उनका वज़न १५ पौण्ड कम हो गया।

जेल से छूटने पर देश में सरदार वल्लभभाई का बड़ी धूमधाम से स्वागत हुआ। बाहर आकर उन्होंने देश को सत्याग्रह आन्दोलन में व्यस्त देखा। महात्मा गाँधी, राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू तथा अगणित सत्याग्रही स्वयंसेवक जेल में बन्द किए जा चुके थे। इस आन्दोलन की आग की लपटें दूर-दूर तक फैल चुकी थीं। यह दशा देख कर सरदार का हृदय बल्लियों उछलने लगा। एक योद्धा को और क्या चाहिए? चारों ओर घात-प्रतिघात की जलती हुई आग की लपटों में घुस कर अपने कठोर कर्तव्य का पालन करना ही एक योद्धा के जीवन का उच्चतम उद्देश्य है। सरदार बड़ी तत्परता से लड़ाई में जुट गए। महात्मा गाँधी ऐसे रण-कुशल सेनापति की अनुपस्थिति में उनका जेल से बाहर आ जाना देश के लिए सौभाग्य की बात थी।

इधर सरकार ने काँङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया और राष्ट्रपति पण्डित मोतीलाल नेहरू, डॉक्टर महमूद आदि नेताओं को गिरफ़्तार करके जेल में बन्द कर दिया। जेल-यात्रा करते समय पण्डित मोतीलाल जी ने राष्ट्रपति के आसन पर सरदार वल्लभभाई पटेल को बैठा दिया। इस सर्वोच्च आसन पर बैठ कर तो सरदार ने दूने उत्साह से राष्ट्रीय युद्ध का सञ्चालन किया। उनके नेतृत्व में धरसाना और बडाला के मोर्चों पर सत्याग्रही स्वयंसेवकों ने जिस वीरता और साहस के साथ लड़ाई लड़ी, वह घटना भारत के इतिहास में सचमुच बड़ा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी। सैकड़ों स्वयंसेवकों और देवियों ने पुलिस की लाठियों की मार अपने सीने खोल कर सहन की। उस वीरता को देख कर सत्ताधिकारियों की क्रूरता और पशुता भी ठिठक कर रह गई। सरदार पटेल को तिलक-दिवस पर सत्याग्रह करने के कारण दुबारा जेल की सज़ा दी गई थी। परन्तु वे उन देशभक्तों में से हैं, जिन्हें जेलें क्या, संसार की कोई शक्ति अपने सिद्धान्त से टस से मस नहीं कर सकती। जेल से छूटते ही उन्होंने फिर अपना कार्य द्विगुणित उत्साह से प्रारम्भ कर दिया, और आज महात्मा गाँधी के साथ वे जो कार्य कर रहे हैं, वह किसी से छिपा नहीं है।

यदि सरदार पटेल को स्वतन्त्रता के युद्ध का शिवाजी कहा जाय, तो अत्युक्ति न होगी। वर्तमान शासन-प्रणाली की सत्ता मटियामेट करने के लिए उन्होंने किसानों का जो सङ्गठन किया और उन्हें जिस प्रकार युद्ध में अग्रसर किया, वह भारत के स्वतन्त्रता के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। सरदार वास्तव में 'किसानों के राजा' हैं। उनकी सेवाओं को स्वीकार कर देश ने उन्हें राष्ट्रपति बना कर उनके हाथों में अपनी नौका की पतवार सौंप दी है। उनके नेतृत्व में देश भर के किसान भावी-युद्ध में दसगुने उत्साह से भाग लेंगे। हम अपने नए राष्ट्रपति का हृदय से स्वागत करते हैं।

* * *

## स्वतन्त्रता

[ श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव ]

अस्त सूर्य के सदृश राष्ट्र है,<br>
जिसके बिना नहीं भाता,<br>
जिसे विनय से और याचना<br>
से वह कभी नहीं पाता,<br>
राष्ट्रों के हृदयों के भीतर<br>
छिपी हुई जो रहती है,<br>
जो उनके गुरु-तन के नस-नस—<br>
में बिजली सी बहती है,

पूजो उसको भक्ति, शान्ति से—<br>
आज सभी भारत के लाल,<br>
अपने मन के आत्मिक बल का<br>
परिचय दो जग को इस काल !

केवल जिसके कारण होता,<br>
राष्ट्रों का है उन्नत भाल।<br>
जिसकी रक्षा करती केवल<br>
निर्भयता की दृढ़ करवाल॥<br>
केवल जो लाती राष्ट्रों में<br>
उन्नतिशील शान्ति अभिराम ;<br>
राष्ट्रों के समूह में है जो—<br>
कर सकती राष्ट्रों का नाम॥

पूजो उसको भक्ति, शान्ति से<br>
आज सभी भारत के लाल,<br>
अपने मन के आत्मिक बल का<br>
परिचय दो जग को इस काल !!

जो ला सकती है राष्ट्रों में<br>
स्वर्ग सम्पदाएँ सारी।<br>
काम करा सकती है उनसे—<br>
जो भारी से भी भारी॥<br>
जो कि बना सकती है उनको,<br>
निज चरमोन्नति-व्रतधारी।<br>
जो दे सकती शक्ति उन्हें फिर,<br>
बनने की जग-हितकारी,

पूजो उसको भक्ति, शान्ति से<br>
आज सभी भारत के लाल,<br>
अपने मन के आत्मिक बल का<br>
परिचय दो जग को इस काल !!

## लाखों मोती हैं, मगर उस आब का मोती नहीं !

[ कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी ]

आज गुलज़ारे[1] जहाँ में, है खिज़ाँ आई हुई,
आज है मख़लूक़[2] मग़मूम[3], और तड़पाई हुई !
आज है अनदोहो[4] हिरमाँ की घटा छाई हुई,
आज है बेढब कली हर दिल की कुम्हलाई हुई !
　पत्ती-पत्ती, डाली-डाली, सर झुकाए ग़म में है;
　एक-दो का ज़िक्र क्या, सारा चमन मातम में है!

देखते ही देखते, बदला है मैख़ाने[5] का रङ्ग,
पीने वालों में कहाँ मस्ती, कहाँ अगली उमङ्ग ?
साग़रो[6] ख़ुम[7] दम बख़ुद, बिगड़े हुए महफ़िल के रङ्ग,
मिट गया वह लुत्फ़ेरिन्दी[8], चल बसी सारी तरङ्ग
　जाम[9] में बाक़ी नहीं मै[10] सिर्फ़ ख़ाली जाम है,
　और मोतीलाल-से साक़ी[11] का लब पर नाम है!

जब नहीं साक़ी, तो लुत्फ़े अञ्जुमन[12] हासिल नहीं,
दिल ही दिल है सिर्फ़, कोई आरज़ूए-दिल नहीं !
हल किसी सूरत से हो जाए यह वह मुश्किल नहीं,
अहले-महफ़िल की नज़र में, बानिए-महफ़िल नहीं!
　ग़ैर मुमकिन है, कि आ जाए कभी वह होश में,
　सो रहा है चैन से, जो मौत की आग़ोश[13] में !

मिल नहीं सकता कोई लीडर हमें इस आन का,
कोई रहबर,[14] कोई ग़मख़्वार, इस निराली शान का!
क़ाल का पूरा था वह, पक्का बहुत था ध्यान का,
देश की धुन में दिखाया करतब अपनी तान का,
　बादशाही छोड़ दी, उसने चमन के वास्ते !
　और पीरी[15] में फ़क़ीरी ली वतन के वास्ते !

काम करने वाले जो हों, काम करना सीख जायँ,
पाँव मैदाने-सियासत[16] में वह धरना सीख जायँ,
यूँ निडर होकर हरीफ़ों[17] से न डरना सीख जायँ
देश पर मरना किसे कहते हैं, मरना सीख जायँ !
जान जोखों ख़ल्क़[18] में था काम मोतीलाल का,
रहती दुनिया तक रहेगा नाम मोतीलाल का !

बाँकपन के साथ थी, हर आन मोतीलाल की,
वह समुन्दर पार आली शान मोतीलाल की !
दौलते दुनिया रही मेहमान मोतीलाल की,
देश-सेवा के लिए थी जान मोतीलाल की !
　यूँ तो दुनिया के समुन्दर में कमी होती नहीं,
　लाखों मोती हैं मगर, उस आब का मोती नहीं!

१—बाग़, २—जनता, ३—दुखी, ४—रञ्ज, ५—शराबख़ाना, ६—प्याला, ७—मटका, ८—पीने का मज़ा, ९—प्याला, १०—शराब, ११—पिलाने वाला, १२—सभा, १३—गोद, १४—रास्ता दिखाने वाला, १५—बुढ़ापा, १६—राष्ट्रीयता, १७—बैरियों, १८—संसार ।

## राष्ट्रीय महासभा की अधिवेशन-सूची

| स्थान | सन् | प्रतिनिधि-संख्या | सभापति |
|---|---|---|---|
| १—बम्बई | १८८५ | ७२ | श्री० उमेशचन्द्र बैनर्जी |
| २—कलकत्ता | १८८६ | ४३६ | श्री० दादाभाई नौरोजी |
| ३—मद्रास | १८८७ | ६०७ | श्री० बदरुद्दीन तय्यब जी |
| ४—प्रयाग | १८८८ | १,२४८ | श्री० जॉर्ज वील |
| ५—बम्बई | १८८९ | १,८८९ | श्री० सर विलियम वेडरवर्न |
| ६—कलकत्ता | १८९० | ६७७ | श्री० फ़ीरोज़शाह मेहता |
| ७—नागपुर | १८९१ | ८१२ | श्री० आनन्द चार्लू |
| ८—प्रयाग | १८९२ | ६२५ | श्री० उमेशचन्द्र बैनर्जी |
| ९—लाहौर | १८९३ | ८६७ | श्री० दादाभाई नौरोजी |
| १०—मद्रास | १८९४ | ११६ | श्री० मि० वेब |
| ११—पूना | १८९५ | १,५८६ | श्री० सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी |
| १२—कलकत्ता | १८९६ | ७८४ | श्री० मु० रहमतुल्ला सयानी |
| १३—अमरावती | १८९७ | ६९४ | श्री० शङ्करन नायर |
| १४—मद्रास | १८९८ | ६१३ | श्री० आनन्दमोहन बोस |
| १५—लखनऊ | १८९९ | १,३९४ | श्री० रमेशचन्द्र दत्त |
| १६—लाहौर | १९०० | ५६७ | श्री० नारायण चन्द्रवरकर |
| १७—कलकत्ता | १९०१ | ८९६ | श्री० दीनशाह वाचा |
| १८—अहमदाबाद | १९०२ | ४१७ | श्री० सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी |
| १९—मद्रास | १९०३ | ५३८ | श्री० लालमोहन घोष |
| २०—बम्बई | १९०४ | १,०१० | श्री० सर हेनरी कॉटन |
| २१—काशी | १९०५ | ७५८ | श्री० गोपाल कृष्ण गोखले |
| २२—कलकत्ता | १९०६ | १,६६३ | श्री० दादाभाई नौरोजी |
| २३—{ सूरत | १९०७ | १,३०० | श्री० रासबिहारी घोष } |
| मद्रास | १९०८ | ६२६ | श्री० रासबिहारी घोष } |
| २४—लहौर | १९०९ | २४३ | श्री० मदनमोहन मालवीय |
| २५—प्रयाग | १९१० | ६३६ | श्री० सर विलियम वेडरवर्न |
| २६—कलकत्ता | १९११ | ४४६ | श्री० विशननारायण दर |
| २७—पटना | १९१२ | २०७ | श्री० आर० एम० मुधोलकर |
| २८—कराची | १९१३ | ५५० | श्री० नवाब सय्यद महमूद |
| २९—मद्रास | १९१४ | ८६६ | श्री० भूपेन्द्रनाथ बोस |
| ३०—बम्बई | १९१५ | ... | श्री० सर एस० पी० सिंह |
| ३१—लखनऊ | १९१६ | ... | श्री० अम्बिकाचरण मजुमदार |
| ३२—कलकत्ता | १९१७ | ४,९६७ | श्री० एनी बीसेण्ट |
| विशेष—बम्बई | १९१८ | ४,९६७ | श्री० सय्यद हसन इमाम |
| ३३—दिल्ली | १९१८ | ४,८६९ | श्री० मदनमोहन मालवीय |
| ३४—अमृतसर | १९१९ | ... | श्री० पं० मोतीलाल नेहरू |
| विशेष—कलकत्ता | १९२० | ... | श्री० लाला लाजपतराय |
| ३५—नागपुर | १९२० | ... | श्री० विजय राघवाचार्य |
| ३६—अहमदाबाद | १९२१ | ४,७२६ | श्री० हकीम अजमल ख़ाँ |
| ३७—गया | १९२२ | ... | श्री० सी० आर० दास |
| ३८—कोकनद | १९२३ | ... | श्री० मुहम्मद अली |
| विशेष—दिल्ली | १९२३ | ... | श्री० अब्दुल कलाम आज़ाद |
| ३९—बेलगाँव | १९२४ | ... | श्री० महात्मा गाँधी |
| ४०—कानपूर | १९२५ | ३,१६२ | श्री० सरोजिनी नायडू |
| ४१—गोहाटी | १९२६ | ... | श्री० श्रीनिवास आयङ्गर |
| ४२—मद्रास | १९२७ | २,६९४ | श्री० डॉ० अन्सारी |
| ४३—कलकत्ता | १९२८ | ... | श्री० पं० मोतीलाल नेहरू |
| ४४—लाहौर | १९२९ | ... | श्री० पं० जवाहरलाल नेहरू |
| ४५—कराची | १९३१ | ... | श्री० सरदार वल्लभभाई पटेल |

क्या सबा[19] उड़ कर ख़बर लाई इलाहाबाद में
मुरदनी-सी सब पे क्यों छाई इलाहाबाद में
जमा हैं किस के तमन्नाई[20] इलाहाबाद में
लखनऊ से किसकी लाश आई इलाहाबाद में ?
　ले गए थे बहरे दरमाँ[21] सब उसे परदेस में,
　मौत आ पहुँची वहाँ भी ज़िन्दगी के भेस में!

१९—हवा, २०—चाहने वाले, २१—दवा के वास्ते,

सब से अहले-वतन को काम लेना चाहिए,
दरसे[22] इबरत[23] इनको सुबहो शाम लेना चाहिए,
रात-दिन परमात्मा का नाम लेना चाहिए,
रूहे मोती लाल से इनआम लेना चाहिए !
सबहैं बिस्मिल हर तरफ़ "बिस्मिल" मचा कुहराम है,
कहते हैं मरना जिसे, जीने का वह अनजाम है !

२२—सबक़, २३—शिक्षा ।

# सीमा-प्रान्त के "गाँधी" और उनका सङ्गठन
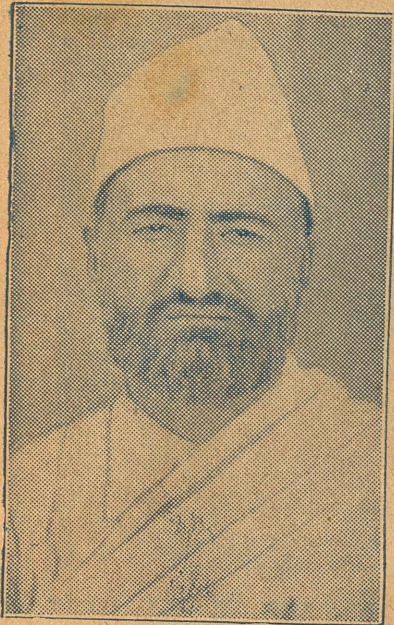
सीमा प्रान्त के 'गाँधी'—श्री० अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ, जो अभी जेल से छूटे हैं।

चारसद्दा (सीमा प्रान्त) के राष्ट्रीय नेताओं सहित श्री० अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ।

**पेशावर के पठान नेताओं सहित—**
**श्री० अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ**

बाईं ओर से बैठे हुए—श्री० ख़ाँ अब्दुल अम्बर ख़ाँ, श्री० सय्यद लाल बादशाह, लाहौर के राष्ट्रीय पञ्जाबी नेता—श्री० के० सान्तनम, श्री० ख़ाँ अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ और श्री० ख़ान अलीगुल ख़ाँ।

पाठकों को स्मरण होगा, अभी हाल ही में श्री० अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ साहब ने फ़र्माया है, कि आगामी राष्ट्रीय युद्ध में, जब कभी ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हुई, तो वे अहिंसात्मक युद्ध के लिए एक लाख ख़ुदाई-ख़िदमतगार भेंट करेंगे।

वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर अपने अनुयायियों (ख़ुदाई ख़िदमतगारों) सहित सीमा प्रान्त के 'गाँधी'—श्री० अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ
[आप ही बीच में शुद्ध खादी की पोशाक में खड़े हैं]

# 'भविष्य' को कराची-कॉङ्ग्रेस सम्बन्धी चित्रावली का एक पृष्ठ

श्री० जयरामदास दौलतराम—कॉङ्ग्रेस-वर्किङ्ग-कमिटी के अन्यतम-सदस्य और कराची कॉङ्ग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता।
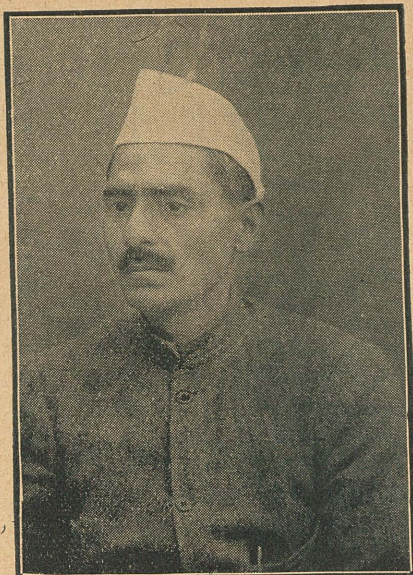
डॉ० चैतराम पी० गिडवानी—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी-समिति के सभापति।

लाला यशवन्तराय चूड़ामणि—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी-समिति के अन्यतम उप-सभापति।

कराची-कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी-समिति का कार्यालय।

डॉ० ताराचन्द जे० लालवानी, एम० बी०-बी० एस०—कराची कॉङ्ग्रेस कमिटी के अन्यतम जनरल सेक्रेटरी।

श्री० राम बी० गोटवानी—आप कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के अन्यतम सेक्रेटरी और सिन्ध प्रान्त के प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ता हैं।

श्री० आर० के० सिधवा—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी-समिति के अन्यतम जनरल सेक्रेटरी।

# 'भविष्य' की कराची-कॉङ्ग्रेस सम्बन्धी चित्रावली का एक पृष्ठ

आचार्य ए० टी० गिडवानी, एम० ए०—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के अन्यतम उप-सभापति।

श्री० नारायणदास आनन्दजी बेचर—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के अन्यतम उप-सभापति।
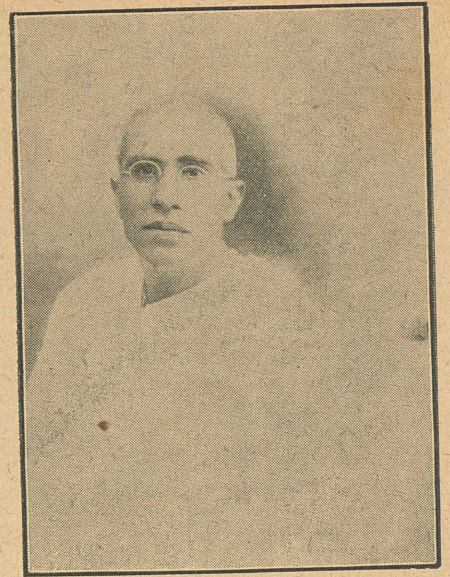
स्वामी गोविन्दानन्द जी—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के अन्यतम उप-सभापति।

श्री० मणिलाल जी व्यास—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के उप-सभापति।

सेठ हरिदास लाल जी—कराची कॉङ्ग्रेस स्वागतकारिणी समिति के अन्यतम उप-सभापति।
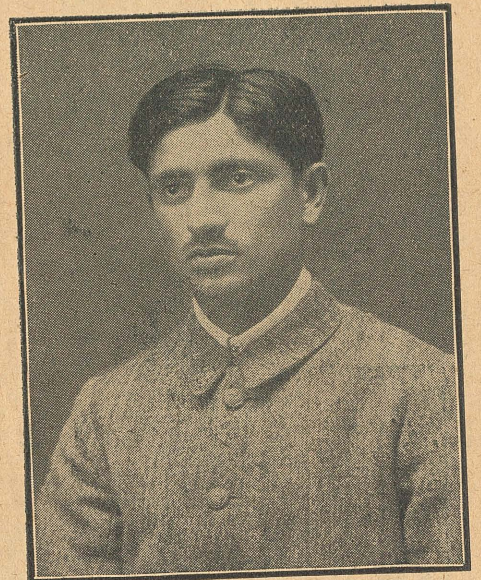
सेठ मूल जी विसराम नर्सी—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के अन्यतम सेक्रेटरी।
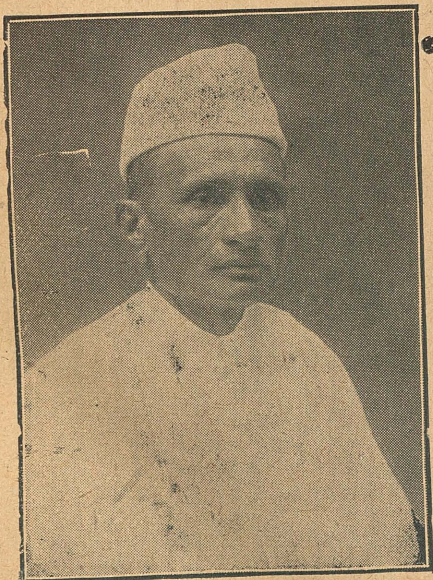
सेठ लालचन्द पानाचन्द—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के अन्यतम कोषाध्यक्ष।
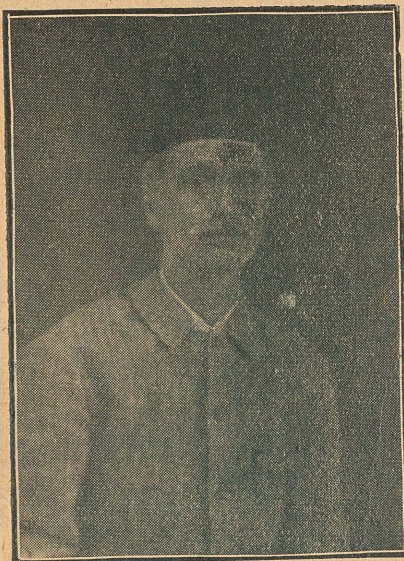
श्री० दुर्गादास अडवानी—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के आप प्रमुख कार्य-कर्ता हैं। आप की ही देखरेख में कराची कॉङ्ग्रेस का सभा-भवन बना है।

सेठ ईसरदास वारानमल—कराची कॉङ्ग्रेस की स्वागतकारिणी समिति के अन्यतम कोषाध्यक्ष।

# देश और विदेश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

अमेरिका का भारतीय कॉङ्ग्रेस की अध्यक्षता में मनाया जाने वाला 'स्वतन्त्रता-दिवस' (१९३०) के प्रीतिभोज का दृश्य—जिसमें डॉक्टर सण्डरलैण्ड आदि सैकड़ों सुप्रसिद्ध अमेरिकन शरीक हुए थे।

अमेरिका-स्थित भारतीय कॉङ्ग्रेस के प्रधान—श्री० रामलाल बालाराम वाजपेयी।

उज्जैन के सुप्रसिद्ध सेठ सौभाग्यचन्द्र म्होणोत की पुत्र-वधू—श्रीमती सजनकुमारी म्होणोत, जिन्हें विदेशी वस्त्रों की दूकान पर धरना देने के कारण जेल-दण्ड मिला था।

अमेरिका-स्थित भारतीय कॉङ्ग्रेस के प्राण और सुप्रसिद्ध देश-भक्त बाबू शैलेन्द्रनाथ घोष।

[ अमेरिका से श्रीमती रागिनी देवी द्वारा भेजे हुए 'भविष्य' के ख़ास चित्र ]

शाहाबाद ( बिहार ) ज़िले की प्रथम सत्याग्रही-महिला—श्रीमती कुसुमकुमारी देवी। आप ही ने २६ वीं जनवरी को आरा में राष्ट्रीय झण्डा फहराया था।

स्वर्गीय पं० मोतीलाल के श्राद्ध-दिवस पर गाणिडया ( मध्य प्रान्त ) में श्रीमती राधाबाई पोफ़ली की अध्यक्षता में निकलने वाले जुलूस का दृश्य।

तेग़ हाज़िर, आप भी आमादा, दिल भी बेक़रार,
अब मेरी मुश्किल की आसानी, कोई मुश्किल नहीं '
शम्आ से मह फ़ल में परवाने ने यूँ जल कर कहा.
आशिक़ों का खेल जाना जान पर मुश्किल नहीं ।

इश्क़ में दरपेश है अब मरने-जीने का सवाल,
यह मुझे मुश्किल हो शायद, वह मुझे मुश्किल नहीं!
तेग़[1] हाज़िर, आप भी आमादा, दिल भी बेक़रार,
अब मेरी मुश्किल की आसानी, कोई मुश्किल नहीं!
आप इसको जानते हैं "नूह" मेरा नाम है ?
अपने दुशमन का डुबो देना मुझे मुश्किल नहीं !

—"नूह" नारवी

क्या यह कहते हो, तेरा दिल इश्क़ के क़ाबिल नहीं
बाँधलो हिम्मत तो फिर मरना भी कुछ मुश्किल नहीं!

—"एहसान" बाँदवी

शम्आ[2] से महफ़िल में परवाने ने यूँ जल कर कहा,
आशिक़ों का खेल जाना जान पर मुश्किल नहीं ।

—"अख़्तर" मुसवाबी

मेरी आसानी की तदबीरें बहुत आसान हैं,
तुम अगर चाहो तो यह मुश्किल, कोई मुश्किल नहीं!

—"अख़्तर" नागपुरी

लो यह कहते हैं मेरी आहे रसा के हौसले,
अर्श[3] आज़म का हिला देना कोई मुश्किल नहीं

—"इस्माईल" बम्बई

जाँ फ़िदा करना समझता था मैं मुश्किल आप पर,
लेकिन अब यह काम भी मेरे लिए मुश्किल नहीं

—"अज़्वी" निज़ामी

इश्क़ में यह हाल मेरा है, कि मेरे वास्ते—
ज़ब्त भी मुश्किल नहीं, फ़रियाद भी मुश्किल नहीं !

—"हामिद" अज़ीमाबादी

कुल्फ़तें[4] बर्दाश्त कीं, जितनी थीं राहे-इश्क़ में !
अब यह रोना है कि मुश्किल भी कोई मुश्किल नहीं।

—"हबीब" बरारी

मुख़तसिर रूदाद[5] यह अपने सितम की जानिए
जान दे देना मेरे नज़दीक कुछ मुश्किल नहीं !

—"ख़लीक़" फ़ैज़ाबादी

शाकिरे-तक़दीर हों कुञ्जे क़फ़स[6] में शादमाँ[7]
गो क़फ़स की तीलियों का तोड़ना मुश्किल नहीं !

—"साग़र" अकबराबादी

दिल में सब कुछ है मगर इज़हार के क़ाबिल नहीं,
दूसरा दिल है हमारा उक़दए[8] मुश्किल नहीं!
एक सदा कुञ्जे-क़फ़स से आई और तड़पा गई,
कोई कहता था रिहा होना, मेरा मुश्किल नहीं

—"सीमाब" अकबराबादी

तुझसे दम आँखों में आकर रह गया ऐ शौक़ेदीद
वरना मरना क्या है, मरना तो कोई मुश्किल नहीं

—"इनायत" बरारी

जब कहा मैंने कि फ़ुरक़त[9] में हुआ जीना मोहाल,
बोले मरना तो बहुत आसान है, मुश्किल नहीं!

—"फ़ातेह" मयाँवाली

इश्क़ में मर-मर के जीना है कमाले ज़िन्दगी
वरना मरने को तो मर जाना, कोई मुश्किल नहीं

—"मुज़्तर" बदनेरा

कारे-हिम्मत जान देना इश्क़ में ऐ दिल नहीं,
ज़िन्दगी मुश्किल है, मर जाना तो कुछ मुश्किल नहीं

—"नातिक़" गुलावटी

जब खिंची तेग़े तवस्सुम[10] हँस के ज़ख़्मों ने कहा
सुर्ख़रू होना हमारा, अब कोई मुश्किल नहीं !

—"नईम" खाण्डवी

कीजिए मुझको कभी तेग़े-तवस्सुम से हलाक,
काम यह आसान है, यह काम कुछ मुश्किल नहीं

—"यावर" बरारी

१—तलवार, २—दीपक ३—आकाश, ४ तकलीफ़, ५—कहानी, ६—पिंजड़ा ७—ख़ुश ८—गिरह, ९—विरह, १०—हँसी,

आप हैं मुश्किलकुशा तो फिर मुझे मुश्किल है क्या
आपके होते हुए मुश्किल, मुझे मुश्किल नहीं

—"यूसुफ़" बरारी

ऐ 'असर' अल्लाह से मुझको मदद दरकार है
सहल कर देना उसे मुश्किल का कुछ मुश्किल नहीं

—"असर" बयापूरी

सुनलो एक दिन "अख़्तरे"-ख़सताके दिलकी आरज़ू
इतने ही अरमान हैं, चाहो तो कुछ मुश्किल नहीं

—"अख़्तर" मुज़फ़्फ़रपुरी

तायराने[11] पर शिकसता में अगर है इत्तेफ़ाक़,
दूर करना बाग़ से सय्याद का मुश्किल नहीं !

—"बाँके" देहरादूनी

जो न देखा था ग़प वह देखेंगी,
दिल के कहने में आ गईं आँखें !

क्यों चुराते हो देख कर आँखें ?
कर चुकीं मेरे दिल में घर आँखें ।
ज़ोफ़[12] से कुछ नज़र नहीं आता,
कर रही हैं डगर-डगर आँखें !
चश्मे-नरगिस को देख लें फिर हम,
तुम दिखादो जो एक नज़र आँखें !
है दवा इनकी आतिशे[13] रुख़सार[14],
सेंकते हैं उस आग पर आँखें ।
कोई आसान है तेरा दीदार,
पहले बनवाए तो बशर[15] आँखें ।
जलवए-यार की न ताब हुई,
टूट आई हैं किस क़दर आँखें ।
दिल को तो घूँट-घूँट कर रक्खा,
मानतीं ही नहीं मगर आँखें !
न गई ताक-झाँक की आदत,
लिए फिरती हैं दर-बदर आँखें !
क्या यह जादू भरा, न था काजल,
सुर्ख़ करलीं जो पोंछ कर आँखें ?
यह निराला है शर्म का अन्दाज़,
बात करते हो ढाँक कर आँखें !
ख़ाक पर क्यों हो नक़्शे-पा[16] तेरा
हम बिछाएँ ज़मीन पर आँखें !
नवहागर[17] कौन है मुक़द्दर[18] पर,
रोने वालों में हैं मगर आँखें ।
यही रोना है गर शबे-ग़म का,
फूट जाएँगी ता-सहर[19] आँखें !
हाले-दिल देखना नहीं आता,
दिन को बनवाएँ चारागर आँखें ।

११—पक्षियों पर, १२—कमज़ोर, १३—आग, १४—चेहरा १५—आदमी, १६—पैर, १७ रोने वाला, १८ क़िस्मत, १९ सुबह,

"दाग़" आँखें निकालते हैं वह,
उनको दे दो निकाल कर आँखें ।

—"दाग़" देहलवी

हमको क्या कुछ दिखा गईं आँखें,
इस क़दर रोए, आ गईं आँखें !
हुस्न की शह जो पा गईं आँखें,
तेरी आँखें चुरा गईं आँखें !
हाय वह शर्म, वह हया, वह हिजाब,
मैंने छेड़ा लजा गईं आँखें ।
जो न देखा था ग़म वह देखेंगी,
दिल के कहने में आ गईं आँखें !
क्यों न अब देख लें नज़र भर कर,
तुमको मौक़े से पा गईं आँखें ।
जिनसे लुत्फ़ो करम[20] की थी उम्मीद
वही आँख दिखा गईं आँखें !!
हो गया नाम आँसुओं का मगर,
ख़ूने-दिल में नहा गईं आँखें
रात भर जागना पड़ा हमको,
वह न आए, तो आ गईं आँखें !
ज़ब्ते सैलाबे[21] ग़म भी करने पर,
"नूह" तूफ़ान उठा गईं आँखें !

—"नूह" नारवी

उस हसीं को जा पा गईं आँखें,
लुत्फ़ क्या-क्या उठा गईं आँखें !
चार आँखें हुईं जो ज़ालिम से,
दिल पे बिजली गिरा गईं आँखें !
लाख परदों में वह छुपे जाकर,
लेकिन इस पर भी पा गईं आँखें !
मर गया, मर मिटा दिले मुज़्तर[22],
आँखों आँखों में खा गईं आँखें !
मेरे दिल में, जिगर में, सीने में,
अब तुम्हारी समा गईं आँखें ।
लाख परदों में वह छुपे जाकर,
लेकिन इस पर भी पा गईं आँखें ।
अह्दे-तिफ़ली[23] से अह्दे-पीरी[24] तक,
एक दुनिया दिखा गईं आँखें ।
वाह रे उनका हुस्ने आलम ताब,
देखना था, कि आ गईं आँखें !
देख लेना ग़ज़ब हुआ "बिस्मिल"
दिल में उनकी समा गईं आँखें !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२०—कृपा, २१—बाढ़, २२—बेचैन, २३—बचपन का ज़माना, २४—बुढ़ापे का ज़माना ।

## वीरबाला

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता ? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए ; इसका आद्यन्त वर्णन इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूटनीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य ४) ; स्थायी ग्राहकों से ३)

## निर्मला

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं ; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं ; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं। किस प्रकार उद्‌भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है।

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

"दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है,
लाख दो लाख में बस एक है लम्बी दाढ़ी॥"

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र।

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम हास्यरस-पूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है, जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ॥); केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

**व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद**

[ श्री० 'बघेल' ]

क्रान्ति का स्वागत करने का साहस आज तक किसी ने नहीं दिखलाया। कौन चाहेगा उसे—खून की विकराल धारा, मृतकों का भीषण चीत्कार, जीवन की निकृष्ट आहुति, हज़ारों का बलिदान, लाखों के लिए वैधव्य और सन्तान-हीनता का कारुणिक-दृश्य ! कौन इसका स्वागत करेगा ?

लेकिन, वह आती है, जब उसे आना होता है। संसार की कोई शक्ति—कोई प्रतिबन्ध उसे रोक नहीं सकता। एक बहाना मिला और क्रान्ति की आग धायँ-धायँ जलने लगी—प्रलय का प्रारम्भ हो गया। एक दिन प्रातःकाल कुएँ पर मङ्गल पाँड़े एक सिपाही से झगड़ पड़ा और उसी चिनगारी से सन् ५७ का सिपाही-विद्रोह हो गया। उसे आना था, आया और अपनी समस्त भीषणता के साथ आया !

क्रान्ति आग है। आग में पापी भी जलता है, पुण्यात्मा भी। ईश्वर के दरबार में पक्षपात नहीं होता। क्रान्ति भी ईश्वरीय विधान है। उसकी भयङ्करता में अपराधी और निरपराधी—सभी को समानता से पिस जाना पड़ता है।

फ्रान्स में रोटी वाला गोली से उड़ा दिया गया। क्योंकि उसने भूखे क्रान्तिकारियों को सस्ती या मुफ्त रोटियाँ न दी थीं। क्या वह अपराधी था ? नहीं, परन्तु उस आग की झोंक ने उसे भी झकझोर कर पीस डाला।

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति 'धू-धू' रव से चीत्कार कर रही थी। हज़ारों क्रान्तिकारी राजसत्ता की ओर से मृत्यु-चक्र में पीस दिए जाते थे। मानव-जीवन अधिकारियों के लिए एक खेल हो रहा था। जीवन का पाना कठिन था, परन्तु गँवाना सरल ! बहुत जाँच कर किसी का विश्वास किया जाता था। स्वयं अपने ही विश्वसनीय पदाधिकारी स्मिथ पर राज-सत्ता को अविश्वास हो गया। राजा ने—निरङ्कुश शासक ने—अपना अविश्वास प्रकट कर दिया। स्मिथ पदवी का मान और लालसा त्याग कर भाग गया।

स्मिथ वीर था, साहसी था और महान राजनीतिज्ञ था। वह साधारण किसान से प्रधान के पद पर पहुँचा था। सैनिक-रूप में उसने जो वीरता दिखाई थी, उसे फ्रान्स का राजनीतिक-मण्डल पूर्णतया जानता था और राजसत्ता का उस पर सब से अधिक विश्वास था। उसने पहिले शाहन्शाह को समझाया। परन्तु राजसत्ता अपनी क्रूरता में बहुत आगे बढ़ चुकी थी। स्मिथ उस बाढ़ को रोक न सका। परन्तु उसने राजा का साथ नहीं छोड़ा। कैसे छोड़ता ? उसने राजकीय विभाग से ४-५ वर्ष तक भोजन और अधिकार पाया था। उसने राजा का साथ देना अपना कर्तव्य समझा।

उसका एक नवयुवक बन्धु था रॉबर्टसन। अभी हाल ही में राजा का एक प्रधान, क्रान्तिकारियों द्वारा आहत हुआ, तब राजाज्ञा से स्मिथ ने उसे शासन और व्यवस्था के लिए पेरिस—क्रान्तियों के महान उपकेन्द्र में—भेजा था। रॉबर्टसन को क्रान्तिकारियों के बीच भेजने का अर्थ स्मिथ जानता था। तभी तो जब वह विदाई के लिए सामने आया तो स्मिथ रो पड़ा था !

रॉबर्टसन ने अपराधी युवक का पता लगा कर उसे न्यायालय या बधिकालय के सुपुर्द कर दिया था। परन्तु रॉबर्टसन अपने गले के नीचे गोली का ज़ख्म और दर्द लेकर लौटा था। और आह ! उसी से क्रान्ति का पहिला बलिदान—क्रान्तिकारियों के भीषण रक्त-पिपासी क्रूरता की पहिली आहुति का सम्पादन हुआ। उसने वीर की तरह मृत्यु का आलिङ्गन किया। परन्तु उस आहुति के बाद वही स्मिथ राजसत्ता की आँखों का काँटा हो गया। लिरोटा ने चुग़ली खाकर स्मिथ को राजकीय विश्वास से दूर—बहुत दूर—अन्धकार में ढकेल दिया।

लिरोटा एक अदम्य साहसी चीफ़ था। परन्तु वह विद्रोहियों को न दबा सका था, उनके सामने से जान लेकर भाग आया था। रॉबर्टसन ने उसकी रिपोर्ट की थी। परन्तु अन्त में रॉबर्टसन मार डाला गया। अतः लिरोटा ने स्मिथ को ही अपनी ईर्ष्याग्नि की आहुति बनाया।

ईर्ष्या ने एक वीर को कायर बना दिया ! लिरोटा ने स्मिथ की चुग़ली खाई।

स्मिथ की जगह लिरोटा प्रधान हुआ।

२

स्मिथ किसान से प्रधान हुआ था, अब वह फिर प्रधान से किसान बन गया !

स्मिथ वृद्धा और अशक्त था ; परन्तु कायर न था। उसे भी प्रजा-सत्ता की चिन्ता थी और वह आन्दोलन की ओर आशापूर्ण नेत्रों से देखता था। परन्तु क्रान्तिकारियों में शामिल होकर काम करने की शक्ति उसमें न थी, इसलिए वह कभी-कभी अत्यन्त व्याकुल हो उठता था। उसने क्रान्तिकारियों को दण्ड भी दिलाया था, इसलिए पश्चात्ताप की आग में उसका हृदय जलता था।

श्रीमती स्मिथ कहतीं—स्वामी ! इस आन्दोलन की प्रगति धीमी क्यों हो रही है ? क्या हमारा प्यारा जेम्स भी 'ग़ुलाम नागरिक' कहलाएगा ?

जेम्स उनका पुत्र था। बहुत सुन्दर, भोला और प्यारा।

स्मिथ उत्तर देता—नहीं जोरा, आन्दोलन ने बाह्य रूप त्याग कर आन्तरिक उन्नति के सम्पादन में अपनी शक्ति लगाना प्रारम्भ कर दिया है। यह आन्दोलन अब चरम सीमा पर पहुँच कर ही रहेगा। हमारा जेम्स अपने समय का स्वतन्त्र नागरिक होगा।

"यदि तब तक देश स्वतन्त्र न हुआ ?"

"तो जेम्स वीर की तरह इसी युद्ध में शामिल होगा ? तुम वीर-माता बनोगी।"

"क्या हमारी आँखें उसकी वीरता के कार्य देखने का सौभाग्य प्राप्त करेंगी ?"

"प्रिये ! धैर्य धारण करो। वह शीघ्र ही अपने कर्तव्य की ओर अग्रसर होगा। वह स्वतन्त्र नागरिक होकर ही रहेगा। यह मेरी दृढ़ धारणा है।

जोरा प्रसन्न हो जाती। वह भूल जाती थी अपने गत वैभव को—अपने पूर्ण समृद्ध और सुखी जीवन को !

यह उनकी तपस्या का युग था। मूल्यवान विलास-उपादानों की जगह कठोर संन्यास का सामना करना बड़ा कष्टकर होता है ; परन्तु जहाँ स्वतन्त्रता की भावना है, वहाँ कष्ट चुपचाप सिमट कर सन्तोष को सामग्री—वीरों का सुखमय खिलौना—बन जाता है !

क्रान्ति की धारा में शिथिलता देख कर राजसत्ता ने दमन-नीति को चरम-सीमा तक पहुँचा कर, उसे अच्छी तरह मटियामेट कर डालने का आयोजन किया। एक मृत्यु-चक्र (Death Wheel) का निर्माण किया गया। बड़ा विशाल था, वह मृत्यु-चक्र ! उसके चारों ओर लोहे के बड़े-बड़े तीक्ष्णधार काँटे लगे थे ! क्रान्तिकारी एक क़तार में खड़े किए जाते थे और एक के बाद एक उसी चक्र में डाल दिए जाते थे ! पहिले मानव-शरीर काँटों से क्षत-विक्षत होता था, फिर नीचे कुएँ में चक्र की गति से जाकर दो चक्रों के बीच छिप जाता था। इसके बाद दोनों चक्र अलग-अलग हो जाते थे और मृत शरीर लहू-लुहान होकर नीचे कुएँ में गिर पड़ता था !

इस क्रूर-कार्य—चक्र-सञ्चालन—का सम्पादन राजपुत्र को दिया गया था। वह इस अधिकार से अत्यन्त प्रसन्न था। क्योंकि उस समय श्रीसम्पन्न अधिकारियों को ऐसे क्रूर कर्मों में विशेष आनन्द मिलता था। यह उनके मनोरञ्जन की एक साधारण सामग्री थी। उफ़ ! वे मनुष्य थे या पिशाच ?

राजा के कोप से लिरोटा भी बच न सका। उसका भाई क्रान्तिकारी दल में शामिल हो गया था। राजा को इससे बड़ा क्रोध हुआ और लिरोटा को भ्रातृ-हत्या की आज्ञा दी गई। उसने साफ़ इन्कार कर दिया। लिरोटा को प्राण-दण्ड का हुक्म सुनाया गया !

स्मिथ की भी ज़ोरों से खोज हो रही थी। दोनों दल उसकी खोज में थे। राज-दल उसके लिए प्राण-दण्ड की व्यवस्था लेकर ढूँढ़ता था और क्रान्तिकारी दल उसकी पूजा की सामग्री लेकर उसके अनुसन्धान में था !

परन्तु स्मिथ राजधानी से दूर—अज्ञात स्थान में जीवन के अवशेष दिन बिता रहा था। वह दोनों दलों की पहुँच के बाहर चला गया था।

३

जेम्स 'क्रान्ति' का अर्थ समझने लगा था। अक्सर भागे हुए क्रान्तिकारी उसकी झोपड़ी में आश्रय लेने आते थे और कुछ दिनों के बाद पुनः अपने विकट कार्य के सम्पादन के लिए चल देते थे। क्रान्तिकारी उसे एक ग़रीब की कुटिया ही समझते थे—यह नहीं जानते थे कि स्वयं स्मिथ यहाँ वृद्ध-कृषक बन कर रहता है।

कुटी का रक्षक या प्रधान मालिक जेम्स ही था। वही वहाँ बराबर रहता था। क्योंकि माता-पिता तो अपना अधिकांश समय खेतों में ही बिताया करते थे।

* * *

प्रातःकालीन ठण्ढी वायु ने स्मिथ को जगा दिया था, वह अँगीठी के सामने आग ताप रहा था और अपनी पत्नी से बीज की उत्तमता की समालोचना कर रहा था। जोरा धीमे स्वर से पति की बातों का उत्तर दे रही थी।

"खड़ाक...धम! धम! धम!"

किवाड़ खुला और एक अस्त-व्यस्त पुरुष झोपड़ी के अन्दर घुस पड़ा।

जोरा सहम गई। स्मिथ खड़ा हो गया। फिर ज़ोर से चिल्ला कर उसने पूछा—तुम कौन हो? डाकू हो या फाँसी की आज्ञा सुनाने आए हो?

"................!"

आगन्तुक केवल हाँफ रहा था।

"अरे! तुम कौन हो?" स्मिथ ने फिर डाँटा—"राज-कर्मचारी, क्रान्तिकारी या लूट-मार करने वाले विश्वासघाती? बोलते क्यों नहीं?"

"मैं क्रान्तिकारी हूँ!"

आगन्तुक काँप रहा था।

"कौन? लिरोटा! अरे तुम कब से क्रान्तिकारी हुए? मुझे पहिचानते हो? मैं स्मिथ....."

"ओह! तुम स्मिथ हो। मैं तुम्हारा शत्रु हूँ। तुम मुझे क्या आश्रय दोगे? अच्छा स्मिथ, प्रणाम! मैं जाता हूँ।"

"कहाँ जाओगे लिरोटा? कब तक भागते फिरोगे? क्रान्तिकारी होकर भी तुम्हें जीवन का मोह बना ही है? अभी भी मुझसे डरते हो?"

लिरोटा सिर थाम कर बैठ गया। धीरे-धीरे कहने लगा—स्मिथ! तुम्हारे पद को पाने के लिए मैं कायर बना था, परन्तु आज जीवन का मोह लेकर यहाँ नहीं आया हूँ। सिर्फ़ आज भर के लिए आश्रय दो। मैं मरने के पूर्व कुछ कर जाना चाहता हूँ। मैं बड़ा नीच था न स्मिथ?

"नहीं, लिरोटा! समृद्धिवान होने की लालसा किसे नहीं होती? आज तुम मेरे वही भाई हो। यह तुम्हारी कुटिया है, जब तक चाहो, रह सकते हो। परन्तु तुम्हें इस तरह भागना क्यों पड़ा?"

"ओह! स्मिथ, आज मेरे प्राणदण्ड की व्यवस्था की गई थी। उस पिशाच-चक्र में मैं भी डाला जाने वाला था। ओह! बड़ा भीषण था, वह चक्र।

"......परन्तु मुझसे क्रान्तिकारी दल का उपमन्त्री मिल चुका था और वहाँ भी हम लोग एक षड्यन्त्र की तैयारी कर चुके थे। मुझे सफलता की आशा न थी।

"बध-स्थल में कम्पाउण्ड के बाहर शोर हुआ—'एक पागल भीतर घुस रहा है। देखो! रोको! बचाओ!' सचमुच एक विक्षिप्त पागल कठघरे के भीतर आ गया था। बधाध्यक्ष—राजपुत्र ने कहा—'आने दो! जैसे ७०० वैसे ७०१। उसे भी चक्र में झोंक दिया जायगा।' सन्नाटा हो गया, परन्तु वह विक्षिप्त मनुष्य चक्र की ओर बढ़ रहा था! राजपुत्र मुस्कुरा रहा था। मैं जीवन से निराश होता जा रहा था!

"पागल मेरे समीप आ गया। उसने मेरे हाथ में पिस्तौल दी। मैं समझ गया। मैंने राजपुत्र पर गोली चलाई और वह गिर पड़ा—क़यामत तक के लिए वहीं सो गया! मेरे पीछे ७०० क्रान्तिकारी बलिदान के लिए—क्रूर चक्र में पिसने के लिए खड़े थे। इन सात सौ मनुष्यों की प्राण-रक्षा हुई। हम लोग उपमन्त्री के सशस्त्र सेना की सहायता से भाग निकले।

"मुझे भी राजधानी छोड़ कर भाग जाना पड़ा। मेरा मृत्यु-वारण्ट निकल चुका है और जासूस मेरी खोज में लगे हैं।"

"अच्छा लिरोटा, तुम उस पयालों के ढेर में छिप जाओ। घर में जेम्स रहता है, वह तुम्हारे भोजन-पानी की व्यवस्था करेगा। उसे अपना सेवक समझना।"

"तो क्या आज मैं बच जाऊँगा?"

"हाँ-हाँ, तुम्हारा बाल भी बाँका न होगा।"

"मुझे तो विश्वास नहीं होता।"

"तुम घबड़ाए हुए हो—"

४

दो बजे वारण्ट-इन्स्पेक्टर और सात सिपाही उस जीर्ण-शीर्ण कुटीर में घुस गए। जेम्स बिल्ली के साथ खेलता-खेलता सो गया था। वारण्ट-इन्स्पेक्टर ने उसे जगाया।

जेम्स चौंक उठा—तुम लोग कौन हो? बाहर जाओ—बाबा घर में नहीं हैं।

"कहाँ गए हैं? लड़के!"

"मैं नहीं बताऊँगा। तुम लोग चले जाओ यहाँ से।"

इन्स्पेक्टर ने बालक को गोद में लेकर पुचकारा—तुम्हारा नाम क्या है बेटा!

"जेम्स!"

"जेम्स! बड़ा अच्छा नाम है। अच्छा जेम्स, यहाँ आज कोई आया है?"

"तुम्हें......?"

जेम्स गोद से उतर गया—मुझे नहीं मालूम। निकलो......!

इन्स्पेक्टर ने एक सिपाही की ओर देखा। सिपाही ने बच्चे को कुछ मिठाई दी और कुछ खिलौने दिए। बच्चा मिठाई खाने लगा और इन्स्पेक्टर की दाढ़ी से खेलने लगा। इन्स्पेक्टर ने ठहर कर कहा—और मिठाई लोगे? अच्छा, अभी और मँगाते हैं। वह आदमी कहाँ छिपा है? मिठाई ख़रीदना तो वही अच्छा जानता है......।

जेम्स फिर तमक कर इन्स्पेक्टर की गोद से उतर गया। बोला—मैं नहीं जानता, निकल जाओ मेरे घर से!

जेम्स बाँध दिया गया और घर की तलाशी ली गई। कोना-कोना छान डाला गया। लेकिन सब व्यर्थ हुआ।

इन्स्पेक्टर ने तमञ्चा निकाला और एक सुनहली घड़ी और जेम्स से बोला—"देखो, यदि कोई तुम्हें डरावे तो उसे इस तमञ्चे से मार देना। और सुनो, तुम्हारे बाप ने मुझे यहाँ भेजा है कि तुम्हें यह घड़ी दे दूँ और तुम उस आदमी को मुझे बता दो। मैं उसे कहीं अच्छी जगह छिपाऊँगा, लो यह घड़ी। अरे रक्खो।" बालक सोचने लगा—"यह घड़ी! 'टिक टिक!' कितनी सुन्दर है! उस आदमी की क़ीमत क्या इस घड़ी के बराबर होगी? नहीं! बाबा और माँ मेरे सुन्दर उपहार को देख कर प्रसन्न हो जाएँगे!"

लेकिन वह रुक गया; उसे कुछ भय-सा मालूम हुआ।

इन्स्पेक्टर ने देखा कि मृग चौकड़ी मार रहा है। बोला—जेम्स, मेरा विश्वास करो, बताओ वह कहाँ है?

बालक की आँखें पयाल के ढेर की ओर हो गईं। उसे बोलने या बतलाने को आवश्यकता न हुई। पयाल धुन डाला गया और बेचारा लिरोटा घसीट कर बाहर निकाला गया!

जेम्स की आँखें आशङ्का से डबडबा गईं।

* * *

जेम्स के उपहार की कथा सुन कर माँ के होश उड़ गए। वह सिर थाम कर रह गई। वह पति के क्रोध को जानती थी। वह उदास हो गई। उसे सामने अन्धकार ही अन्धकार दीख पड़ा। हाय! क्या होगा? अवश्य ही जेम्स को भयानक दण्ड...ओह! माता का कोमल हृदय काँप गया।

स्मिथ की आँखों से अङ्गारे निकलने लगे। जोरा उसे मनाने लगी।

"बस जोरा, चुप रहो। मुझे नहीं मालूम था, यह चटोरा देश की प्रगति में बाधक होगा; जनता के साथ विश्वासघात करेगा।"

* * *

"नाथ! आख़िर वह हमारी सन्तान......"

"रहने दो जोरा! यही तो और दुःख की बात है कि वह तुम्हारा पुत्र होकर भी कायर है। क्या तुम 'कायर की माँ' कहलाना पसन्द करोगी? बोलो!"

जोरा उदास हो गई—तब क्या होगा?

"जोरा! तुम्हें क्या हो गया है? क्या होगा! अपराध का दण्ड-प्रतिशोध! करनी का फल प्रत्येक को मिलना ही चाहिए।"

स्मिथ की आँखों में प्रतिहिंसा की आग जल रही थी!

जोरा रो रही थी।

इस समय स्मिथ क्रोध से पागल हो रहा था और जोरा शोक से ओत-प्रोत!

"भगवन्! अनाथ और अबला के तुम्हीं मालिक हो।"

"छिः! जोरा, उठो! जाओ, बालक को खाना खिला दो—उसे आज जङ्गल ले जाऊँगा। जाओ, वह भी उदास हो रहा होगा। उसे बहलाओ।"

जोरा चुपचाप भीतर चली गई। उसके पैर आज मन-मन भर के हो रहे थे।

५

"बाबा!......"

"चुप रह, अहमक़! हरामख़ोर! सीधे चल!"

जेम्स बाबा की गोद में चढ़ने की फ़रियाद करना चाहता था। वह सहम गया। उसकी आँखें डबडबा गईं। वह डर से खड़ा हो गया।

"आगे बढ़ो!"—स्मिथ इस समय भयानक हो गया था।

बालक काँप गया और आगे चला। स्मिथ के हाथ में भरी हुई बन्दूक़ थी।

"बोल तो रे, नदी के किनारे खड़ा होकर तू क्या कहेगा? याद है न?"

"परमपिता! मेरे अपराधों को क्षमा कर और अपने राज्य में मुझे स्थान दे।" बालक ने रोते-रोते कहा।

"ठीक है, यही कहना और फिर हाथों को ऊपर उठा देना—भूलना नहीं! देखो वह नदी का किनारा—वह टीला—वही वह स्थान है। मैं जङ्गल की ओर जाता हूँ।"

आज बालक डर रहा था, लेकिन पिता की आज्ञा माननी होगी!

बालक ने घुटने टेक कर ईश्वर से प्रार्थना की। उसके दोनों हाथ ऊपर उठ गए। उसकी आँखों से अविरल अश्रु-प्रवाह हो रहा था!

"धायँ! धायँ!!" बन्दूक़ की आवाज़!

बालक का मृत-देह नदी के प्रवाह में बह गया।

* * *

जोरा झोपड़ी के द्वार पर खड़ी थी, अप्रतिभ और सशङ्कित! स्मिथ धीर-गम्भीर गति से उसके पास पहुँचा।

"मेरा बच्चा?"—जोरा ने दीनता से पूछा!

"वह तुम्हारा बच्चा नहीं, तुम्हारी गोद का कलङ्क था। वह कायर-कलङ्क अब न रहा। अब तुम वीर-माता हो।"

स्मिथ की आवाज़ में क्रोध अथवा ग्लानि की गन्ध भी न थी।

"आख़िर वह हमारा ही तो था!"—भर्राई हुई आवाज़ में जोरा ने कहा।

"कुल-कलङ्क था, देशद्रोही था! जोरा, मेरे यहाँ देशद्रोही के लिए स्थान नहीं है।"

जोरा रो रही थी! स्मिथ चुप था!

पिता कर्तव्यशीलता और न्याय का कठोर पुतला है, उसे पुत्र-शोक में आँसू बहाने का अधिकार नहीं है।

होनहार सन्ध्या की अँधियारी में लीन हो रहा था और मूढ़ संसार दीपक का समाज सजा कर उसके स्वागत में लगा था।

* * *
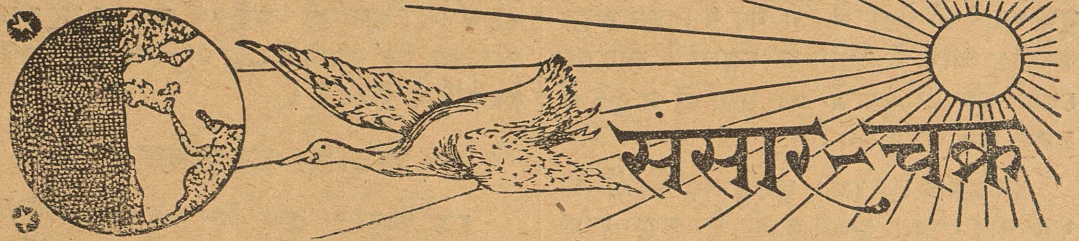
# भारत की स्वाधीनता-साधना

[ श्री० अभयङ्कर वर्मा, एम० ए०; एल-एल्० बी० ]

यद्यपि इतिहासकारों का कथन है, कि धार्मिक विभिन्नता तथा विचार-वैचित्र्य के कारण विदेशियों के आक्रमणों से बचने के लिए भारत ने कोई सङ्गठित चेष्टा नहीं की, तथापि यह मानना ही पड़ेगा, कि समय-समय पर स्वाधीनता के उपासकों ने अपने धर्म, सभ्यता तथा अपनी राष्ट्रीय-विशेषता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व तक अर्पण कर देने में भी आनाकानी नहीं की। विश्व-विजयी सिकन्दर से लेकर, मुसलमानों के आक्रमण-काल तक का भारतीय इतिहास भारतीय वीरों के अद्भुत आत्मोत्सर्ग की कथाओं से भरा पड़ा है। मुसलमानी राजत्व-काल में भी भारत ने अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए यथेष्ट चेष्टा की थी।

कौन नहीं जानता कि राजपूताना के स्वतन्त्रता-प्रेमी वीरों ने अपनी मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए केवल अपना ही नहीं, बल्कि अपने बच्चों और स्त्रियों तक का बलिदान कर दिया था। स्वतन्त्रता का वह अनन्य-पुजारी अपना राज-सिंहासन छोड़ कर भूखे बच्चों और असूर्यम्पश्या राजराजेश्वरी के साथ, एक-दो नहीं, लगातार पच्चीस वर्षों तक बनों की ख़ाक छानता रहा। गुलाब के फूल-से कोमल बच्चों को भूख से तड़पते देखा, घास की रोटी के लिए उन्हें बिलखते देखा, कोमल-शय्या पर विश्राम करने वाले अपने कलेजे के टुकड़ों को पत्थर की कठिन और खुरखुरी चट्टानों पर सोते देखा, कङ्करीले रास्तों पर चलने के कारण नवनीत-कोमल पैरों से रक्त की धारा बहते देखा; परन्तु अपने प्रण से विचलित नहीं हुआ। दिल को दहला देने वाली मुसीबतों का सामना किया, परन्तु स्वतन्त्रता के कौस्तुभ-मणिमाल को एक क्षण के लिए भी वक्षस्थल से अलग नहीं किया। वह कोमलाङ्गी रमणियाँ, जिनकी रूप-राशि से राज-महल चद्भासित हो उठता था, स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए नङ्गी तलवारें लेकर शत्रु-सागर में कूद पड़ी थीं। माताओं ने अपने दुध-मुँहे बच्चों की कमरों में अपने हाथों से तलवारें बाँध कर उन्हें समर-क्षेत्र में भेजा था। नव-विवाहिता वधू ने अपनी तमाम आशा और हृदय के मधुर अरमानों को हँसते-हँसते मातृ-भूमि के चरणों पर अर्पित कर दिया था। हज़ारों वीर बालाएँ जातीय सम्मान और गौरव की रक्षा के लिए आग की गगनचुम्बी लपटों से लिपट गई थीं। आह! उन जौहर व्रत-धारिणी देवियों के आत्मोत्सर्ग की कथा किस कठोर हृदय की आँखों को अश्रु-सिक्त नहीं कर देती? स्वतन्त्रता के लिए इतना त्याग स्वीकार किस जाति ने किया है? किस जौहरी ने उस महारत्न का इतना मूल्य दिया है, जितना राजपूताना ने दिया है। स्वतन्त्रता की रक्षा में इस महातीर्थ के कण कितनी बार रक्त-रञ्जित हुए हैं, इसका हिसाब कौन बतलाएगा? स्वतन्त्रता के लिए राजपूताना कितनी बार पुरुष-शून्य हो चुका है, कौन जानता है? महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, राणा राजसिंह और राठौर-वीर दुर्गादास की अमर कीर्तियाँ देश की विलुप्त स्वाधीनता की रक्षा का उद्योग ही तो हैं। गुरु गोविन्दसिंह, वीरवर फत्ता, प्रतापादित्य आदि महावीरों ने भी इस सम्बन्ध में स्तुत्य प्रयत्न किया है। महारानी लक्ष्मीबाई, ताँतिया टोपी, बाबू कुँवरसिंह और नाना साहब के कारनामे भी, किसी से छिपे नहीं हैं। इतिहास साक्षी है कि इन प्रातः स्मरणीय वीरों ने स्वतन्त्रता देवी के चरणों पर अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर दिया है। यद्यपि हमें यह स्वीकार करना ही पड़ेगा, कि यदि समस्त राष्ट्र को सङ्गठित करके देश को परतन्त्रता के बन्धन से मुक्त करने की चेष्टा की गई होती, तो शायद यह दिन देखने को नहीं मिलते। परन्तु वास्तव में उस समय की परिस्थिति ही कुछ और थी, सङ्गठन के इतने साधन भी मौजूद न थे और न उन वीरों को इसके लिए यथेष्ट सुयोग ही प्राप्त हुआ था। अस्तु।

## सन् ५७ के बाद

सन् १८५७ के ग़दर के बाद से भारत में शान्ति रही। सरल हृदय, निरीह भारतवासियों को परलोकवासिनी महारानी विक्टोरिया के उस घोषणा-पत्र पर, जिसे उसने ग़दर की समाप्ति के बाद प्रचारित कराया था, अगाध विश्वास था। उन्हें स्वप्न में भी इस बात की आशङ्का न थी, कि वह मधुर शब्दों का एक जाल-मात्र है और उन्नीसवीं शताब्दी के अङ्गरेज़ राजनीतिज्ञ इच्छा करते ही उसे रद्दी की टोकरी में डाल देंगे तथा स्पष्ट शब्दों में कह देंगे, कि वह एक राजनीतिक चालबाज़ी मात्र था। अगर उन्हें एक क्षण के लिए भी मालूम हो जाता, कि महारानी का वह घोषणा-पत्र अनायास ही ठुकरा दिया जायगा, तो यह सम्भव न था, कि वे अर्द्ध शताब्दी तक निश्चेष्ट भाव से बैठे रह जाते। क्योंकि विप्लव आन्दोलन की उपशान्ति के कुछ काल बाद ही बङ्गाल के विख्यात समाज-सुधारक राजा राम-मोहन राय ने राजनीतिक अधिकार-लाभ की आवश्यकता का अनुभव किया था और अपनी समस्त शक्ति लगा कर बङ्गालियों को उसके उप-

युक्त बनाने की चेष्टा में लग गए थे। इस अद्भुत कर्मशील व्यक्ति के उद्योग से बङ्गाल के साहित्य, समाज और धर्म-क्षेत्र में एक साथ ही जागृति के लक्षण दिखाई देने लगे थे।

इसके बाद स्वर्गवासी सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी का आविर्भाव हुआ। इनकी वाणी में अद्भुत शक्ति थी। इन्होंने देशवासियों के राजनीतिक अधिकार की रक्षा के लिए सरकारी नौकरी छोड़ दी और स्व० कविराज उपेन्द्रनाथ सेन की सहायता से 'बङ्गाली' नाम का एक अख़बार निकाला। कुछ दिनों के बाद ही तत्कालीन राजनीतिज्ञ स्व० आनन्दमोहन बसु ने भी बैनर्जी महाशय का साथ दिया और सन् १८७६ में 'इण्डियन एसोसिएशन' या भारत-सभा नाम की एक राजनीतिक संस्था की स्थापना हुई। उन दिनों बैनर्जी महाशय नवयुवक थे और धारा-प्रवाह अङ्गरेज़ी बोल सकते थे, इसलिए बङ्गाल के नवयुवकों पर उन्होंने शीघ्र ही अच्छा प्रभाव जमा लिया। भारत-सभा के सदस्यों की संख्या सौ तक पहुँच गई। परन्तु बैनर्जी महाशय इतने से ही सन्तुष्ट होने वाले न थे। उन्होंने बङ्गाल के बाहर भी अपने कार्य-क्षेत्र का विस्तार करना चाहा और प्रचार के लिए समस्त भारत का भ्रमण करने का विचार किया। फलतः देश के शिक्षित युवकों पर इनकी वाग्मिता का अच्छा प्रभाव पड़ा और कलकत्ता की तरह पूना में भी 'सार्वजनिक सभा' नाम की एक राजनीतिक संस्था की स्थापना हुई।

सन् १८८० में लॉर्ड रिपन भारत के वायसराय नियुक्त हुए। ये बड़े सहृदय और न्याय-प्रिय अङ्गरेज़ थे। इन्होंने 'स्थानीय स्वायत्त-शासन' विधान का निर्माण किया और म्युनिसिपैलिटी तथा लोकल बोर्डों में थोड़ा सा अधिकार भारतवासियों को दिला दिया। उस समय यह तुच्छ अधिकार भी भारतवासियों के लिए एक अलभ्य वस्तु थी। इसलिए आनन्दोल्लास के साथ ही सारे देश में लाट साहब के सुयश का डङ्का पिट गया।

इसी समय मि० अलबर्ट नाम के एक सज्जन ने प्रस्ताव किया, कि भारतीय विचारक अङ्गरेज़-अभियुक्तों के मामलों का भी विचार कर सकेंगे। उस समय गोरी दुनिया में एक तुमुल आन्दोलन आरम्भ हुआ। काले और विचार करेंगे? गोरों का इससे बढ़ कर अपमान की बात और क्या हो सकती है ??

परन्तु अलबर्ट साहब की इस ग़लती से भारतवासियों का थोड़ा सा उपकार हुआ। उनकी आँखों के सामने से माया-मरीचिका हट गई और उन्हें स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा, कि काले और गोरे रङ्गों में दिन और रात का सा अन्तर है—कालों का स्वार्थ अलग है और गोरों का अलग। साथ ही उन्हें इस बात का भी पता लग गया, कि हमारे गौराङ्ग प्रभु-गण हमें किस हेय दृष्टि से देखते हैं।

## कॉङ्ग्रेस का इतिहास

इस घटना के कुछ दिन बाद ही बम्बई में 'इण्डियन नेशनल कॉङ्ग्रेस' या भारतीय राष्ट्रीय महासभा का प्रथम अधिवेशन हुआ। सभापति थे श्री० उमेशचन्द्र बैनर्जी। उस समय भारत सरकार के स्वराष्ट्र मन्त्री मि० ह्यूम थे। सन् १८८५ में इन्होंने शासक और शासितों में भाव-विनिमय की इच्छा से इस 'कॉङ्ग्रेस' की स्थापना कराई। उद्देश्य रक्खा गया—शासन-कार्य में थोड़ा-बहुत अधिकार प्राप्त करना और सरकार के कानों तक अपनी आवश्यकताओं की पुकार को पहुँचाना। सन् १८८६ में इसका दूसरा अधिवेशन कलकत्ते

स्वर्गीय ताँतिया टोपी

में हुआ और श्री० दादाभाई नौरोजी ने सभापति का आसन सुशोभित किया। सन् १८८५ से १८९६ तक महासभा केवल परमुखापेक्षी थी। अपनी आवश्यकताओं और अभियोगों के सम्बन्ध में कुछ प्रस्ताव पास कर लेना और एक प्रार्थना-पत्र के साथ उसकी नक़ल सरकार की सेवा में भेज देना, बस, यही कॉङ्ग्रेस का काम था! बड़े दिन की छुट्टियों में इसका एक अधिवेशन हो जाता और कुछ अङ्गरेज़ी पढ़े-लिखे लोग वहाँ जाकर अपनी वाग्मिता का परिचय दे आया करते थे। सरकार भी उनकी प्रार्थनाओं और प्रस्तावों के लिए एक 'प्राप्ति-स्वीकार' लिख कर भेज देती थी। इस प्रकार दोनों ही अपने कर्तव्यों का पालन कर निश्चित हो जाते थे।

सन् १८९७ में, देश में कुछ जागृति के लक्षण दृष्टिगोचर हुए। लोकमान्य श्री० बाल गङ्गाधर तिलक का सम्बन्ध कॉङ्ग्रेस से आरम्भ से ही था। परन्तु वे आवेदन-निवेदन और कोरे प्रस्ताव पास कर लेने के पक्षपाती न थे। वे देश को जाग्रत करना चाहते थे। वे जानते थे कि जिस तरह स्वयं मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखाई देता, उसी तरह अपने पैरों के बल खड़े हुए बिना राजनीतिक अधिकार भी प्राप्त नहीं होते। वे प्रारम्भ से ही देश को जाग्रत करने की चेष्टा में थे। इसके लिए उन्होंने 'केसरी' और फिर 'मराठा' नाम के दो शक्तिशाली समाचार-पत्र भी निकाले। इसके सिवा सन् १८९५ में उन्होंने 'शिवाजी उत्सव' मनाने का आयोजन किया। लोकमान्य की यह चेष्टा नौकरशाही की नज़रों में खटक रही थी। 'केसरी' की निर्भीकतापूर्ण आलोचनाएँ और शिवाजी-उत्सव में लोगों का लाठी और तलवार के खेल दिखाना उसे फूटी आँखों भी नहीं सुहाता था। इसका एक अन्यतम कारण और भी था। पूना-निवासी श्री० दमोदर चापेकर और श्री० बालकृष्ण चापेकर नाम के दो उत्साही युवकों ने 'चापेकर-सङ्घ' नाम की एक संस्था की स्थापना की थी। इस सङ्घ का उद्देश्य था, देश के युवकों के शरीरों और मनों को देश-सेवा के उपयुक्त बनाना। इसके साधन रक्खे गए थे व्यायाम-चर्चा द्वारा शरीर की तथा श्री शिवाजी महाराज की कीर्तियों के मनन और अनुशीलन द्वारा मन की उन्नति करना! लोकमान्य इस सङ्घ के प्रधान पृष्ठपोषक थे। शिवाजी-उत्सव का आयोजन भी इसी सङ्घ द्वारा ही उन्होंने कराया था। सन् १८९७ में, तीसरे शिवाजी-उत्सव के उपलक्ष में लोकमान्य ने अपने पत्र में एक वीरत्वपूर्ण कविता छापी थी और एक वक्ता ने खुली सभा में घोषणा की थी, कि हम लोग अपनी खोई हुई स्वाधीनता का पुनरुद्धार करना चाहते हैं; हम अपनी समवेत चेष्टा द्वारा उसे प्राप्त करेंगे।

## मि० रैण्ड की हत्या

इस साल एक बड़ी दुखदाई दुर्घटना हुई। पूना में प्लेग फैला था। सरकारी कर्मचारियों ने नगर को इस भीषण महामारी से बचाने की चेष्टा आरम्भ की, परन्तु नगर-निवासियों के लिए यह चेष्टा प्लेग से भी अधिक असह्य हो उठी। लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' में इस रक्षा-काण्ड की घोर निन्दा की और उन अत्याचारों का भी वर्णन किया, जो प्लेग-निवारण के बहाने पूनावासियों पर किए जाते थे। इधर श्री० दामोदर चापेकर ने इन अत्याचारों से उत्तेजित होकर प्लेग-निवारक कर्मचारी मि० रैण्ड और उसके सहकारी को जान से मार डाला। इसके लिए चापेकर को फाँसी दी गई।

स्वर्गवासी लोकमान्य तिलक इन दिनों बड़ी निर्भीकता के साथ स्वाधीनता-मन्त्र का प्रचार कर रहे थे। वीरत्व-व्यञ्जक एक कविता तो पहले ही छाप चुके थे। नौकरशाही के लिए ये बातें असह्य थीं। उसने उनके ऊपर राजद्रोह-प्रचार का इलज़ाम लगाया और वे १८ महीने के लिए जेल भेज दिए गए। इस साल कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन मध्य-प्रान्त के अमरावती नगर में

हुआ। श्री० शङ्करन नायर सभापति थे। काँङ्ग्रेस ने पूना के प्लेग-काण्ड और श्री० तिलक के कारादण्ड की तीव्र निन्दा की। काँङ्ग्रेस के मञ्च पर ऐसी गर्मागर्म वक्तृताएँ इससे पहले कभी नहीं हुई थीं।

## नरम और गरम दल

तिलक के कारादण्ड का जनता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। काँङ्ग्रेस का एक दल इस घटना से बेतरह विक्षुब्ध हो उठा। अङ्गरेज़ी न्यायालयों पर से लोगों का विश्वास बहुत हद तक उठ गया और आत्म-शक्ति द्वारा मुक्ति प्राप्त करने का विश्वास दिनोंदिन दृढ़ होता गया। परन्तु दूसरा दल अङ्गरेज़ों का परम-भक्त था! उसे उनकी न्याय-परायणता, सहृदयता और उदारता पर दृढ़-विश्वास था। उसकी दृष्टि में आत्म-निर्भरता अपराध था—राजद्रोह था। वह प्रार्थना महामन्त्र का कट्टर उपासक था, उसके मतानुसार सब रोगों की वही एक-मात्र दवा थी। इस तरह काँङ्ग्रेस में दो दलों की सृष्टि हो गई! अङ्गरेज़ी अख़बार वालों ने व्यङ्ग से एक का नाम रक्खा 'मॉडरेट' या नरमपन्थी और दूसरे का 'इक्स्ट्रीमिस्ट' यानी चरमपन्थी।

## बङ्गाल का विच्छेद

३ दिसम्बर सन् १९०३ को सरकार ने घोषणा की कि शासन-कार्य की सुविधा के लिए बङ्गाल दो भागों में बाँट दिया जाएगा। बङ्गालियों ने इसका विरोध किया। बरसों तक घोर आन्दोलन हुआ। परन्तु सरकार ने एक न सुनी और १६ अक्टूबर सन् १९०६ को यह घोषणा कार्यरूप में परिणत कर दी गई—बङ्गाल का बटवारा होगा।

परन्तु बङ्गाली इस अपमान को चुपचाप नहीं सह सके। इसके कारण उनके हृदयों में जो तीव्र आग धधक उठी थी, वह धीरे-धीरे सारे भारतवर्ष में फैल गई। वाग्मिप्रवर सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी और श्री० विपिनचन्द्र पाल ने अपनी ओज-भरी वक्तृताओं द्वारा बङ्गाल में एक नवजीवन का सञ्चार कर दिया। बङ्गालियों ने ब्रिटिश माल का बहिष्कार आरम्भ किया। साथ ही स्वदेशी प्रचार और जातीय शिक्षा के लिए भी उद्योग करने लगे। इस समय कवि-सम्राट रवीन्द्रनाथ भी आजकल की तरह 'विश्व-प्रेमी' नहीं, केवल स्वदेश-प्रेमी थे। उनकी भावपूर्ण कविताओं ने सोने में सुगन्ध का काम किया। कायर कहाने वाले बङ्गालियों में उनकी लेखनी ने रूह फूँक दी। इधर पाण्डीचेरी के तपस्वी श्री० अरविन्द घोष और उपाध्याय ब्रह्मबान्धव की लेखनियाँ भी ग़ज़ब ढाने लगीं।

बङ्गाल के कुछ नवयुवक स्वाधीनता के लिए पागल हो उठे। उन्होंने वैध मार्ग का अवलम्बन परित्याग किया। ऋषिराज बङ्किमचन्द्र के 'बन्देमातरम्' मन्त्र का प्रचार पहले ही हो चुका था। इस महामन्त्र के कई युवक-साधक केवल 'बन्देमातरम्' का ज़ोर से उच्चारण करने के कारण जेल की हवा भी खा चुके थे। मन्त्र सिद्ध हो चुका था, उसने बङ्गालियों की विशीर्ण शिराओं के शीतल शोणित को उष्ण कर दिया। वक्र मेरु-दण्ड सीधे हो गए। बङ्गालियों का यह नवीन उत्थान देख कर मानो उनकी चिर-सङ्गिनी कायरता जान लेकर भागी। राजद्रोह, सम्राट के विरुद्ध युद्ध-घोषणा की तैयारी और गुप्त षड्यन्त्रों के मामलों की रिपोर्टों से अख़बारों के कॉलम भर गए। सरकारी 'सिडिशन सरक्यूलरों' के मारे सभा-समितियाँ त्राहि-त्राहि पुकारने लगीं। चिर-शान्तिपूर्ण विशाल भारत अशान्ति का घर बन गया। कारादण्ड, अर्थदण्ड, वेत्राघात, द्विपान्तर और फाँसी का बाज़ार ऐसा गरम हुआ कि लोग आश्चर्य में पड़ गए।

इधर काँङ्ग्रेस में दो दलों की सृष्टि तो पहले ही हो चुकी थी, विप्लव-पन्थियों का रङ्ग और आत्म-निर्भरता वाले चरमपन्थियों का ढङ्ग देख कर बेचारे 'मॉडरेटों' का कलेजा दहल उठा। उन्होंने जातीय आन्दोलन से धीरे-धीरे किनाराकशी आरम्भ की, परन्तु राष्ट्रीयतावादियों के मार्ग में अड़ङ्गा लगाने से बाज़ नहीं आए।

स्वर्गीय बाबू कुँवरसिंह

## काँङ्ग्रेस का ध्येय स्वराज्य

यह १९०६ का ज़माना था। काँङ्ग्रेस का २२ वाँ अधिवेशन कलकत्ते में हुआ। स्वर्गीय दादाभाई नौरोजी ने तीसरी बार काँङ्ग्रेस के सभापति के आसन को अलङ्कृत किया था। राष्ट्रवादियों ने लोकमान्य तिलक को सभापति के आसन पर बिठाना चाहा था, परन्तु मॉडरेट तो उनके नाम से घबराते थे। उन्होंने इस प्रस्ताव का विरोध किया। इसके सिवा वे विदेशी बहिष्कार के भी विरुद्ध थे। परन्तु काँङ्ग्रेस का यह अधिवेशन अत्यन्त उत्साहपूर्ण था। अन्त में विजय भी राष्ट्रीय दल वालों की ही हुई। काँङ्ग्रेस ने विदेशी वस्तु बहिष्कार सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत रह कर औपनिवेशिक स्वतन्त्रता लाभ करना काँङ्ग्रेस का ध्येय माना गया। सुयोग्य सभापति ने अपने भाषण में इसके लिए 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया था। इस शब्द के साथ स्वर्गीय नौरोजी महाशय की स्मृति सदैव विजड़ित रहेगी।

## श्यामजी कृष्ण वर्मा का उद्योग

मातृ-भूमि की गोद से अलग—विदेशों में वास करने वाले कुछ भारतीय नवयुवक बड़ी आशा और उत्सुकता से इस राष्ट्रीय उत्थान की गति-विधि लक्ष्य कर रहे थे। उन्होंने वहीं बैठे-बैठे इस राष्ट्रीय महायज्ञ में भाग लेने का विचार किया। प्लेग-काण्ड के समय पूने में जो हत्या हुई थी, उसके सम्बन्ध में नाटूभाई की आज्ञा से विख्यात दो महाराष्ट्र युवकों को देशान्तर-वास की सज़ा दी गई थी। इससे श्यामजी कृष्ण वर्मा नाम के एक गुर्जर युवक के मन पर विचित्र प्रभाव पड़ा। ये महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्यों में थे। क्रान्ति की लहर से इनका हृदय ओत-प्रोत था। पूना के प्लेगी-कर्मचारियों की हत्या के कारण जिस भीषण अत्याचार की सृष्टि हुई थी, उसके प्रतिकार की चेष्टा के लिए वर्मा जी इङ्गलैण्ड चले गए। शायद उन्हें आशा थी कि इङ्गलैण्ड वाले उनसे सहानुभूति दिखाएँगे। परन्तु यह आशा केवल आशा ही रह गई; सफल नहीं हुई। साथ ही स्वतन्त्रता-प्रेमी वर्मा जी भी फिर इस पराधीन देश में न आए और वहीं रह कर इसे बन्धन-मुक्त करने की चेष्टा में लग गए! सन् १९०५ में उन्होंने 'इण्डियन होमरूल सुसाइटी' नाम की एक संस्था की स्थापना की और 'इण्डियन सोशलिस्ट' नाम का एक अख़बार भी निकाला। इस अख़बार में उन्होंने घोषणा की कि भारतवासियों में स्वतन्त्रता के भावों का प्रचार करने के लिए वे ऐसे छः आदमी चाहते हैं, जो विदेशों में जाकर इसके सम्बन्ध में शिक्षा लाभ करें। इसके लिए वे उन्हें एक हज़ार रुपए की वृत्ति भी प्रदान करेंगे। इस घोषणा को पढ़ कर कई भारतीय नवयुवक उनके साथ हुए। जिनमें नासिक के श्री० विनायक दामोदर सावरकर का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन्होंने भारतीय नवयुवकों के दिलों में देशात्मबोध की जागृति के लिए 'मित्र-मेल' नाम की एक संस्था की स्थापना की थी। परन्तु अन्त में उस समिति का कार्य-भार अपने छोटे भाई श्री० गणेश दामोदर सावरकर को सौंप कर वे लन्दन चले गए। सावरकर जैसा उत्साही

साथी पाकर वर्मा जी ने फ़ौरन 'इण्डिया हाउस' नाम की एक संस्था की स्थापना कर डाली और प्रवासी भारतीय युवकों को विप्लव-मन्त्र की दीक्षा प्रदान करने लगे।

## राष्ट्र की जाग्रति

इधर भारतवर्ष विशेषतः बङ्गाल में चापेकर-सङ्घ की तरह समितियों की स्थापना होने लगी। युवकों ने बड़े उत्साह से लाठी, तलवार और छुरी आदि चलाने का अभ्यास आरम्भ कर दिया। कुछ दिनों के बाद कई बड़ी-बड़ी समितियों का सम्बन्ध लन्दन के इण्डिया हाउस के साथ स्थापित हो गया।

सन् १९०६ की कॉङ्ग्रेस के बाद नौकरशाही ने इस राष्ट्रीय जागरण को बलपूर्वक कुचल डालने का विचार किया। पुलिस का अत्याचार ज़ोरों से चलने लगा। पञ्जाब के दो शेर—स्वर्गीय लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह—बिना विचार के ही क़ैद करके मण्डाले (बर्मा) भेज दिए गए।

सन् १९०७ में कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन नागपुर में होने वाला था। यद्यपि उस समय देश में राष्ट्रीयता की दुन्दुभी बज चुकी थी, परन्तु कॉङ्ग्रेस की बागडोर मॉडरेटों के ही कम्पमान हाथों में थी। वे नागपुर में कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन करने को तैयार न हुए। क्योंकि वहाँ तिलक-दल के महाराष्ट्रों का विशेष प्रभाव था; इसलिए बम्बई के विख्यात मॉडरेट नेता सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने सूरत में कॉङ्ग्रेस के अधिवेशन करने का आयोजन किया। मेहता महोदय को यह कुटिल चाल राष्ट्रीय दल वालों का अच्छी नहीं लगी। उन्होंने कॉङ्ग्रेस को छोड़ कर अपनी अलग संस्था क़ायम करने का विचार किया। परन्तु

स्वर्गीय नाना साहब

लोकमान्य तिलक इसके लिए तैयार नहीं हुए। वे कॉङ्ग्रेस को मॉडरेटों के हाथों से छीन लेने के पक्षपाती थे। लाला लाजपतराय मण्डाले से लौट आए थे। इसलिए राष्ट्रीय दल वाले उन्हीं को कॉङ्ग्रेस का सभापति बनाना चाहते थे। परन्तु मॉडरेटों को भय था कि उनके सभापति होने से सरकार नाराज़ हो जायगी, इसलिए उन्होंने बङ्गाल के मॉडरेट (सर) रासबिहारी घोष को सभापति चुना। इसके साथ ही उन्होंने यह भी घोषणा की कि 'स्वराज्य बहिष्कार' और 'जातीय शिक्षा' सम्बन्धी प्रस्तावों की आलोचना कॉङ्ग्रेस में नहीं हो सकेगी। राष्ट्रीय दल वाले मॉडरेटों की इस मनोवृत्ति से अत्यन्त क्षुब्ध हुए। उन्होंने सूरत में श्री० अरविन्द घोष के सभापतित्व में एक सभा की। निश्चय हुआ कि भीरुता और दुर्बलता को प्रश्रय प्रदान कर कॉङ्ग्रेस की मर्यादा को न बिगड़ने दिया जाए। लोकमान्य ने श्री० रासबिहारी घोष से मिल कर उन प्रस्तावों को ग्रहण करने के लिए अनुरोध किया। परन्तु उन्होंने ऐसा करने से साफ़ इन्कार कर दिया। राष्ट्रीय दल वाले हताश होकर लौट आए और निश्चय किया कि कॉङ्ग्रेस के खुले अधिवेशन में ये प्रस्ताव रक्खे जाएँ और घोष महाशय के सभापतित्व का विरोध किया जाए। मॉडरेट भी अपने पक्ष का समर्थन करने के लिए तैयार थे। अधिवेशन आरम्भ हुआ। तिलक कुछ कहने के लिए उठे। इतने में किसी बदमाश ने उन पर एक जूता फेंका, जो तिलक को तो नहीं लगा, परन्तु बङ्गाल के सुप्रसिद्ध मॉडरेट नेता श्री० सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी की दाढ़ी को चूम कर एक दूसरे मॉडरेट सज्जन के ऊपर जा पड़ा। सारी सभा में हुलस्थूल मच गया। कुर्सियाँ चलीं, डण्डे चले, हाथा-पाई हुई और अन्त में कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन ही स्थगित कर देना पड़ा।

सन् १९०८ में कॉङ्ग्रेस का वही स्थगित अधिवेशन मद्रास में हुआ। सभापति भी वही श्री० रासबिहारी घोष महाशय हुए। मैदान साफ़ था। महाराष्ट्र केसरी श्री० तिलक देव राजद्रोह के प्रचार के अपराध में ब्रिटिश न्यायालय द्वारा छः वर्षों के लिए मण्डाले के जेलख़ाने में भेजे जा चुके थे। बङ्गाल के स्वदेशी-प्रचारक नेता श्री० श्यामसुन्दर चक्रवर्ती, श्री० कृष्णकुमार मित्र, श्री० शचीन्द्रप्रसाद बोस, श्री० अश्विनीकुमार दत्त, श्री० सतीशचन्द्र चट्टोपाध्याय, राजा सुबोधचन्द्र मल्लिक, श्री० मनोरञ्जन गुह ठाकुरता, श्री० पुलिनबिहारी दास और श्री० भूपेन्द्रनाथ नाग, सन् १९१८ के तीसरे रेगुलेशन के अनुसार बिना विचार के ही निर्वासित कर दिए गए थे। बङ्गाल के इन नौ नेताओं का निर्वासन इतिहास में 'नौ रत्नों के निर्वासन' के नाम से विख्यात है। इस घटना ने उस समय सारे देश में एक विचित्र सनसनी फैला दी थी।

## १९०७-८ का विप्लव-काण्ड

सन् १९०७ की ६ठी दिसम्बर को बङ्गाल के छोटे लाट अपनी स्पेशल ट्रेन द्वारा मेदिनीपुर जा रहे थे। विप्लववादियों ने बम द्वारा उनकी गाड़ी उलट देने का आयोजन किया, परन्तु तक़दीर अच्छी थी, बेचारे लाट साहब बच गए। केवल कुछ गाड़ियाँ चूर होकर रह गईं।

इसी साल की २३वीं दिसम्बर को ग्वालन्दो के स्टेशन पर किसी ने ढाका के भूतपूर्व मैजिस्ट्रेट मि० एलेन पर पिस्तौल का वार किया। साहब को चोट तो करारी लगी थी, परन्तु मरे नहीं। इस घटना के कई दिन बाद बङ्गाल में कुष्ठिया नामक स्थान में एक अङ्गरेज़-पादड़ी पर भी गोली छोड़ी गई थी। परन्तु इन दोनों अपराधियों का आज तक पता नहीं लगा।

सन् १९०८ की ११वीं अप्रैल को चन्दननगर के मेयर के घर में एक बम फटा। परन्तु मेयर बच गया। ३० अप्रैल को खुदीराम बोस और प्रफुल्ल-चन्द्र चाकी ने मुज़फ़्फ़रपुर में श्रीमती केनेडी और उनकी कन्या कुमारी केनेडी को बम फेंक कर मार डाला। ये दोनों विप्लववादी युवक कलकत्ते के प्रेज़ीडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० किङ्गसफ़र्ड को मारने आए थे, जो मुज़फ़्फ़रपुर में जज नियुक्त हुए थे, परन्तु धोखे में पड़ जाने के कारण बेचारी दोनों स्त्रियों को चोट लगी और वे मर गईं।

घटना के दूसरे दिन खुदीराम बैनी नाम के एक गाँव में पकड़ा गया था। अन्त में उसे फाँसी की सज़ा दी गई थी और चाकी ने आत्म-हत्या करके न्याय के शिकञ्जे से अपना पिण्ड छुड़ाया था।

इस घटना के कुछ दिन बाद ही, ता० २ मई सन् १९०८ को कलकत्ते के माणिकतल्ला नामक मुहल्ले में पुलिस ने बम बनाने के एक बड़े कारख़ाने का पता लगाया। यहाँ बहुत से बम, रिवॉलवर, बन्दूकें और कारतूस आदि युद्ध-सम्बन्धी सामान पाए गए। इसके सिवा कलकत्ता के हैरिसन रोड के एक मकान में भी कुछ ऐसे ही सामान पाए गए थे। इसी साल कलकत्ता के ग्रे-स्ट्रीट नामक स्थान में एक बम फटा था और ढाका ज़िले के बाढ़ा ग्राम में एक भीषण डकैती भी विप्लववादियों द्वारा हुई थी। यह डकैती बड़ी साहसपूर्ण थी। चार आदमी क्रान्तिकारियों द्वारा मारे गए थे।

इन भयङ्कर घटनाओं के कारण सारे देश में सनसनी फैल गई। अख़बार वालों ने इस विप्लव-काण्ड की घोर निन्दा की, विप्लवपन्थियों को आततायी, पागल और देशद्रोही कहा गया। मॉडरेट ही नहीं, कितने ही 'इक्स्ट्रीमिस्ट' भी इन घटनाओं के कारण सन्नाटे में आगए और कुछ दिनों के लिए कॉङ्ग्रेसी आन्दोलन दब गया।

माणिकतल्ले में जो कारख़ाना पकड़ा गया था, उसके सम्बन्ध में श्री० अरविन्द घोष के छोटे

भाई श्री० वारीन्द्रकुमार घोष और श्री० उल्लासकर दत्त आदि २४ नवयुवकों पर मामला चला। इसके बाद श्री० अरविन्द घोष आदि भी इसी मामले में पकड़े गए। इस मुक़दमे का नाम 'अलीपुर षड्यन्त्र-केस' रक्खा गया था। वर्षों तक बड़ी धूम के साथ मामला चलने पर श्री० अरविन्द आदि कई आदमी तो छूट गए, परन्तु बाक़ी १५ अभियुक्तों को कालापानी तथा कठोर कारावास का दण्ड दिया गया था। इस मामले में श्री० वारीन्द्रकुमार और श्री० उल्लासकर दत्त आदि कई अभियुक्तों ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए, गरमागरम बयान भी दिए थे।

इन्हीं अभियुक्तों में नरेन्द्र गोस्वामी नाम का एक नवयुवक भी था। वह सरकारी गवाह हो गया और उसने विप्लववादियों के सारे षड्यन्त्रों का भण्डाफोड़ कर दिया। फलतः अलीपुर की सेण्ट्रल जेल के अन्दर ही श्री० कन्हाईलाल दत्त और श्री० सत्येन्द्रनाथ बोस ने पिस्तौल की गोलियों द्वारा नरेन्द्र का काम तमाम कर दिया। जिस समय यह अद्भुत दुर्घटना हुई थी, उस समय श्री० कन्हाईलाल को १०५ डिग्री ज्वर था। कहते हैं, पुलिस को आज तक इस बात का पता न लगा कि जेल के अन्दर इन्हें पिस्तौल कहाँ से मिल गई। अस्तु।

नन्दलाल बैनर्जी नाम के एक पुलिस-इन्स्पेक्टर ने, मुज़फ़्फ़रपुर बम-काण्ड के अन्यतम नायक श्री० प्रफुल्ल को पकड़ने की चेष्टा की थी। जिस दिन श्री० कन्हाईलाल को फाँसी दी गई थी, उसके एक दिन पहले कलकत्ता के सरपेण्टाइन लेन में किसी ने नन्दलाल को गोली मार दी और वह वहीं ढेर हो गया!

जिस रोज नन्दलाल मारा गया था, उसके दो रोज पहले एक और बड़ी सनसनीपूर्ण घटना हुई। कलकत्ता के मध्य भाग में 'डोवरटून हॉल' नाम की एक अट्टालिका है, वहाँ 'यङ्गमेन क्रिश्चियन एसोसिएशन' का कार्यालय है। उस दिन वहाँ कोई जलसा था। बङ्गाल के तत्कालीन लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर एण्ड्रू फ़्रेज़र भी जलसे में आए थे। सैकड़ों गण्य-मान्य अङ्गरेज और हिन्दुस्तानी वहाँ मौजूद थे। उसी समय जितेन्द्रनाथ नाम के एक बङ्गाली युवक ने उन पर हमला किया। परन्तु सर एण्ड्रू के भाग्य से उसकी छःनली पिस्तौल ख़राब थी, इसलिए उसकी चेष्टा विफल हो गई और लाट साहब बाल-बाल बच गए।

इस साल, अर्थात् १९०८ ईस्वी में, केवल बङ्गाल में ही इस तरह की कुल २१ वैप्लविक घटनाएँ हुई थीं।

## कॉङ्ग्रेस का वैध आन्दोलन

सन् १९०८ से लेकर १९२४ तक कॉङ्ग्रेस के वैध आन्दोलन में कोई परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ा। १९०८ में भारत को मार्ले-मिण्टो शासन संस्कार प्राप्त हुआ। 'मॉडरेट' नेताओं ने इसे अपने परिश्रम का फल समझ कर सिर और आँखों पर चढ़ाया। उन्हें विश्वास था, कि इसी तरह वैध आन्दोलन करते रहने से और अधिकार भी प्राप्त होंगे, इसलिए उन्होंने कॉङ्ग्रेस को भी अच्छी तरह अपने क़ब्ज़े में रक्खा। इसके लिए एक 'क्रीड' बनाया गया और जो इस क्रीड पर हस्ताक्षर कर देता था, वही कॉङ्ग्रेस का प्रतिनिधि हो सकता था। परन्तु राष्ट्रीय दल इस क्रीड के विरुद्ध था, इसलिए छः वर्षों तक कॉङ्ग्रेस सम्पूर्ण रूपेण मॉडरेटों के हाथ में रही। इस समय कॉङ्ग्रेस का उद्देश्य था—

"ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत स्वायत्त-शासन सम्पन्न देशों की तरह शासन-प्रणाली प्राप्त करना और देश के शासन-कार्य में उन्हीं की तरह अधिकार लाभ करना। इसके लिए उपाय निर्धारित हुआ, वैध आन्दोलन और धीरे-धीरे अधिकार प्राप्त करते जाना। इसके साथ ही राष्ट्रीय एकता की वृद्धि, राष्ट्रीय भावों का प्रचार तथा देश की मानसिक, नैतिक, आर्थिक और वाणिज्य सम्बन्धी उन्नति करना भी कॉङ्ग्रेस का ध्येय रक्खा गया।

## विप्लव की प्रगति

इधर विप्लवपन्थियों का आन्दोलन ज़ोरों के साथ चल रहा था। अलीपुर षडयन्त्र-केस में तथा नरेन्द्र की हत्या वाले मामले में आशुतोष विश्वास नाम के एक बङ्गाली ने सरकार के पक्ष का समर्थन किया था, इसलिए सन् १९०९ की १० फ़रवरी को एक नवयुवक ने विश्वास को गोली मार दी और इसके लिए उसे फाँसी की सज़ा दी गई।

स्वर्गीय राजा राममोहन राय

पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट मियाँ शमसुल आलम अलीपुर षडयन्त्र-केस के पैरवीकार थे। इसलिए १९१० की २४ जनवरी को श्री० वीरेन्द्रनाथ गुप्त नाम के नवयुवक ने उन्हें दिन-दहाड़े और कलकत्ता हाईकोर्ट के जनाकीर्ण फाटक पर गोली मार दी। वीरेन्द्र को फाँसी की सज़ा दी गई थी।

इस तरह के क्रान्तिकारी अनुष्ठानों की बढ़ती देख कर सरकार ने विशेष सतर्कता का अवलम्बन किया। उसने सन् १९०८ के फ़ौजदारी क़ानून में यह सुधार किया कि वैप्लविक अपराधों का विचार सनातन नियमानुसार न कर, 'चट मँगनी और पट विवाह' के अनुसार होगा। इसके बाद ही बङ्गाल के विभिन्न स्थानों की, प्रायः आधे दर्जन समितियों और सभाओं को ग़ैर-क़ानूनी संस्था क़रार दे दिया गया।

सन् १९०९ में फ़रीदपुर ज़िले के फ़तहजङ्ग नामक गाँव में पुलिस के एक गुप्तचर के धोखे में उसका भाई मार डाला गया। इसी साल बङ्गाल के नागला, हल्दबाड़ी और हवड़ा आदि कई स्थानों में डकैती तथा गुप्त साजिश आदि के अभियोग में बहुत सी गिरफ़्तारियाँ हुईं और कई मामले चले। हवड़ा के षड्यन्त्र-केस में ५० युवकों पर मामला चलाया गया था। इनमें छः हल्दबाड़ी की डकैती वाले मामले में पहले ही सज़ा पा चुके थे। बाक़ी ४४ कई महीनों के बाद बेदाग़ छोड़ दिए गए। इस साल की वैप्लविक घटनाओं में सब से बड़ी घटना ढाके का षड्यन्त्र-केस था। इसके सम्बन्ध में कुल ४४ नवयुवक पकड़े गए थे, जिनमें १५ दण्डित हुए और बाक़ी छूट गए।

सन् १९१० में, विप्लव की बाढ़ रोकने के लिए सरकार ने प्रेस-क़ानून पास किया। फल-स्वरूप कितने ही अख़बार बन्द हो गए। देश ने इस क़ानून का घोर प्रतिवाद किया था, परन्तु कोई फल नहीं हुआ। इस साल विप्लववादियों ने पुलिस के तीन गुप्तचरों की हत्याएँ कीं। एक ढाका ज़िले के एक गाँव में मारा गया, दूसरा मैमनसिंह ज़िले में और तीसरा बारीसाल में। २१ फ़रवरी को कलकत्ते में श्रीशचीन्द्र नाम का एक जासूस भी मारा गया। ढाका ज़िले के सोनारङ्ग नाम के गाँव में कुछ युवकों ने एक राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की थी। आस-पास के गाँवों के कुछ आदमियों ने, कहा जाता है, पुलिस से मिल कर, विद्यालय वालों के विरुद्ध एक जाली मामला दायर कर दिया। इससे कुछ नवयुवक अत्यन्त उत्तेजित हो उठे और कई आदमियों को मार डाला।

सन् १९११ में नवाखाली में विप्लववादियों ने एक विप्लववादी को ही मार डाला। बात असल यह थी, कि शारदाचरण चक्रवर्ती नाम का एक विप्लववादी विप्लवी-दल की कुछ बन्दूकें तथा अन्यान्य सामान लेकर अलग हो गया था और अपना एक दल बना कर कुछ स्वार्थ-साधन करना चाहता था। इसलिए विप्लववादियों ने एक दिन उसका काम तमाम कर दिया। इसके सिवा इस साल ढाका और मेदिनीपुर में दो पुलिस के चर भी मारे गए थे।

सन् १९१२ में विप्लव-काण्ड कुछ शिथिल था। इस साल कहीं कोई उल्लेख योग्य घटना नहीं हुई। परन्तु सन् १९१३ में फिर आग भड़की। इस साल की २९वीं सितम्बर को कलकत्ता के 'कॉलेज स्क्वायर' नामक मैदान में पुलिस का एक बङ्गाली हेड-कॉन्स्टेबिल मार डाला गया। इसके दूसरे दिन मैमनसिंह के एक दारोग़ा पर बम फेंका गया। इससे पहले दो बार और उसे मार डालने की चेष्टा की गई थी, परन्तु सफलता नहीं प्राप्त हुई। इसके कुछ दिन बाद ही बारीसाल के षड्यन्त्र-केस का सूत्रपात हुआ। इस मामले में सरकार और विद्रोहियों में एक समझौता हुआ। १२ अभियुक्त अपराध स्वीकार कर जेल गए और बाक़ी सोलह छोड़ दिए गए। इसी साल कलकत्ता के राजाबाज़ार नाम के मोहल्ले में पुलिस ने एक बम का कारख़ाना पकड़ा और श्री० अमृतलाल हाज़रा नाम का एक युवक १६ साल के लिए जेल भेजा गया।

१९१४ की बङ्गाल के विप्लव सम्बन्धी घटनाओं में चटगाँव के सत्येन्द्रसेन की हत्या और ढाका के रामदास की हत्या विशेष उल्लेख योग्य है।

सत्येन्द्र पुलिस का वेतनभोगी जासूस था। वह विप्लवपन्थियों में आ मिला और सारा भेद पुलिस को बतला दिया। इसलिए १९ जून को दिन-दहाड़े वह मार डाला गया। रामदास का भी वही हाल था। पहले वह विप्लववादी था, पर अन्त में पुलिस का जासूस बन गया। फलतः उसे भी जान से हाथ धोना पड़ा। १९ जुलाई को वह ढाका के बकलैण्ड पुल पर वसन्त चटर्जी नाम के जासूस के साथ टहल रहा था। इसी समय किसी विप्लवी ने उस पर आक्रमण किया। वसन्त ने पानी में कूद कर अपनी रक्षा कर ली।

१९०८ से १९१४ तक में विप्लव की आग सारे भारतवर्ष में फैल गई। उसका वर्णन हम आगे चल कर करेंगे। अस्तु।

## महासमर और विप्लवी

सन् १९१४ में यूरोप में महासमर की आग भड़क उठी। राजशक्ति को व्यतिव्यस्त देख कर मॉडरेटों ने निश्चय किया कि इस साल कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन न किया जावे। परन्तु अन्त में, उस साल मद्रास में और दूसरे साल अर्थात् १९१५ में बम्बई में कॉङ्ग्रेस के अधिवेशन हुए और निश्चय हुआ कि इस सङ्कट के समय में ब्रिटिश सरकार की सहायता की जाय। इस प्रतिश्रुति का केवल कॉङ्ग्रेस ने ही नहीं, वरन् सारे देश ने ख़ूब पालन किया। साधारण से साधारण मनुष्य ने भी युद्ध-फ़ण्ड में रुपए दिए। केवल धन ही नहीं, जान देने में भी देश ने अपनी उदारता और त्याग-शीलता का ख़ूब परिचय दिया।

परन्तु विप्लवी किसी और ही धुन में थे। जिस समय देश ब्रिटिश सरकार की सहायता करने में जुटा था, उस समय वे उसके विरुद्ध षड्यन्त्र करने में लगे थे। उन्होंने इस अवसर से लाभ उठा कर सशस्त्र विद्रोह की तैयारी आरम्भ कर दी। चारों से आयोजन आरम्भ हुआ। कलकत्ते की एक दूकान से ५० पिस्तौलें और ४६ हज़ार कारतूस लूट कर उसी समय देश के विभिन्न केन्द्रों में बाँट दिए गए। हथियार पा जाने पर विप्लववादी और भी उत्साहित हुए। इस साल के आरम्भ में ही कलकत्ता के शोभा बाज़ार के पास एक पुलिस का इन्स्पेक्टर मार डाला गया था। वसन्तकुमार नाम के पुलिस कर्मचारी को, जिसने ढाके के बकलैण्ड पुल से कूद कर अपनी रक्षा की थी, मारने के लिए फिर चेष्टा हुई। परन्तु इस बार भी वह बच गया। उसके बदले एक दूसरे हेड-कॉन्स्टेबिल की हत्या हुई और दो कॉन्स्टेबिल घायल हुए।

आए दिन की इन हत्याओं और उत्पातों के कारण सरकार विशेष विचलित हो उठी। उसने इसके प्रतिकार के लिए 'भारत-रक्षा-क़ानून' या डिफ़ेन्स ऑफ़ इण्डिया एक्ट के नाम से एक क़ानून पास किया। परन्तु लोगों को सन्देह हुआ, कि इस क़ानून के कारण जौ के साथ घुन भी पिस जाएँगे। इसलिए इसका घोर विरोध किया गया। परन्तु सरकार ने इस क़ानून को पास करके ही दम लिया। बात वही सामने आई। इस क़ानून की बदौलत बङ्गाल के बाहर के सैकड़ों नवयुवक बिना विचार के ही यत्र-तत्र नज़रबन्द कर दिए गए।

इतने में १९१५ का ज़माना था। श्रीमती एनी बेसेण्ट ने 'होमरूल' आन्दोलन आरम्भ किया। देश के अधिकांश नेताओं ने उनका साथ देने का वचन दिया। १९१६ में लखनऊ में कॉङ्ग्रेस के इकतीसवें अधिवेशन की तैयारियाँ आरम्भ हुईं। मॉडरेटों की अहम्मन्यता के कारण जो लोग कॉङ्ग्रेस से अलग थे, वे भी इस साल उसमें शरीक हुए। इसके सिवा मुसलमान भी आए। वहीं मुस्लिम लीग का अधिवेशन भी हुआ। दोनों ही राष्ट्रीय संस्थाओं ने होमरूल सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकार किया। इस सम्बन्ध में लोकमत तैयार करने की इच्छा से लोकमान्य तिलक और श्रीमती बेसेण्ट ने प्रचार-कार्य आरम्भ किया।

इधर नौकरशाही ने एक ओर शासन-संस्कार और दूसरी ओर लाल आँखें दिखा कर इस राष्ट्रीय भावना को कुचल डालने की चेष्टा की। भारत-रक्षा-क़ानून के फन्दे में हज़ारों युवक फाँसे गए। यहाँ तक कि श्रीमती एनी बेसेण्ट, मौ० शौकत-अली और मौ० मोहम्मद अली भी नज़रबन्द किए गए। परन्तु इस दमन से आन्दोलन का

स्वर्गीय लोकमान्य तिलक

बाल भी बाँका नहीं हुआ। एक ओर कॉङ्ग्रेस का वैध आन्दोलन और दूसरी ओर विप्लव आन्दोलन पूर्ण उत्साह के साथ चलने लगे। बल्कि विप्लव आन्दोलन ने तो एक दूसरा ही रूप धारण किया। सन् १९१५ की १२वीं फ़रवरी को कलकत्ते के गार्डनरीच नामक स्थान पर दिन-दहाड़े बर्ड कम्पनी का ख़ज़ाना लूट लिया गया। कम्पनी के कर्मचारी एक मोटरगाड़ी पर रुपए लाद कर ले जा रहे थे। विप्लवियों ने रास्ते में गाड़ी रोक ली और सैकड़ों आदमियों के देखते-देखते १८ हज़ार रुपए लेकर चल दिए। इसके ठीक दस दिन बाद बेलियाघाटा (कलकत्ता) के एक चावल के व्यापारी के २० हज़ार रुपए लूटे गए और एक मोटरगाड़ी चलाने वाला भी मार डाला गया।

एक दिन विख्यात विप्लववादी श्री० यतीन्द्रनाथ मुकर्जी पथरियाघाटा (कलकत्ता) के एक मकान में अपने साथियों से कुछ परामर्श कर रहा था। इतने में वहाँ नीरद नाम का एक अजनबी आदमी पहुँच गया। यतीन्द्र ने उसे पुलिस का आदमी समझ कर फ़ौरन गोली दाग़ दी। २८ फ़रवरी को कलकत्ते के कॉर्नवालिस स्क्वॉयर के पास एक पुलिस कर्मचारी मारा गया। यह गया था, चित्तप्रिय नाम के एक विद्रोही को गिरफ़्तार करने। इसी वर्ष के ३० नवम्बर को कलकत्ते में एक कॉन्स्टेबिल मारा गया था। २५ अगस्त को पुलिस की सहायता करने के अपराध में मुरारी-मोहन नाम का एक युवक मारा गया था। ३ मार्च को कुम्मिले में एक हेड मास्टर की हत्या हुई। १९ अक्टूबर के मैमनसिंह का पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री० यतीन्द्रमोहन अपने बच्चे के साथ मारा गया। १९ दिसम्बर को विश्वासघात के अपराध में धीरेन्द्र विश्वास की हत्या हुई।

श्री० यतीन्द्रनाथ मुकर्जी का ज़िक्र ऊपर आ चुका है। गत महासमर के दिनों में इसने अपना एक मज़बूत दल बना लिया था। विदेशों से शस्त्रास्त्र मँगाने की तैयारियाँ की गई थीं। परन्तु कई कारणों से इस विषय में सफलता प्राप्त नहीं हुई। पथरियाघाटा में नीरद की हत्या करने के कारण यतीन्द्र को कलकत्ता छोड़ देना पड़ा। वह चन्द साथियों को लेकर उड़ीसा प्रान्त के बालेश्वर नामक स्थान में जाकर रहने लगा। वहाँ एक दिन उसे ख़बर मिली, कि पुलिस उसका पीछा कर रही है। साथी उस समय वहाँ मौजूद न थे। उन्हें ख़बर देने में कुछ देर हो गई। जब साथी आ गए तो उसने भागने की चेष्टा की। वह महानदी पार करके किसी निर्जन स्थान में निकल जाना चाहता था। परन्तु पुलिस ने घेर लिया। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं। कई पुलिस वाले और ग्रामवासी मारे गए। यतीन्द्र अपने साथियों सहित नदी पार करके एक जङ्गल में छिप गया। पुलिस ने आकर जङ्गल को चारों ओर से घेर लिया। यतीन्द्र को ख़बर लगी तो उसने तथा उसके साथियों ने निश्चय किया कि जीते जी आत्म-समर्पण नहीं करेंगे। उस समय यतीन्द्र के साथ चित्तप्रिय, नरेन्द्र, मनोरञ्जन और ज्योतिषचन्द्र नाम के चार युवक थे। उधर पुलिस थी, सैकड़ों की संख्या में। कुछ देर के बाद पुलिस की सहायता के लिए घुड़सवारों की एक टोली भी आ पहुँची। इन पाँचों युवकों ने पुलिस वालों का मुक़ाबला किया। पुलिस जलधारा की तरह गोलियाँ चलाने लगी। यतीन्द्र-दल भी मुँहतोड़ उत्तर दे रहा था। अन्त में चित्तप्रिय को गोली लगी और वह धराशायी हुआ। यह देख कर यतीन्द्र मानो और भी उत्साहित हो गया और दोनों हाथों में पिस्तौल लेकर दनादन गोलियाँ छोड़ने लगा। अन्त में घायल होकर गिर पड़ा। थोड़ी देर के बाद दोनों (यतीन्द्र और चित्तप्रिय) मर गए। नरेन्द्र और मनोरञ्जन को अदालत ने फाँसी की सज़ा दी थी। ज्योतिषचन्द्र को आजन्म के लिए कालेपानी की सज़ा दी गई थी, परन्तु बहरामपुर की जेल में ही उसकी मृत्यु हो गई!

इस प्रकार १९०६ से लेकर १९१६ तक केवल बङ्गाल में २१० वैप्लविक अनुष्ठान हुए और १०१ चेष्टाएँ विफल हो गईं। इन तमाम घटनाओं से १,३०८ मनुष्यों का सम्बन्ध था। ३९ मामले चले थे, जिनमें ८४ आदमियों को सज़ा दे दी गई। दस साज़िश के मामले चले थे, जिनसे १९२ आदमियों का सम्बन्ध था। इनमें से ६३ को कड़ी

सज़ाएँ दी गई थीं। फ़ौजदारी क़ानून के मुताबिक ८२ आदमियों से नेकचलनी के लिए ज़मानत और मुचलके लिए गए थे। अस्त्र-आईन और विस्फोटक पदार्थों को रखने के अपराध में ५९ मामले चले, जिनमें ५८ आदमियों को सज़ाएँ दी गई थीं।

## शासन-संस्कार

२० अगस्त सन् १९१७ को इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट के उद्घाटन के समय सम्राट ने श्रीमुख से कहा कि भारतवासियों को धीरे-धीरे दायित्व-मूलक शासन-प्रणाली प्रदान करना ही भारत में ब्रिटिश शासन-नीति का उद्देश्य है। यह सुन कर मॉडरेटों को बड़ी ख़ुशी हुई। परन्तु राष्ट्रीय दल अपने आत्म-निर्भरता वाले सिद्धान्त पर डटा रहा। इस साल कॉङ्ग्रेस का बत्तीसवाँ अधिवेशन कलकत्ते में हुआ था। श्रीमती एनी बेसेण्ट निर्वासन से छुटकारा पा चुकी थीं। राष्ट्रीय-दल वालों ने बड़े उत्साह से उन्हें सभानेत्री निर्वाचित किया। इस साल कॉङ्ग्रेस सोलहो आने राष्ट्रीय दल वालों के हाथ में थी। परन्तु आसन्न संस्कार की आशा से मॉडरेटों ने भी कॉङ्ग्रेस का साथ दिया था। बड़ा ही उत्साहपूर्ण अधिवेशन था। सभानेत्री का ऐसा अपूर्व स्वागत हुआ, कि जिसका वर्णन करना मुश्किल है। लोकमान्य तिलक भी इस अधिवेशन में शामिल थे। प्रतिनिधियों की संख्या प्रायः पाँच हज़ार थी। लखनऊ के १५वें अधिवेशन को छोड़ कर, दूसरे किसी अधिवेशन की प्रतिनिधि-संख्या इससे अधिक नहीं हुई थी।

सम्राट महोदय की उपर्युक्त घोषणा के अनुसार १८ जुलाई, सन् १९१८ को भारत-सचिव और बड़े लाट ने एक रिपोर्ट दाख़िल की। महासमर के समय जो सब्ज़ बाग़ दिखाया गया था, उससे लोग अत्यन्त आशान्वित हो गए थे। कितने ही तो भारत में किसी नवयुग के आने का स्वप्न देख रहे थे। परन्तु उपर्युक्त रिपोर्ट ने उनकी तमाम आशाओं पर पानी फेर दिया। फलतः कॉङ्ग्रेस ने बम्बई में अपना एक ख़ास अधिवेशन करके इस नवीन शासन-संस्कार को एक स्वर से अग्राह्य कर दिया।

इस समय भारत-रक्षा-क़ानून का ख़ूब दौर-दौरा था। अधिकांश विप्लवी जहाँ-तहाँ नज़रबन्द करके रक्खे गए थे, परन्तु विप्लववाद ने देश का पिण्ड नहीं छोड़ा। १९१६ की १९वीं जनवरी को कलकत्ते के मेडिकल कॉलेज के सामने आम रास्ते पर और दिन-दहाड़े एक पुलिस का दारोगा मार डाला गया। ३० जुलाई को डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट बसन्त चटर्जी मारा गया। इसके अलावा इसी साल ढाका, सिराजगञ्ज और वाजिदपुर में कई पुलिस-कर्मचारी विप्लववादियों द्वारा मारे गए थे।

१९१७ में बङ्गाल के बचे हुए विप्लववादियों ने आसाम में जाकर आश्रय लिया। पुलिस को इसकी ख़बर लग गई और गोहाटी में उनका स्थान घेर लिया गया। परन्तु विप्लववादियों ने आत्म-समर्पण नहीं किया। ख़ूब गोलियाँ चलीं और अन्त में कई घायल विद्रोही पुलिस द्वारा पकड़े गए और कई पुलिस की आँखों में धूल डाल कर उसी समय नौ-दो-ग्यारह हो गए। इन्हीं भागने वालों में नलिनी नाम का एक नौजवान था, जो कई स्थानों में भ्रमण करता हुआ ढाका पहुँचा! पुलिस ने उसका वासस्थान घेर लिया। नलिनी और उसके साथी तारिणी ने निकल भागने की कोशिश की, परन्तु कामयाब न हुए। तारिणी तो पुलिस की गोली खाकर वहीं ढेर हो गया और नलिनी घायल होने पर भी भाग खड़ा हुआ। परन्तु चोट क़रारी लग चुकी थी, इसलिए शीघ्र ही पकड़ लिया गया और अस्पताल में जाकर मरा। इस समय विप्लववादियों का दल छिन्न-भिन्न हो गया था। उनके कई दलपति पुलिस द्वारा पकड़ कर नज़रबन्द कर दिए गए थे। कोई सञ्चालन करने वाला न था।

इसके बाद नवीन शासन-संस्कार जारी हुआ। सरकार ने उदारता दिखाई। अधिकांश विप्लववादी छोड़ दिए गए। परन्तु उसके साथ ही महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन आरम्भ कर दिया, इसलिए विप्लववादियों ने अपनी चेष्टा स्थगित कर दी।
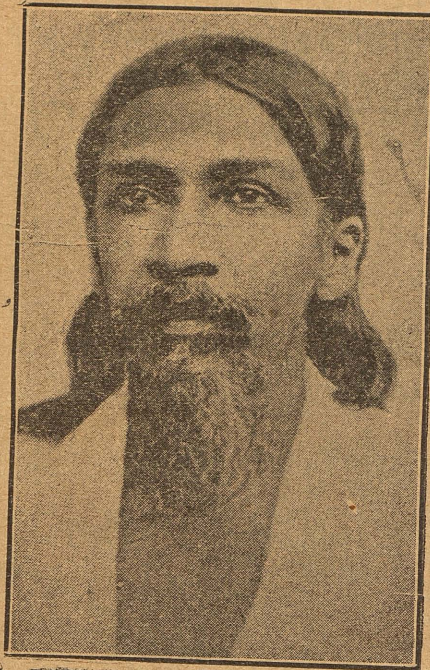
तपस्वी अरविन्द घोष

## रौलट-एक्ट

१९१८ से १९२४ तक राष्ट्रीय आन्दोलन की ख़ासी धूम थी। महासमर के अवसान के बाद भारत-रक्षा क़ानून उठा देने का समय आया। परन्तु राजसत्ता ऐसा करने के लिए तैयार न थी। उसने उसे स्थायी रूप देने के लिए एक कमिटी बैठाई। उसका नाम था, 'रौलट-कमिटी'। कुछ दिनों की जाँच-पड़ताल के बाद उसने रिपोर्ट दी कि विप्लव आन्दोलन को निर्मूल करने के लिए भारत-सरकार के हाथ में एक निरङ्कुश क्षमता की अत्यन्त आवश्यकता है। परन्तु देश ऐसी निरङ्कुश क्षमता देने के लिए तैयार न था। फलतः सारे देश में तीव्र असन्तोष का सञ्चार हुआ। १९१८ में कॉङ्ग्रेस का तैंतीसवाँ अधिवेशन दिल्ली में हुआ। पण्डित मदनमोहन मालवीय सभापति थे। रौलट कमिटी की रिपोर्ट का घोर विरोध हुआ, परन्तु सरकार ने इसकी कोई परवाह न की। कौन्सिल के भारतीय सदस्य भी चिल्लाते ही रह गए, परन्तु क़ानून पास ही कर डाला गया। सरकार के इस जनमत की उपेक्षा का जनता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। सारे देश ने एक स्वर से इसकी निन्दा की। महात्मा गाँधी ने इस आन्दोलन के सूत्रधार के रूप में खड़े होकर घोषणा की कि "रौलट-क़ानून भारतवासियों के न्यायसङ्गत और मनुष्यों के जन्मसिद्ध स्वाभाविक अधिकारों का बाधक है। इसलिए जब तक यह क़ानून उठा न लिया जाएगा, तब तक हम लोग सम्मिलित भाव से इस अपमानजनक और असङ्गत क़ानून का विरोध करते रहेंगे। हम लोग उपद्रवहीन नीति के अवलम्बन द्वारा इस क़ानून में बाधा प्रदान करेंगे।" देश ने इस घोषणा का अन्तःकरण से समर्थन किया और असहयोग आन्दोलन की नींव पड़ी। भारत ने एक सम्पूर्ण नवीन राजनीतिक मार्ग का अवलम्बन किया। इस घोषणा के अनुसार निश्चय हुआ कि आगामी ६ अप्रैल को सारे देश में हड़ताल की जावेगी। परन्तु फिर यह तारीख़ बदल कर १३ अप्रैल कर दी गई। इधर दिल्ली वालों ने ६ अप्रैल को ही हड़ताल कर दी। क्योंकि उन्हें तारीख़ बदली जाने की सूचना ठीक समय पर नहीं मिल सकी थी। अस्तु।

## जलियाँवाले बाग़ का हत्या-काण्ड

दिल्ली की पुलिस ने यह आकस्मिक भीड़-भाड़ देख कर उस पर गोली चला दी। इससे लोग और भी असन्तुष्ट हुए। प्रतिवाद-स्वरूप अमृतसर के जलियाँवाले बाग़ में एक सभा हुई। उस समय सर माईकेल ओडायर बहादुर पञ्जाब के गवर्नर थे। उनकी आज्ञा और परामर्श से जनरल डायर नाम के एक फ़ौजी अफ़सर ने जलियाँवाले बाग़ की सभा पर गोलियों की वर्षा कर दी। कितने ही मारे गए और कितने ही घायल हुए। सारे देश में एक कुहराम-सा मच गया। जनरल डायर के इस अमानुषिक काण्ड से देशवासी इतने निराश हुए कि उन्हें प्रतिवाद, प्रस्ताव और वैध आन्दोलन पर विश्वास ही नहीं रहा।

इस साल कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में हुआ। सभापति का आसन स्वनामधन्य स्वर्गवासी पण्डित मोतीलाल जी नेहरू ने ग्रहण किया। इस अधिवेशन से पहले ही सरकार द्वारा नवीन शासन-संस्कार की घोषणा हो चुकी थी, इसलिए महात्मा गाँधी और पण्डित मदनमोहन मालवीय की सलाह से कॉङ्ग्रेस ने निश्चय किया, कि यद्यपि यह शासन-संस्कार सन्तोषजनक नहीं है, तथापि इसे स्वीकार कर लेना चाहिए। महात्मा जी को आशा थी कि इङ्गलैण्ड ओडायरी अत्याचार का प्रतिकार करेगा, इसलिए उसकी जाँच के लिए एक निरपेक्ष कमिटी बैठाने की माँग भी पेश की गई। परन्तु सरकार ने इस पर भी कान नहीं दिया। अन्त में जब कमिटी के लिए चारों ओर से घोर पुकार हुई तो 'हण्टर कमिटी' बैठाई गई। महात्मा गाँधी आदि कई भारतीय नेता भी इस कमिटी में शामिल हुए। सरकार से कहा गया, कि पञ्जाब के कई नेता, जो जनरल डायर के 'मार्शल-लॉ' के कारण जेलों में हैं, उनकी भी गवाहियाँ ली जाएँ। परन्तु सरकार ने इसे स्वीकार नहीं किया। इधर हण्टर साहब की कमिटी निरपेक्षिता को बालाए-

ताक़ रख कर जाँच करने में लगी। इसलिए कॉङ्ग्रेसी नेता कमिटी से अलग हो गए और उन्होंने स्वतन्त्र रूप से जाँच आरम्भ की। डायरी और ओडायरी अत्याचार का पर्दाफ़ाश हो गया। परन्तु इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट ने अत्यन्त निर्विकार चित्त से इस अमानुषिक अत्याचार का समर्थन कर दिया।

## असहयोग आन्दोलन

महासमर के समय इङ्गलैण्ड के प्रधान-मन्त्री महोदय ने मुसलमानों को आश्वासन प्रदान किया था, कि लड़ाई के कारण उनकी ख़िलाफ़त को कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया जाएगा। तुर्क साम्राज्य में भी किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होगा। किन्तु महासमर समाप्त होते ही वे अपनी प्रतिश्रुति को एकदम भूल गए। इसलिए भारतीय मुसलमानों में भी तीव्र असन्तोष का सञ्चार हुआ। न्यायान्तर न देख कर, महात्मा गाँधी ने असहयोग का भेरी निनाद किया। १९२० के सितम्बर में कलकत्ते में कॉङ्ग्रेस का एक विशेष अधिवेशन हुआ। पञ्जाब-केसरी स्व० लाला लाजपतराय उसके सभापति बनाए गए। देशबन्धु दास, श्री० विपिनचन्द्र पाल और पण्डित मदनमोहन मालवीय जैसे धुरन्धर नेताओं के विरोध करने पर भी असहयोग-सम्बन्धी प्रस्ताव पास हो गया। महात्मा गाँधी की विजय हुई।

इसके कुछ दिन बाद अर्थात् दिसम्बर में कॉङ्ग्रेस का नियमित अधिवेशन नागपुर में हुआ। जो देशबन्धु कॉङ्ग्रेस के विशेष अधिवेशन के समय असहयोग के विरोधी थे, उन्होंने ही वहाँ असहयोग-सम्बन्धी प्रस्ताव उपस्थित किया। बाइस हज़ार जनता के सामने कॉङ्ग्रेस की ओर से घोषणा की गई कि—

"सर्व प्रकार वैध और शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा अपने बाहुबल से स्वराज्य लाभ करना ही कॉङ्ग्रेस का उद्देश्य है।"

बड़े धूमधाम से असहयोग आन्दोलन आरम्भ हुआ। विलायती वस्तुओं का बहिष्कार, स्कूल-कॉलेजों का बहिष्कार और अदालतों के बहिष्कार की धूम मच गई। हज़ारों विद्यार्थी कॉलेज और स्कूल छोड़ कर असहयोग की पताका के नीचे आ गए। तिलक स्वराज-फ़ण्ड में कई लाख रुपए आए। विलायती वस्त्रों की होलियाँ भी ख़ूब जलीं। सरकार घबरा उठी। बड़े लाट ने कहा, मैं तो किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गया हूँ। आन्दोलनकारियों से जेलख़ाने भर गए। समस्त नेता पकड़ कर जेलों में ठेल दिए गए। प्रायः साल भर तक यही हालत रही।

१९२१ में, स्व० हकीम अजमल ख़ाँ की अध्यक्षता में कॉङ्ग्रेस का पैंतीसवाँ अधिवेशन अहमदाबाद में हुआ। इस कॉङ्ग्रेस के सभापतित्व के लिए स्व० देशबन्धु दास चुने गए थे, परन्तु सरकार ने उन्हें पहले ही पकड़ कर छः महीने के लिए जेल भेज दिया था, इसलिए हकीम साहब सभापति बनाए गए। इस कॉङ्ग्रेस में असहयोग और शान्तिपूर्ण क़ानून-भङ्ग का प्रस्ताव फिर से स्वीकार किया गया था। कॉङ्ग्रेस के सभी उत्साही कार्यकर्ता गिरफ़्तार हो चुके थे, इसलिए महात्मा गाँधी जी राष्ट्रीय आन्दोलन के एक मात्र कर्णधार बना दिए गए। मौ० हसरत मोहानी ने इस कॉङ्ग्रेस में एक पूर्ण स्वतन्त्रता-सम्बन्धी प्रस्ताव उपस्थित किया था। परन्तु यह स्वीकृत नहीं हुआ।

इस अहमदाबादी अधिवेशन के बाद सारे देश में 'क़ानूनतोड़' आन्दोलन आरम्भ हुआ। महात्मा जी करबन्दी के लिए बारदोली ताल्लुक़े को जगाने में लगे। वह बारदोली द्वारा असहयोग की समस्त विधियों की पूर्ति करा कर सारे भारतवर्ष के लिए एक आदर्श खड़ा करना चाहते थे। परन्तु इसी समय गोरखपुर के चौरीचौरा नामक स्थान में एक भयङ्कर दुर्घटना हो गई। पुलिस के अत्याचारों से ऊब कर वहाँ के अधिवासियों ने अपना संयम खो दिया और ईंट का जवाब पत्थर से देने पर उतारू होगए। पुलिस का एक थाना जला दिया गया और कुछ कर्मचारी मार डाले गए। महात्मा जी का सारा सङ्कल्प व्यर्थ हो गया। उन्होंने आन्दोलन को अनिर्दिष्ट काल के लिए स्थगित कर दिया।

मौलाना हसरत मोहानी

इसके बाद नेताओं ने निश्चय किया कि देश शान्तिपूर्ण प्रतिरोध आन्दोलन के लिए प्रस्तुत है या नहीं, इस बात की जाँच के लिए एक कमिटी बनाई जाय। वही हुआ, कमिटी बन गई। जाँच आरम्भ हुई। कई महीने के बाद उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई। कमिटी ने निश्चय किया कि देश तैयार नहीं है, इसलिए कौन्सिलों पर अधिकार करके अन्दरूनी आन्दोलन आरम्भ किया जाए। देशबन्धु दास आदि और कई नेताओं ने भी जेल से निकलने पर इसी मत का अवलम्बन किया। इधर महात्मा गाँधी राजद्रोह प्रचार के अपराध में कई वर्षों के लिए जेल जा चुके थे। राष्ट्रवादियों में दो विचार-धाराएँ बह रही थीं। एक दल कौन्सिल-प्रवेश का पक्षपाती बना और दूसरा अपरिवर्तनवादी ( No-changer ) कहलाया।

## स्वराजपार्टी का आविर्भाव

१९२२ में कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन गया में हुआ था। सभापति के आसन पर स्व० देशबन्धु सी० आर० दास विराजमान थे। दोनों दलों में तुमुल द्वन्द्व चला। परन्तु अन्त में कौन्सिल विरोधियों की ही जीत रही। श्री० दास कौन्सिलों में जाने के पक्ष में थे। इसलिए कॉङ्ग्रेस के सभापतित्व से इस्तीफ़ा देकर उन्होंने पं० मदनमोहन मालवीय आदि के साथ अपना एक अलग दल बनाया और उसका नाम रक्खा गया 'स्वराज दल'। इस दलबन्दी के कारण कॉङ्ग्रेस का कार्य ढीला पड़ गया। कुछ लोगों ने सुलह-समझौते की चेष्टा की, परन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ।

गया के बाद कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन दिल्ली में हुआ। ताज़ा-ताज़ा जेलख़ाने से आए हुए मौलाना मुहम्मदअली ने प्रस्ताव उपस्थित किया कि बाधा प्रदान करने के लिए स्वराज दल कौन्सिलों में जा सकता है। प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया। स्वराज-दल ने बड़े उत्साह से कौन्सिलों में जाने की तैयारियाँ आरम्भ कर दीं।

## पुनः विप्लव-काण्ड

असहयोग काल में सारा देश स्वतन्त्रता-आन्दोलन में लगा था, इसलिए विप्लवपन्थियों ने अपना आन्दोलन बन्द कर रक्खा था। परन्तु असहयोग के विफल होते ही, उन्होंने फिर अपना कार्य आरम्भ कर दिया। वे एक दिन ( ता० ३ अगस्त १९२३ ) शाखारी टोला ( कलकत्ता ) के पोस्ट ऑफ़िस में पहुँचे और पिस्तौल दिखा कर ख़ज़ाना लूटने की चेष्टा की। परन्तु कुछ हाथ न लगा। अन्त में पोस्ट-मास्टर को मार कर वे वहाँ से चलते बने। इसी सम्बन्ध में वरेन्द्र नाम का एक नवयुवक गिरफ़्तार हुआ था और उसे फाँसी की सज़ा दी गई। परन्तु अन्त में सरकार ने सज़ा बदल कर आजीवन के लिए उसे कालापानी भेजा था। इस हत्याकाण्ड के सम्बन्ध में एक षड्यन्त्र केस भी चलाया गया था। परन्तु अन्त में सभी अभियुक्त मुक्त कर दिए गए थे।

१२ जनवरी को गोपीमोहन साहा नाम के एक विद्रोही ने, कलकत्ता के चौरङ्गी रोड पर मि० डे नाम के एक अङ्गरेज़ को मार डाला था। वह मारने गया था कलकत्ते के पुलिस-कमिश्नर सर चार्ल्स टेगार्ट को, परन्तु धोखे में पड़ गया। इसे फाँसी की सज़ा दी गई थी।

गोपीमोहन की फाँसी के सम्बन्ध में बङ्गाल के कॉङ्ग्रेसियों में एक प्रबल मतभेद उठ खड़ा हुआ था। सिराजगञ्ज में प्रादेशिक राजनीतिक कॉन्फ़्रेन्स का जलसा था। तरुण-दल चाहता था कि गोपीमोहन की देश-भक्ति की प्रशंसा की जाए। परन्तु अहिंसावादी दल इसके विरुद्ध था। अन्त में प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। इस पर ऐङ्गलो इण्डियन अख़बार अत्यन्त नाराज़ हुए। महात्मा गाँधी ने भी एक लेख लिख कर इस प्रस्ताव की कड़ी निन्दा की थी। ख़ैर, दूसरे साल जब फ़रीदपुर में उक्त प्रादेशिक कॉन्फ़्रेन्स का अधिवेशन हुआ तो वह प्रस्ताव वापस ले लिया गया।

३१ जुलाई १९२४ को कलकत्ता के मिर्ज़ापुर स्ट्रीट में एक पिस्तौलधारी युवक गिरफ़्तार किया गया। पूछने पर उसने बताया कि इसी स्ट्रीट के शिशिरकुमार नाम के एक दूकानदार ने यह

# राष्ट्रीय झण्डाभिवादन
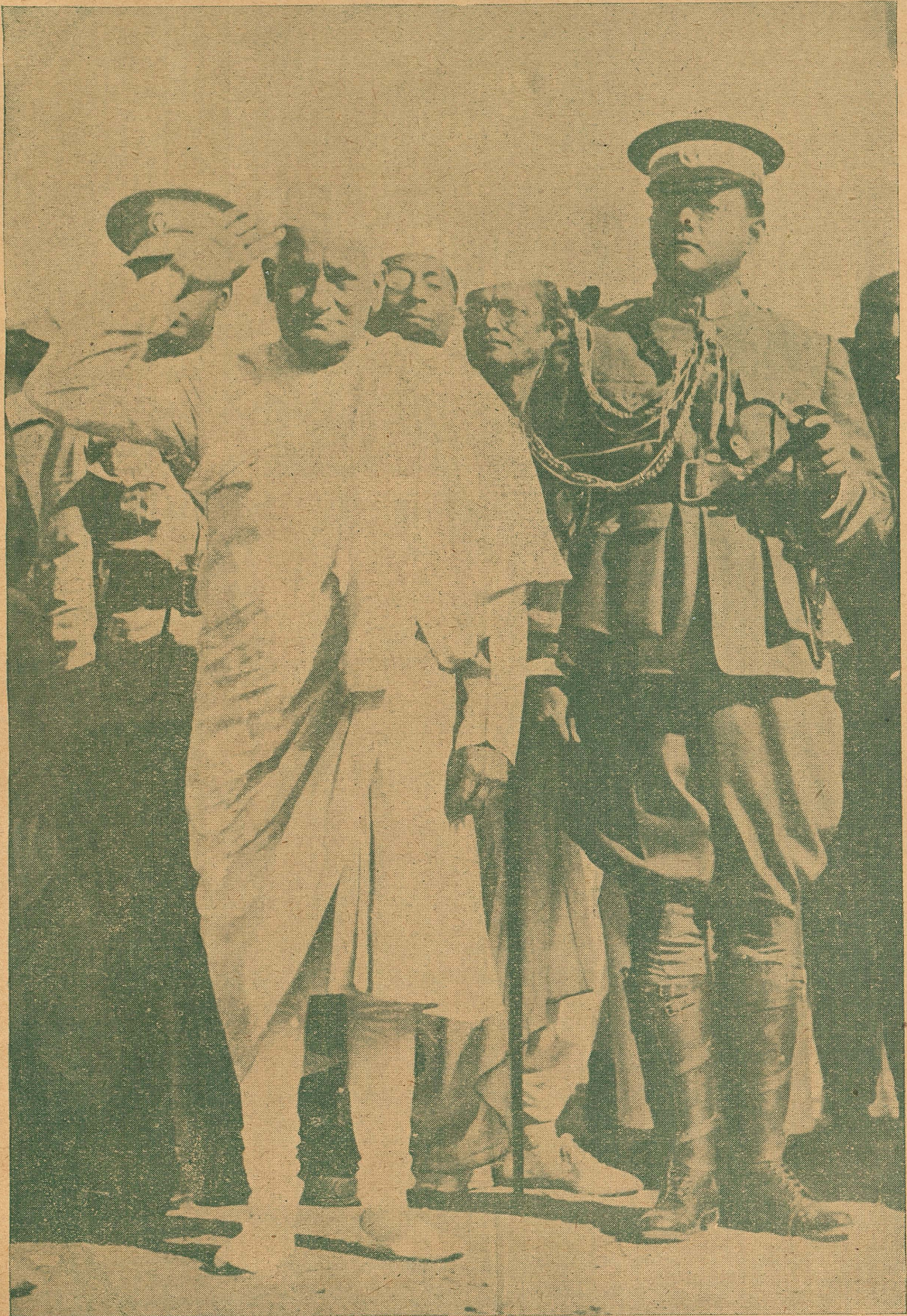
कलकत्ता कांग्रेस के प्रारम्भ होने के पहिले राष्ट्रपति स्वर्गीय पं० मोतीलाल जी नेहरू राष्ट्रीय झण्डे के प्रति सम्मान प्रकट कर रहे हैं। उनकी बग़ल में फ़ौजी पोशाक में प्रधान सेनापति ( General Officer Commanding ) श्री० सुभाषचन्द्र बोस खड़े हैं।

# राष्ट्रीय संग्राम के कुछ उत्साही सैनिकों का स्वागत

**अभिनन्दन कर रहा मौन या वाणी से सारा संसार ! पहनाते हैं तुमको हम अनुराग-भरे हृदयों का हार !!**
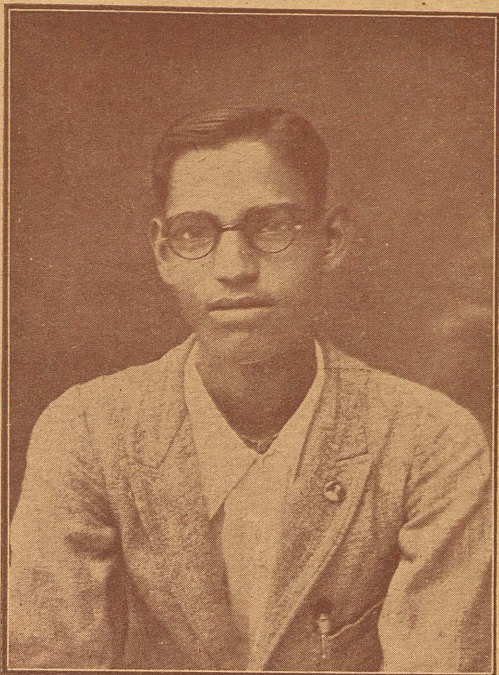
जबलपुर की शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर—श्री० सवाईमल जी, जो हाल ही में जेल से मुक्त हुए हैं।

बम्बई के सब-प्रथम क्रिश्चियन—श्री० जॉर्ज लुईस, जो सत्याग्रह संग्राम में जेल गए थे।

बटाला ( पञ्जाब ) के वकील—पं० श्रीनाथ भनोट, जिन्हें राज-विद्रोह के अभियोग में एक वर्ष की सज़ा दी गई थी।

राणपुर ( काठियावाड़ ) से प्रकाशित होने वाले सुप्रसिद्ध 'सौराष्ट्र' के सम्पादक—श्री० अमृतलाल दलपतभाई सेठ, जो हाल ही में जेल से मुक्त हुए हैं।
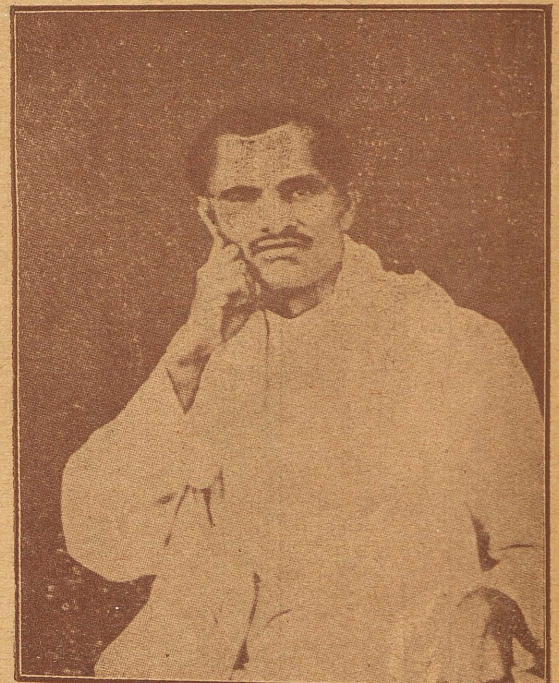
बम्बई के प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस-बुलेटिन के प्रथम सम्पादक—श्री० जयन्त दलाल, जिन्हें दो वर्ष की सख़्त सज़ा दी गई थी।
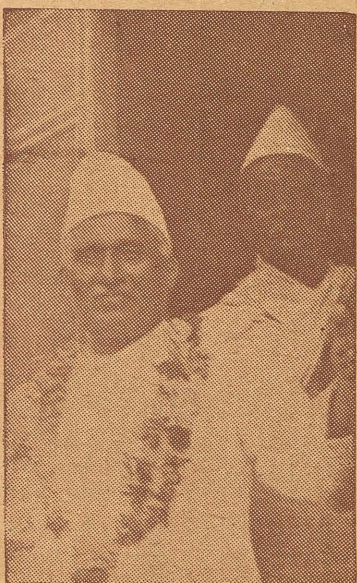
योतमाल ( मध्य प्रान्त ) के सुप्रसिद्ध नेता—डॉक्टर बी० एम० ताम्बे, जिन्हें ९ मास का दण्ड दिया गया था।

मुरादाबाद कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर और मन्त्री—श्री० हृदयनारायण जी, बी० एस-सी०, एल्-एल्० बी०, जो हाल ही में छूट कर आए हैं।
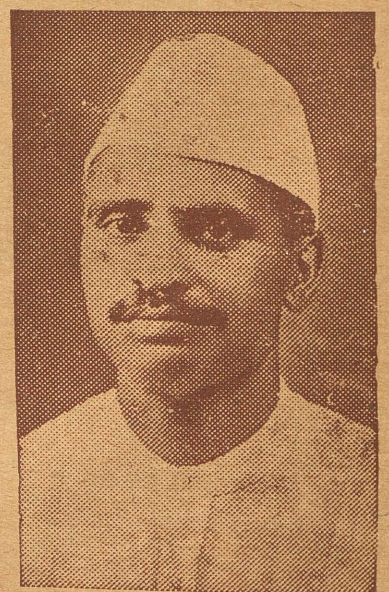
अहमदनगर ज़िले के डिक्टेटर, जिन्हें सत्याग्रह-आन्दोलन में ६½ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया था।

# राष्ट्रीय संग्राम के कुछ उत्साही सैनिकों का स्वागत

**अभिनन्दन कर रहा मौन या वाणी से सारा संसार ! पहनाते हैं तुमको हम अनुराग-भरे हृदयों का हार !!**
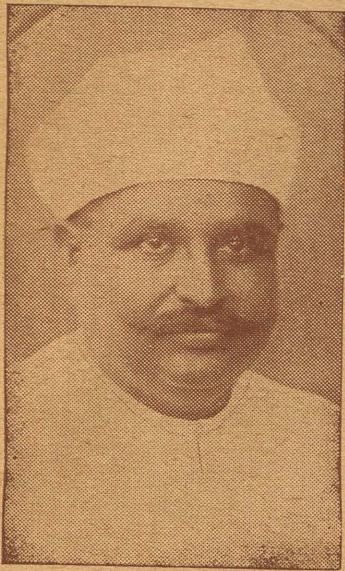
कोयम्बटूर कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर—श्री० वेलप्पा नायडू, जो हाल ही में जेल से छूट कर आए हैं।

महात्मा जी की नज़रबन्दी के पश्चात् 'नवजीवन' का सञ्चालन करने वाले—श्री० मोहनलाल भट्ट, जिन्हें चार मास की सख़्त सज़ा दी गई थी।
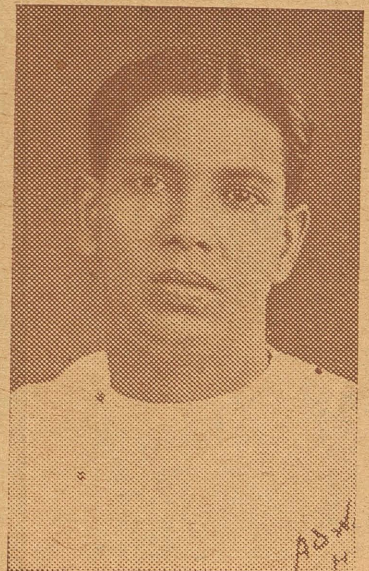
धारवाड़ और हुबली कॉङ्ग्रेस कमिटियों के डिक्टेटर—श्री० गुरुराज उदयपिथर, जिन्हें छः मास का कठिन कारावास-दण्ड मिला था।
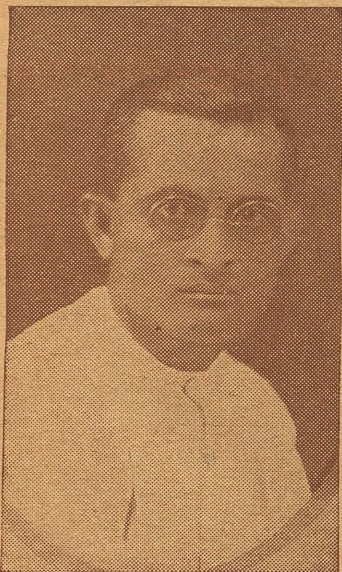
बम्बई के राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता—श्री० बी० एन० माहेश्वरी, जो वर्तमान आन्दोलन में दूसरी बार जेल भेजे गए थे।
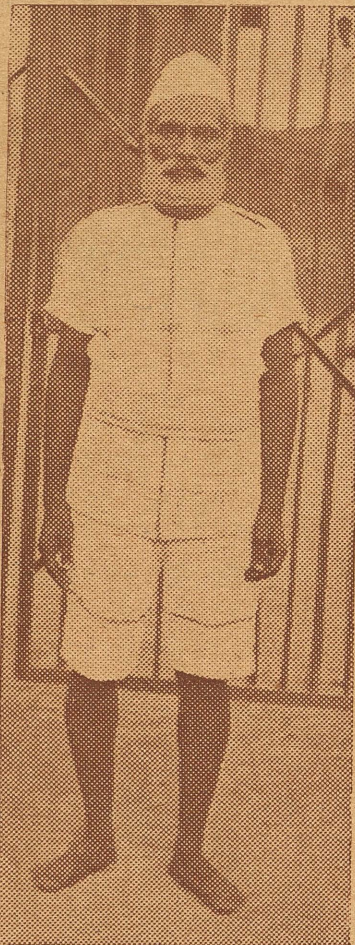
नीमार ( सी० पी० ) ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर—श्री० बाबू तोताराम जी सुखदाने, जिन्हें जङ्गल-क़ानून तोड़ने के अपराध में तीन मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया था।
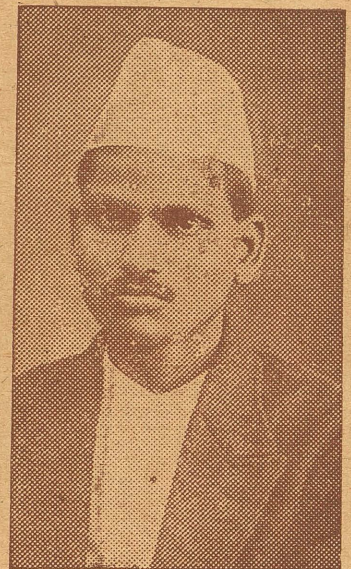
हिन्दुस्तानी सेवा-दल के मन्त्री—श्री० बी० एन० मालगी, जिन्हें चार मास का दण्ड दिया गया था।
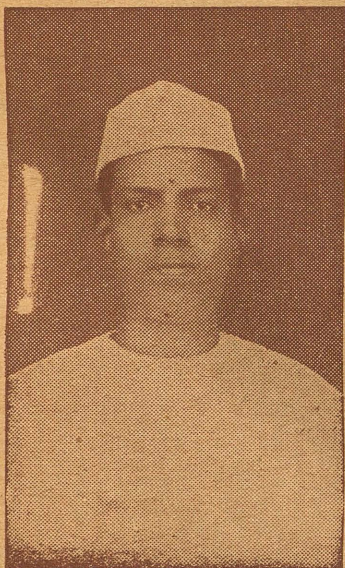
तैमिल-नैडू कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व उप-प्रधान, जिन्हें एक वर्ष की सज़ा दी गई थी।
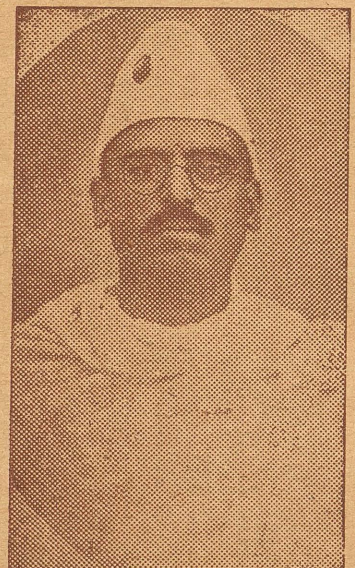
बेलारी कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री—श्री० राघवेन्द्र राव, जिन्हें एक वर्ष की सज़ा हुई थी।

# भारतीय महासभा के भूतपूर्व महारथी

स्वर्गीय मौलाना मुहम्मदअली—सन् १९२३
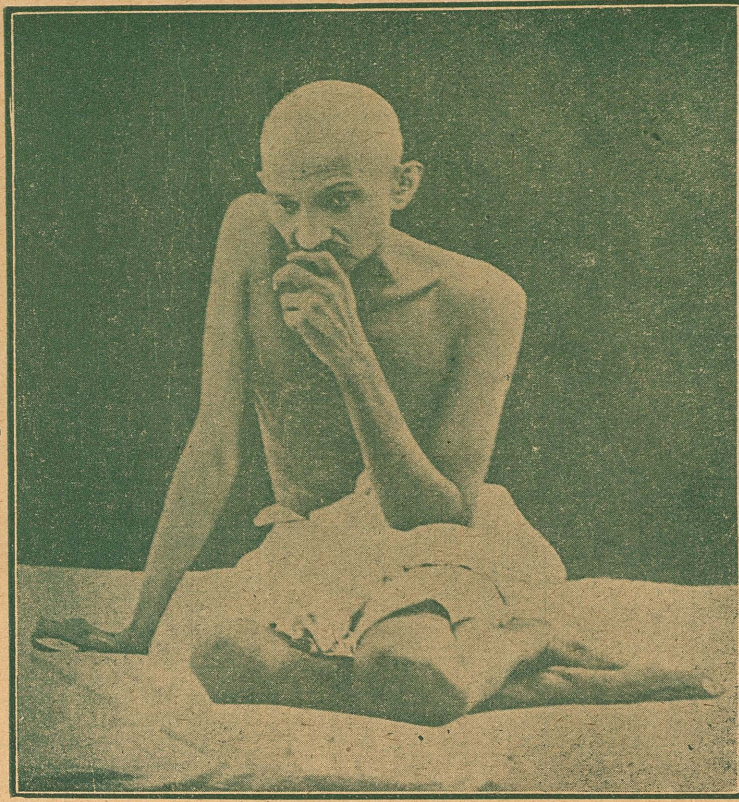
महात्मा गाँधी—सन् १९२४

स्वर्गीय लाला लाजपतराय सन्—१९२०
(विशेष अधिवेशन)

मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद—सन् १९२३
(विशेष अधिवेशन)
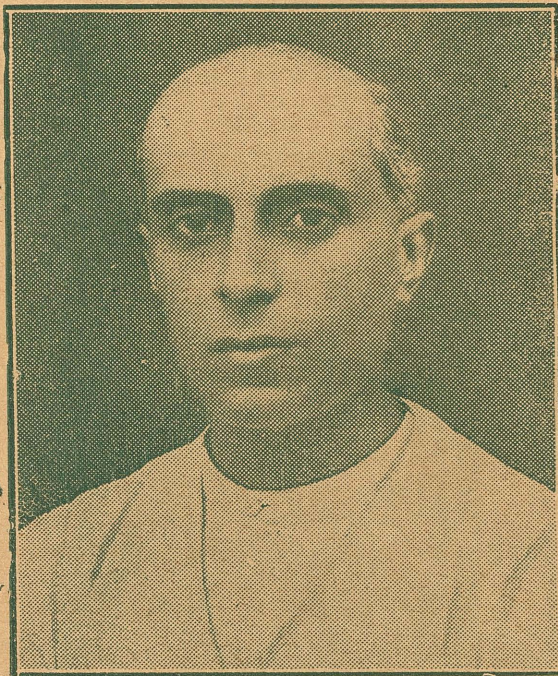
पं० जवाहरलाल नेहरू—सन् १९३०

स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू—सन् १९१९—१९२८

डॉक्टर अन्सारी—सन् १९२७

श्रीमती सरोजिनी नायडू—सन् १९२५

पं० मदनमोहन मालवीय—सन् १९०९—१९१८

पिस्तौल मुझे दिया है। पुलिस ने उस दूकान की तलाशी ली, परन्तु कुछ हाथ नहीं लगा। दूसरे दिन उस दूकान पर एक बम गिरा और एक दूकानदार मर गया। पुलिस ने शान्तिलाल नाम के एक आदमी को सन्देह में गिरफ़्तार किया और अन्त में वह छोड़ दिया गया। परन्तु छूटने के कई दिन बाद बेलियाघाटा के स्टेशन के पास रेलवे लाइन पर उसकी लाश पाई गई थी।

१९२३ में विप्लवपन्थियों ने चटगाँव में एक दूकान से १७,००० रुपए लूट लिए। एक दारोग़ा ने इस सम्बन्ध में, एक आदमी को गिरफ़्तार किया था, जो कुछ दिनों बाद किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा, मार डाला गया था।

१९२४ में कलकत्ता और फ़रीदपुर में पुलिस ने दो बम बनाने के कारख़ानों का पता लगाया था। यह देख कर बङ्गाल की सरकार ने एक ऑर्डिनेन्स जारी किया और उसके अनुसार ६३ आदमी नज़रबन्द किए गए। इसके सिवा सन् १९२२ के तीसरे रेगुलेशन के अनुसार भी १९ आदमी नज़रबन्द थे। इनमें श्री० सुभाषचन्द्र बोस, श्री० सत्येन्द्रचन्द्र मित्र और श्री० अनिलबरण राय भी शामिल थे।

१९०५ में कलकत्ते के पास दक्षिणेश्वर नामक स्थान में एक बम का कारख़ाना पकड़ा गया था। इसी सम्बन्ध में एक षड्यन्त्र का मामला भी चला था, जिसमें कई नवयुवकों को कई साल की सख़्त सज़ाएँ दी गई थीं।

## जेल में हत्या

दक्षिणेश्वर बम विभ्राट् के क़ैदी अलीपुर के प्रेज़िडेन्सी जेल में थे। २८ मई, सन् १९२८ को रायबहादुर भूपेन्द्रनाथ चटर्जी नाम का एक पुलिस-अफ़सर वहाँ किसी काम के लिए गया था। क़ैदियों ने उसे वहीं मार डाला। इस मामले में दो अपराधी फाँसी पर लटकाए गए और बाक़ी आठ आजीवन के लिए कालेपानी भेजे गए थे।

## असहयोग का अन्त

१९१४ में कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन बेलगाँव में हुआ था। उस समय महात्मा गाँधी जेलख़ाने से आ गए थे। उन्होंने ही सभापति का आसन सुशोभित किया। इस कॉङ्ग्रेस में असहयोग-नीति स्थगित की गई और स्वराजियों की नीति बहाल रक्खी गई, अर्थात् उन्हें कॉङ्ग्रेस के नाम पर कौन्सिलों में जाने का अधिकार प्राप्त हो गया। इसके बाद महात्मा गाँधी ने अपनी सारी शक्ति चर्खा और खद्दर के प्रचार में लगा दी।

उन दिनों भारत के प्रधान-मन्त्री लॉर्ड बर्केनहेड थे। उनके और स्वराज-पार्टी के साथ समझौते की बातचीत चल रही थी। परन्तु अन्त में लॉर्ड बर्केनहेड ने कोरा जवाब दे दिया। देशबन्धु इससे बहुत हताश हुए और इस घटना के कुछ दिन बाद ही दार्जिलिङ्ग में उनकी मृत्यु हो गई। १९२५ में कानपुर में और १९२६ में गोहाटी में कॉङ्ग्रेस के अधिवेशन हुए, पर इन दोनों अधिवेशनों में कोई विशेष उल्लेख योग्य बात नहीं हुई। केवल हिन्दू-मुसलमानों का विरोध मिटाने की कुछ चेष्टाएँ हुई थीं। १९२७ में मि० जिन्ना ने मेल-मिलाप के लिए मुसलमानों की ओर से चौदह शर्तें पेश की थीं, तब से आज तक वही इस सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस का आलोच्य विषय है।

## साइमन कमीशन

मॉण्टेगू चेम्सफ़ोर्ड रिफ़ॉर्म जारी करने के समय कहा गया था, कि इस विधान के अनुसार कार्य करके अगर भारतवासी अपनी योग्यता का परिचय देंगे, तो दस वर्ष के बाद इसकी दूसरी क़िस्त भी उन्हें दी जाएगी। इस वादे को पूरा करने के लिए इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट ने साइमन कमीशन की नियुक्ति की। उद्देश्य था, भारतवासियों की योग्यता की जाँच करना। भारतवासियों ने इस कमीशन का एक स्वर से बहिष्कार किया। जहाँ-जहाँ कमीशन गया, वहाँ-वहाँ लोगों ने काले झण्डे और मातमी जुलूस निकाल कर उसका निरादर किया। अन्त में सब दल के भारतीय राजनीतिज्ञों के सहयोग से एक शासन-विधान तैयार किया गया। इसके लिए स्वर्गवासी पण्डित मोतीलाल जी नेहरू की अध्यक्षता में एक 'नेहरू कमिटी' बिठाई गई थी। उसने एक विधान तैयार किया, जो कलकत्ते की कॉङ्ग्रेस में स्वीकृत हुआ था। इस कॉङ्ग्रेस के सभापति स्वयं पण्डित जी थे। इससे वहीं सर्वदल सम्मेलन भी हुआ था, उसमें मुसलमानों तथा सिक्खों ने इस विधान का विरोध किया था। क्योंकि वे अपने लिए कुछ विशेष अधिकार चाहते थे और हिन्दू उन विशेष अधिकारों के विरोधी थे। ख़ैर, कलकत्ते की यह कॉङ्ग्रेस विशेष महत्वपूर्ण थी। इसमें प्रस्ताव पास हुआ कि अगर साल भर के अन्दर सरकार नेहरू रिपोर्ट के विधानानुसार भारत को औपनिवेशिक स्वराज न प्रदान करेगी, तो अगले साल की १ली जनवरी को कॉङ्ग्रेस पूर्ण स्वतन्त्रता को अपना ध्येय बनाएगी।

## स्वतन्त्रता की घोषणा

परन्तु सरकार ने इस प्रस्ताव की ओर ध्यान नहीं दिया। वह साइमन कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार ही कार्य करना चाहती थी। बड़े लाट साहब ने यह कहा भी था कि भारत को औपनिवेशिक स्वराज प्रदान करना ही पार्लामेण्ट का उद्देश्य है। परन्तु वह कब तक मिलेगा, यह नहीं कहा जा सकता।

इसके बाद कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन लाहौर में हुआ। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने सभापति का आसन सुशोभित किया। कलकत्ता कॉङ्ग्रेस के प्रस्ताव के अनुसार गत ३१ दिसम्बर १९३० की आधी रात के बाद कॉङ्ग्रेस ने अपना ध्येय पूर्ण स्वतन्त्रता विघोषित कर दिया। यह देख कर सरकार कुछ घबराई। अधिकारियों ने इस प्रस्ताव की हँसी उड़ाई, धमकियाँ दीं और अन्त में राउण्डटेबुल कॉन्फ़्रेन्स की चर्चा आरम्भ हुई। इधर कॉङ्ग्रेस ने सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ किया। इसके बाद जो हुआ, वह अभी असमाप्त है।

## कर्ज़न वेली की हत्या

इस लेख के आरम्भ में हम लन्दन में एक इण्डिया हाउस नाम की संस्था की स्थापना का ज़िक्र कर चुके हैं। १ जुलाई, सन् १९०९ को इस हाउस के सदस्य श्री० मदनलाल ढींगरा ने ब्रिटिश सरकार के इण्डिया-हाउस के पोलिटिकेल ए० डी० सी० कर्नल सर विलियम कर्ज़न वेली को गोली से मार दिया। इसे फाँसी की सज़ा दी गई थी। इसने अपने अदालती बयान में कहा था, कि भारतीय नवयुवकों को जिस अमानुषिक ढङ्ग से निर्वासन-दण्ड और फाँसी आदि की सज़ाएँ दी जा रही हैं, उसके सामान्य प्रतिवाद-स्वरूप मैंने जान-बूझ कर एक अङ्गरेज़ का रक्त बहाया है। श्री० ढींगरा अमृतसर ज़िले का रहने वाला था। इसका जन्म एक पञ्जाबी क्षत्रिय-वंश में हुआ था। यहाँ से बी० ए० पास करके बैरिस्टरी पास करने वह इङ्गलैण्ड गया हुआ था।

## कुछ और विप्लवी कार्य

नासिक के श्री० विनायक दामोदर सावरकर के भाई श्री० गणेश दामोदर सावरकर को आजीवन द्वीपान्तर की सज़ा दी गई। नासिक के मैजिस्ट्रेट मि० जैकसन ने इन्हें दौरा सुपुर्द किया था। एक दिन मि० जैकसन किसी भोज-सभा में बैठे थे, वहीं किसी ने उन्हें गोली मार दी। इस घटना के बाद नासिक षड्यन्त्र नाम का एक विराट मामला चला। ३८ अभियुक्तों में से २७ को सज़ाएँ हुईं, जिनमें तीन मि० जैकसन की हत्या करने के अपराध में फाँसी पर लटकाए गए।

इसी साल के नवम्बर महीने में बड़े लाट साहब अपनी लेडी साहबा के साथ अहमदाबाद गए तो उनकी गाड़ी में एक बम फेंका गया। परन्तु वह फटा नहीं, इसलिए लाट-दम्पति सही-सलामत बच गए।

## संयुक्तप्रान्त में विप्लव का श्रीगणेश

१९०७ में इलाहाबाद से 'स्वराज' नाम का एक पत्र निकलता था। यह क्रान्ति का प्रचारक था। इसी के जन्मकाल से संयुक्त-प्रान्त में भी क्रान्तिकारी भावों का प्रचार आरम्भ हुआ। शान्तिनारायण नाम का एक पञ्जाबी युवक इस पत्र का प्रवर्तक था। मुज़फ़्फ़रपुर हत्याकाण्ड के बाद तीव्र लेख प्रकाशित करने के कारण उसे कठोर कारावास की सज़ा दी गई थी। इसके बाद आठ सम्पादकों ने मिल कर इस पत्र का सम्पादन आरम्भ किया, जिनमें तीन को कारावास की सज़ा दी गई थी। सन् १९१० में प्रेस-क़ानून के कारण यह अख़बार सदा के लिए बन्द हो गया। सन् १९०९ में इलाहाबाद से श्री० सुन्दरलाल ने 'कर्मयोगी' नाम का एक साप्ताहिक पत्र हिन्दी में निकाला था। यह भी कई अंशों में उसी पथ का पथिक था। ख़ूब फड़कते हुए लेख प्रकाशित होते थे। संयुक्त प्रान्त के जातीय उत्थान में इस पत्र से बड़ी सहायता मिली थी। प्रेस-क़ानून के कारण इसका भी अस्तित्व विनष्ट हुआ।

१९०८ में श्री० होतीलाल वर्मा ने अलीगढ़ के छात्रों में राजद्रोह का प्रचार किया था, इसलिए

उन्हें दस साल तक कालापानी निवास का दण्ड दिया गया।

## बनारस षड्यन्त्र

इसके बाद बनारस षड्यन्त्र की बारी आई। कई पञ्जाबी नवयुवकों ने संयुक्त प्रान्त में विप्लव आन्दोलन आरम्भ किया था। परन्तु उन्हें सफलता नहीं प्राप्त हुई। इसके बाद बङ्गाली विप्लववादियों का आविर्भाव हुआ और वे ही यहाँ कुछ सफल भी हुए। सन् १९०८ में श्री० शचीन्द्रनाथ सान्याल ने काशी के बङ्गाली टोले में एक 'अनुशीलन समिति' की स्थापना की। १९१३ तक इस संस्था का कार्य निर्विघ्न रूप से चलता रहा। परन्तु इसके बाद पारस्परिक मतभेद के कारण श्री० शचीन्द्र ने 'युवक समिति' नाम की एक दूसरी संस्था का निर्माण किया। विप्लववाद का प्रचार करना ही इस समिति का भी उद्देश्य था। शचीन्द्र ने कलकत्ते के विप्लववादियों के साथ सम्बन्ध स्थापित कर अपने उद्देश्य की पूर्त्ति आरम्भ की। सन् १९१४ में श्री० रासबिहारी बोस ने कलकत्ते से आकर इस संस्था का सञ्चालन-भार ग्रहण किया। श्री० रासबिहारी दिल्ली और लाहौर षड्यन्त्र का फ़रार अभियुक्त था। परन्तु पुलिस की आँखों में धूल झोंक, निर्विघ्न रूप से काशी में रहने लगा। इसी समय महाराष्ट्र का विप्लवी युवक श्री० विष्णुगणेश पिङ्गले से रासबिहारी की जान-पहचान हुई। श्री० शचीन्द्र अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए पञ्जाब चला गया और अमेरिका की ग़दर पार्टी से सम्बन्ध स्थापित कर भारतव्यापी विप्लव की तैयारी करने में लगा। इधर रासबिहारी भारत छोड़ कर विदेशों में कार्य करने के लिए चला गया। यहाँ का काम श्री० शचीन्द्र और श्री० नगेन्द्रनाथ दत्त ( जो विप्लवी दल में 'गिरिजा दादा' के नाम से प्रसिद्ध था ) सँभालते रहे। परन्तु कुछ दिनों के बाद ही बनारस षड्यन्त्र-केस में ये लोग पकड़ लिए गए। इस मामले में बहुत से विप्लववादियों को सज़ाएँ हुई थीं और इसके बाद जब 'मॉण्टेगू-चेम्सफ़र्ड' शासन-संस्कार का प्रवर्तन हुआ तो सरकार ने मेहरबानी करके इन्हें छोड़ दिया था। श्री० नगेन्द्रनाथ का जेलखाने में ही देहान्त हो गया।

## काकोरी काण्ड

असहयोग आन्दोलन की विफलता के बाद विप्लवपन्थियों ने फिर सिर उठाया। श्री० शचीन्द्र आदि ने फिर एक नए दल का सङ्गठन कर डाला। इस दल का प्रधान केन्द्रस्थान लखनऊ बनाया गया। देश ने इस दल का पहले-पहल परिचय प्राप्त किया था, ९ अगस्त सन् १९२५ को। उसी दिन अवध रुहेलखण्ड रेलवे के काकोरी स्टेशन पर रेलगाड़ी रोक कर सरकारी खज़ाना लूटा गया था। इस समय कई यात्रियों की हत्याएँ भी हुईं। फिर काकोरी षड्यन्त्र-केस चला। श्री० रामप्रसाद 'बिस्मिल', राजेन्द्र लाहिड़ी, श्री० रौशनसिंह, श्री० अशफ़ाक़ उल्लाह को फाँसी की सज़ा दी गई; श्री० शचीन्द्र तथा अन्यान्य कई व्यक्तियों को आजीवन कालापानी तथा जेल की सज़ाएँ दी गईं।

## मध्यप्रदेश

१९१५ में मध्यप्रदेश में भी विप्लव की चेष्टा की गई थी, परन्तु सफलता नहीं प्राप्त हुई। श्री० रासबिहारी ने अपने साथी श्री० नलिनिमोहन सान्याल को सिपाहियों में राजद्रोह का प्रचार करने के लिए जबलपुर भेजा। परन्तु कोई सफलता नहीं प्राप्त हुई। ढाका के श्री० नलिनीकान्त घोष और मध्य-प्रान्त के श्री० विनायकराव कापले ने भी वहाँ विप्लव-प्रचार की चेष्टा की थी। श्री० कापले ने एक छोटा सा दल भी तैयार कर लिया था, परन्तु वह पकड़ लिया गया और कापले नौ-दो-ग्यारह हो गए। सन् १९१८ की ९ फ़रवरी को लखनऊ में किसी ने कापले को गोली मार दी। लोगों का अनुमान है कि सम्भवतः इसने अपने दल वालों के साथ विश्वासघात किया था, इसी से मार डाला गया।

## बिहार में चेष्टा

बिहार में भी श्री० अर्जुनलाल सेठी, मोतीचन्द्र माणिकचन्द, जयचन्द और जोरावरसिंह ने विप्लव-प्रचार की चेष्टा की थी। परन्तु कोई सफलता नहीं मिली। १९१३ में श्री० शचीन्द्र आदि ने बाँकीपुर में एक शाखा समिति की स्थापना की थी। बिहार नेशनल कॉलेज का श्री० बङ्किमचन्द्र मित्र इस शाखा समिति का सञ्चालक था, परन्तु अन्त में वह बनारस षड्यन्त्र में पकड़ लिया गया, इसलिए बाँकीपुर की शाखा समिति टूट गई। इसके बाद डिफ़ेन्स ऑफ़ इण्डिया एक्ट या 'भारत-रक्षा क़ानून' का जन्म हुआ। इसलिए विप्लववाद दुर्बल हो गया।

## मद्रास का विप्लव-आन्दोलन

मद्रास में विप्लव आन्दोलन का सूत्रपात पहले-पहल सन् १९०८ में हुआ था। श्री० सुब्रह्मण्य शिव और श्री० चिदम्बरम् पिले ने पराधीनता के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन किया। ९ मार्च को श्री० पिले ने तिन्नेवेली में एक गर्मागरम भाषण दिया था, इसलिए वे श्री० सुब्रह्मण्य के साथ पकड़ लिए गए। इन गिरफ़्तारियों से तिन्नेवेली की जनता बेतरह बौखला उठी। कई पुलिसवालों को पीटा, सरकारी दफ़्तरों में आग लगा दी और म्युनिसिपैलिटी का कार्यालय भस्म कर दिया गया। अन्त में बहुत से आदमी पकड़े गए और २७ को कड़ी सज़ाएँ दी गईं।

१९०८ में किसी ने मद्रास से 'इण्डिया' नाम का एक अखबार निकाला। यह राजद्रोह का प्रचारक समझा गया और इसके सञ्चालक श्री० श्रीनिवास आयङ्गर को सज़ा दी गई। इसके बाद 'इण्डिया' का छापाखाना पॉण्डीचेरी चला गया। एम० पी० तिरुमल नाम का एक नवयुवक इस छापेखाने में काम करता था। वह कुछ दिन के बाद लन्दन के श्री० श्यामजी कृष्णजी के इण्डिया हाउस में चला गया और मद्रास के विप्लववादियों से सम्बन्ध स्थापित किया। उन दिनों नीलकण्ठ ब्रह्मचारी और शङ्कर कृष्ण अय्यर मद्रास में विप्लववाद का प्रचार कर रहे थे। सन् १९१० में वैञ्ची अय्यर नाम का एक और युवक इनके साथ मिल गया। इसी साल के दिसम्बर में बी० बी० एम० अय्यर नाम का एक नवयुवक लन्दन के इण्डिया हाउस से भारत आया और पॉण्डीचेरी में एक गुप्त समिति की स्थापना करके नवयुवकों को पिस्तौल चलाने की शिक्षा प्रदान करने लगा। थोड़े दिनों के बाद मद्रास का वैञ्ची अय्यर भी उसी के साथ जा मिला।

१९११ की १७वीं जून को इन दोनों युवकों ने तिन्नेवेली के मैजिस्ट्रेट की हत्या की। इस सम्बन्ध में एक तिन्नेवेली षड्यन्त्र-केस चला और ९ आदमियों को सज़ाएँ दी गईं।

## श्रीराम राजू

मद्रास के विप्लवपन्थियों में श्रीराम राजू का नाम विशेष उल्लेखनीय है। यह गोदावरी ज़िले का रहने वाला था। थोड़ा सा पढ़-लिख कर इसने संन्यास ले लिया और विगत असहयोग आन्दोलन के दिनों में विज़गापट्टम और गोदावरी के ज़िलों में घूम-घूम कर शराब के विरुद्ध प्रचार करता रहा और पञ्चायतें स्थापित करता रहा। सन् १९२२ में अफ़वाह उड़ी कि राजू विप्लववादी है और विप्लव कराने के लिए अपना एक दल बना रहा है। पुलिस ने उसे गिरफ़्तार किया, परन्तु अन्त में प्रमाणाभाव के कारण छोड़ दिया गया।

गोदावरी एजेन्सी में एक तहसीलदार रहता था। वह तहसीलदार भी था और ठीकेदार भी। सरकार कुलियों को रोज़ाना छः आना मज़दूरी दिया करती थी, परन्तु तहसीलदार साहब उसमें चार आने अपने पॉकेट में रख लेते और दो आने कुलियों का देते। राजू को तहसीलदार की इस बेईमानी की ख़बर लगी, वह इसके प्रतिकार का उपाय सोचने लगा। शीघ्र ही एक दल तैयार हुआ और उसका उद्देश्य भी तहसीलदार से प्रतिशोध लेने की सीमा का उल्लङ्घन कर गया। राजू ने सशस्त्र विद्रोह की तैयारी आरम्भ कर दी। गूदमगिरि की गहन गुफाओं में एक गुप्त सङ्घ की स्थापना हुई और पुलिस-थानों पर आक्रमण करके बहुत से हथियार आदि संग्रहीत हुए। सरकार की पुलिस राजू की तलाश में लगी। छः बार राजू-दल से पुलिस का प्रत्यक्ष-सङ्घर्ष हुआ। कई सङ्घर्ष तो बड़े ही भीषण हुए। पेदाभोला नामक ग्राम के पास जो भीषण सङ्घर्ष हुआ था, उसमें सरकार के दो अङ्गरेज़ कर्मचारी खेत रहे और कई घायल हुए। परन्तु राजू बेदाग़ निकल गया। सन् १९२४ में सरकारी सेना-दल ने एकाएक आक्रमण करके राजू की सेना को हरा दिया। सरकारी इश्तहार से पता चला कि राजू मारा जा चुका है, परन्तु लोगों की धारणा है कि वह अभी जीवित है।

## पञ्जाब का विप्लव-आन्दोलन

जिस तरह बङ्गाल में बङ्ग-विच्छेद के कारण विप्लव आन्दोलन की सृष्टि हुई थी, उसी तरह पञ्जाब में चनाब नदी के किनारे के उपनिवेश के कारण विप्लव आन्दोलन का आविर्भाव हुआ था। इस आन्दोलन के नेता स्वर्गवासी लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह थे। सरकार ने इन दोनों नेताओं को बिना विचार निर्वासित किया। परन्तु आन्दोलन नहीं बन्द

हुआ। छः महीने के निर्वासन के बाद सरदार साहब मुक्त कर दिए गए। इसके बाद उन्होंने अपने भाई सरदार किशनसिंह ( सरदार भगतसिंह के पिता ) और कविवर लालचन्द 'फ़लक' को साथ लेकर तुमुल आन्दोलन आरम्भ कर दिया। परिणाम यह हुआ, कि सरकार की पुलिस उनके पीछे पड़ गई। यह देख कर सरदार अजीतसिंह तो फ़ारस चले गए; परन्तु सरदार किशनसिंह और लाला लालचन्द पकड़ लिए गए। इन दोनों सज्जनों पर राजद्रोह-प्रचार का मामला चला था और कठिन कारावास की सज़ा दी गई थी।

## लाला हरदयाल

लाला हरदयाल पञ्जाब विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट हैं। सरकार से वज़ीफ़ा पाकर ये शिक्षा प्राप्त करने के लिए ऑक्सफ़र्ड गए। परन्तु पाश्चात्य शिक्षा पर उनकी श्रद्धा नहीं हुई। इसलिए ऑक्सफ़र्ड से लौट कर हिन्दोस्तान चले आए। यहाँ उन दिनों स्वदेशी आन्दोलन की धूम थी। लाला जी ने इस आन्दोलन में बड़े ज़ोरों से भाग लिया। विदेशी बहिष्कार और जातीय भावों का प्रचार करने लगे। इसके साथ ही सन् १९०८ में उन्होंने अपनी एक पार्टी बना डाली तथा धीरे-धीरे विप्लव वाद का प्रचार करने लगे। परन्तु कुछ दिनों के बाद ही उन्हें मालूम हुआ कि इस प्रकार के काम देश की अपेक्षा विदेशों में रह कर अच्छी तरह किया जा सकता है, इसलिए पार्टी का काम श्री० दीनानाथ और श्री० अमीरचन्द को सौंप कर वे स्वयं अमेरिका चले गए। अन्त में कुछ दिनों पार्टी का काम बङ्गाल के विख्यात विप्लवी श्री० रासबिहारी बोस ने सँभाला था। अमेरिका जाकर लाला हरदयाल ने जो विप्लव-सम्बन्धी अनुष्ठान किया था, उसका उल्लेख हम आगे चल कर करेंगे।

लाला हरदयाल और उनके बाद श्री० रासबिहारी के विदेश चले जाने के बाद भी पार्टी का प्रचार-कार्य चलता रहा था। दिसम्बर सन् १९१५ में भारत के वायसराय लॉर्ड हार्डिङ्ग दिल्ली गए। वहाँ बड़े समारोह से उनके स्वागत का सामान किया गया था। एक बड़े से हाथी पर सवार होकर जब वे नगर की ओर बढ़े, तो किसी ने उनके ऊपर बम फेंका। परन्तु संयोग अच्छा था, निशाना चूक गया और लाट साहब तो बच गए, परन्तु उनका अरदली मर गया। इस घटना के पाँच महीने बाद लाहौर के लॉरेन्स गार्डन में एक बम फटा था, जिससे एक आदमी मर गया। पुलिस का अनुमान है कि ये दोनों काण्ड उसी लाला हरदयाल की स्थापित की हुई पार्टी ने किया था। अन्त में इन दोनों घटनाओं का आश्रय लेकर 'दिल्ली षडयन्त्र' वाले मामले की सृष्टि हुई थी। जिसमें श्री० अमीरचन्द, बालमुकुन्द, अवधबिहारी और वसन्तकुमार विश्वास को फाँसी की सज़ा दी गई थी।

उधर अमेरिका पहुँच कर लाला हरदयाल ने बड़े ज़ोर-शोर से प्रचार-कार्य आरम्भ किया और शीघ्र ही एक 'ग़दर पार्टी' की स्थापना हुई और 'ग़दर' नामक एक अख़बार भी निकाला गया। उद्देश्य यह था, कि यहाँ से धन, जन और हथियारों का संग्रह करके भारत में सशस्त्र विद्रोह आरम्भ कर दिया जाय। परन्तु थोड़े दिनों के बाद ही अमेरिकन सरकार को इस पार्टी के उद्देश्यों का पता लग गया। और लाला हरदयाल गिरफ़्तार कर लिए गए। अन्त में १६ मार्च, सन् १९१६ को वे ज़मानत पर छोड़ दिए गए और वहाँ से स्वीटज़रलैण्ड चले गए। परन्तु उनकी पार्टी बनी रही और उसका कार्य-सञ्चालन उनके सहकर्मी श्री० रामचन्द्र करते रहे।

## कोमागाता मारू

अमेरिका के कनाडा नामक स्थान में बहुत से सिक्ख रहते थे। उनका काम था, मेहनत-मज़दूरी करके जीविका अर्जन करना। यह बात कनाडावासियों को बहुत बुरी मालूम हुई। फलतः वहाँ की सरकार ने क़ानून बनाया, कि जिस एशियावासी के पास २०० डॉलर न होंगे, वह कनाडा में पैर भी नहीं रखने पाएगा। इस क़ानून के कारण वहाँ के प्रवासी भारतवासियों में बड़ी खलबली
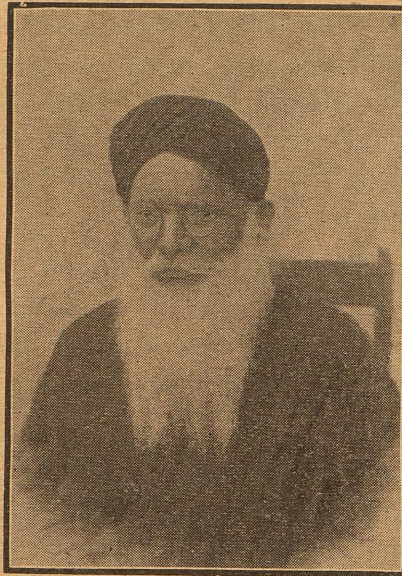
बाबा गुरुदत्तसिंह

मची। उन्होंने इस क़ानून के विरुद्ध घोर आन्दोलन आरम्भ किया। सन् १९१३ में कुछ प्रवासी उसी आन्दोलन के सिलसिले में यहाँ भी आए थे। हमें जहाँ तक स्मरण है, कनाडा की सरकार ने यह भी नियम बनाया था, कि जिस एशियावासी का अपना जहाज़ होगा, उस पर यह २०० डॉलर वाला नियम लागू न होगा। फलतः विख्यात पञ्जाबी-वृद्ध बाबा गुरुदत्तसिंह ने सिक्खों के एक दल के साथ कैनाडा जाने का विचार किया। उन्होंने हाँङ्काँङ्ग से कोमागाता मारू नाम का एक जहाज़ भाड़े पर लिया और शङ्घाई, मोजी तथा योकोहामा से बहुत से भारतीय यात्री लेकर २३, मई १९१४ को वैङ्कोवर पहुँचे। उस समय उस जहाज़ में ३५१ सिक्ख और २१ मुसलमान यात्री थे। वैङ्कोवर के अधिकारियों ने उन्हें जहाज़ से उतरने नहीं दिया। फलतः यात्रियों और पुलिस में मुठभेड़ हुई। सिक्खों ने पुलिस को मार भगाया। इसके बाद उन पर सशस्त्र पुलिस का हमला हुआ, यात्रियों की हार हुई और वे जहाज़ लौटा लेने को बाध्य किए गए। इससे उनमें भयङ्कर असन्तोष का सञ्चार हुआ।

जिस समय यह जहाज़ लौट रहा था, उस समय यूरोप का महासमर आरम्भ हो चुका था। जापान आने पर यात्रियों ने सुना, कि उन्हें ब्रिटिश सरकार के विख्यात एशियाई बन्दरगाह हाँङ्काँङ्ग में भी उतरने नहीं दिया जाएगा। इसलिए मजबूर होकर उन्होंने अपना जहाज़ कलकत्ते की ओर चलाया। रास्ते में हाँङ्काँङ्ग तथा सिङ्गापूर में उन्होंने उतरने की चेष्टा की थी, परन्तु अधिकारियों ने नहीं उतरने दिया। अन्त में, २९ सितम्बर सन् १९१४ को कोमागाता मारू कलकत्ते के बजबज नामक बन्दरगाह पर पहुँचा। बङ्गाल-सरकार ने उन्हें तुरन्त पञ्जाब भेज देने के लिए एक स्पेशल ट्रेन का प्रबन्ध पहले से ही कर रक्खा था। परन्त सिक्खों ने तुरन्त ही स्पेशल ट्रेन पर सवार होना स्वीकार नहीं किया। इधर पुलिस ने उन्हें ज़बरदस्ती गाड़ी पर चढ़ाने का उद्योग आरम्भ किया। इधर यात्री बिगड़ उठे। इधर पुलिस भी गरम हो गई। दोनों ओर से गोलियाँ चलने लगीं। इस लड़ाई में १८ सिक्खों ने प्राण विसर्जन किया। रङ्ग बेढब देख कर २८ सिक्खों को लेकर बाबा गुरुदत्तसिंह ग़ायब हो गए। ६० सिक्खों को उठा-उठा कर ट्रेन में चढ़ाया गया। बाक़ी गिरफ़्तार किए गए और जनवरी महीने तक हवालात में रख कर फिर छोड़ दिए गए। ३१ नज़रबन्द किए गए।

इस घटना के कारण विदेशों से लौटे हुए सिक्खों में तीव्र असन्तोष का सञ्चार हुआ। उन्होंने सरकार को एकदम ध्वंस कर डालने का विचार किया। भयङ्कर षड्यन्त्र आरम्भ हुआ। कनाडा, अमेरिका, हाँङ्काँङ्ग, फ़िलीपाइन, जापान और चीन से बहुत से भारतवासियों ने आकर इस षड्यन्त्र में योग दिया। सरकार भी विचलित हुई। दमन आरम्भ हुआ। एक नए क़ानून की सृष्टि करके विदेश से लौटे हुए सिक्खों को कष्ट दिया जाने लगा। परन्तु यह विप्लव आन्दोलन मरा नहीं। सरकार की सतर्कता से बच कर वह अपनी शक्ति बढ़ाने लगा। १६ अक्टूबर १९१४ को फ़ीरोज़पुर, लुधियाना ब्रेञ्च लाइन के चौकीमान स्टेशन पर विप्लवपन्थियों के लिए कुछ हथियार आने वाले थे। अमेरिका से लौटे हुए कुछ सिक्ख उन्हें लेने के लिए चौकीमान पहुँचे और स्टेशन पर आक्रमण करके स्टेशन-मास्टर तथा पानी पाँड़े को मार डाला। स्टेशन को भी लूट लिया। परन्तु वहाँ कोई हथियार आदि नहीं मिला।

२९ अक्टूबर को 'तोसामारू' नाम का एक जापानी जहाज़ अमेरिका से भारत आया था। इसमें १३७ पञ्जाबी यात्री थे। ये पञ्जाब के विप्लववादियों से मिल कर सङ्गठित विद्रोह करने के लिए आए थे। कई टोलियाँ बना कर विभिन्न स्थानों में एक साथ ही लालक्रान्ति की आग भड़काना चाहते थे। परन्तु भारत पहुँचते ही सरकार ने उनमें से १०० को गिरफ़्तार करके नज़रबन्द कर लिया। जो नज़रबन्द नहीं किए गए थे, उनमें से ६, इसके बाद, विभिन्न षडयन्त्रों में लिप्त रहने के कारण फाँसी पर लटकाए गए। ६ को कारावास की सज़ाएँ दी गईं, ६ आजीवन के लिए कालेपानी भेजे गए थे।

२७ नवम्बर को १५ विप्लवपन्थी फ़ीरोज़पुर में सरकारी ख़ज़ाना लूटने जा रहे थे। रास्ते में एक पुलिस के दारोग़ा तथा ग्राम-पञ्चायत के कुछ लोगों ने उन्हें रोका। परन्तु विद्रोहियों ने उन्हें गोली मार दी। पुलिस ने फिर उनका पीछा किया और फिर एक सङ्घर्ष आरम्भ हुआ। इसमें दो विप्लवी मारे, सात पकड़े गए और ६ भाग गए।

इन कार्यों के अतिरिक्त, पञ्जाबी विप्लववादियों ने उन दिनों पञ्जाब के विभिन्न स्थानों में ९ डाके डाले थे और ६ बार ट्रेनें उलटने की चेष्टाएँ की गई थीं। एक डकैती के सम्बन्ध में सिर्फ़ एक आदमी पकड़ा गया था, जिसके पास २४५ कारतूस और एक रिवॉल्वर मिला था।

## लाहौर षड्यन्त्र

हम ऊपर 'रौलट कमिटी' का उल्लेख कर आए हैं। इस कमिटी ने अपनी विस्तृत रिपोर्ट में लाहौर षडयन्त्र-केस का उल्लेख किया है, उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

कोमागाता मारू के यात्री पकड़ लिए गए थे, वे जनवरी के आरम्भ में ही छोड़ दिए गए। उसी समय अमेरिका से आए हुए कुछ पत्र पकड़े गए थे। जिनमें अङ्गरेज़ों के प्रति विद्वेष भाव फैलाने की चेष्टा की गई थी, और कुछ पत्र जर्मनी से आए थे, जिनमें जर्मनी को विजय का ज़िक्र था और बहुत सी उत्तेजनापूर्ण बातें थीं। इन पत्रों द्वारा सरकार को इस बात का भी पता लग गया, कि पञ्जाब के विप्लववादी दल से अमेरिका की 'ग़दर पार्टी' का सम्बन्ध है। १९१४ में विष्णु गणेश पिङ्गले नाम का एक महाराष्ट्र युवक पञ्जाब आया और वहाँ की पार्टी को बङ्गाल की पार्टी से सहयोग कराने का वचन दे गया। पिङ्गले पूना ज़िले का रहने वाला था और थोड़ी ही उमर में अमेरिका चला गया था। जिस समय ग़दर पार्टी वाले सिक्ख यहाँ आए थे, उसी समय वह भी अमेरिका से यहाँ चला आया था। उसके पञ्जाब आने पर विप्लवपन्थियों की एक सभा हुई। इस सभा में सरकारी ख़ज़ाना लूटने, भारतीय सैनिकों में विद्रोह का प्रचार करने, अस्त्र संग्रह करने, बम बनाने और डकैती द्वारा अर्थ-संग्रह करने की बातें तय हुईं। पिङ्गले ने कहा था, कि वह बम बनाने वाले एक निपुण बङ्गाली को यहाँ ला देगा। उसका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। बम बनाने के लिए उपादान संग्रह करने को आदमी भी नियुक्त कर दिए गए। लुधियाना के कई विद्यार्थियों ने इस काम में सहायता दी। इसके बाद बनारस से श्री० रासबिहारी बोस आए। उनके लिए अमृतसर में एक मकान लिया गया। वह कई बङ्गाली युवकों के साथ १९१५ के फ़रवरी महीने तक उस मकान में थे। यह रह कर वह सिक्ख विप्लववादियों के साथ कार्य करते रहे। २१ फ़रवरी को विद्रोह आरम्भ करने की बात तय थी और साथ ही यह भी निश्चय था, कि पहले लाहौर में ही श्रीगणेश होगा। निर्धारित तिथि को सैनिकों की सहायता करने के लिए रासबिहारी ने उत्तर भारत के कई स्थानों में आदमी भेजे। इसके साथ ही उन्होंने यह भी चेष्टा की थी कि ग्रामवासी इस विद्रोह में शामिल हों। विद्रोह के लिए कई बम तैयार हुए, अस्त्र संग्रह हुए, पताकाएँ भी बनवाई गईं और युद्ध-घोषणा का मज़मून भी तैयार कर लिया गया। रेलवे और टेलिग्राफ़ ध्वंस करने के लिए औज़ार भी एकत्र कर लिए गए। आवश्यक अर्थ-संग्रह करने के लिए कई डकैतियाँ पहले ही हो चुकी थीं।

परन्तु एक गुप्तचर के द्वारा सरकार को इन बातों का पता लग चुका था। इसलिए नियत समय से पूर्व ही पुलिस ने रासबिहारी के आवास-स्थल पर धावा बोल दिया। सात आदमी पकड़े गए। कितने ही रिवॉल्वर, बम, और बम बनाने का सामान तथा पताकाएँ बरामद हुईं। दूसरे दिन दो आदमी और भी पकड़े गए। इसके बाद और भी कई स्थानों पर ख़ाना-तलाशियाँ हुईं। जिनमें चार आदमी और १२ बम पकड़े गए। इनमें पाँच बम बङ्गाली ढङ्ग के थे, जिनमें तीन पुराने और दो नए थे। इसके साथ ही कुछ ऐसे प्रमाण भी मिले, जिनसे मालूम हुआ कि लाहौर, फ़िरोज़पुर, रावलपिण्डी, बनारस, जबलपुर और पूर्व बङ्गाल में एक ही दिन सशस्त्र विद्रोह की घोषणा कर दी जाने वाली थी।

श्री० रासबिहारी और पिङ्गले पुलिस के आने से पहले ही भाग चुके थे। कुछ दिनों के बाद पिङ्गले मेरठ की छावनी के पास पकड़ा गया था। उसके पास एक बम भी था।

२० फ़रवरी को एक हेड-कॉन्स्टेबिल और एक दारोग़ा से कुछ विप्लववादियों का भेंट हुई। पुलिस वालों ने थाने में चलने को कहा। विप्लवियों ने गोली दाग़ी, हेड-कॉन्स्टेबिल मर गया और दारोग़ा घायल हुआ।

'डिफ़ेन्स ऑफ़ इण्डिया एक्ट' पास हो जाने पर ९ भागों में बाँट कर विप्लववादियों का विचार किया गया था। पहले मामले में ६१, दूसरे मामले में ७४, और तीसरे में १२ अभियुक्त थे। इनमें २८ को फाँसी हुई, २९ छोड़ दिए गए और बाक़ी कालेपानी तथा जेलख़ाने भेजे गए। इसके अलावा कई अपराधियों का विचार सामरिक ढङ्ग (Court Martial) से हुआ था और कई साधारण अदालत द्वारा दण्डित किए गए। पहले मामले में विद्रोह का उद्योग करने वाले और नेता शामिल किए गए। दूसरे में उनके सहकारी और तीसरे में विभिन्न प्रकार के विप्लववादी थे। इसके सिवा 'डिफ़ेन्स ऑफ़ इण्डिया एक्ट' के अनुसार बहुत से आदमियों को नज़रबन्द किया गया। अन्त में पञ्जाब के कतिपय प्रतिष्ठित सज्जनों की सहायता से सरकार इस विप्लववाद को दबाने में समर्थ हुई। लाहौर षड्यन्त्र वाले मामले में जिन्हें कालेपानी की सज़ा दी गई थी, उनमें अधिकांश ५०-५० और ४०-४० वर्ष की उमर के व्यक्ति थे।

## दमन चक्र

'डिफ़ेन्स ऑफ़ इण्डिया एक्ट' के अनुसार तीस आदमी जेलों में नज़रबन्द थे। ११३ अपने-अपने गाँवों में और ९५ विभिन्न गाँवों में, रोक रक्खे गए थे। भारत-प्रवेश सम्बन्धी क़ानून के अनुसार ३३१ आदमी रोके गए थे। अमेरिका से जो सिक्ख आए थे, उनमें २,५७६ अपने-अपने गाँवों में नज़रबन्द कर दिए गए।

षड्यन्त्र वाले मामले के बाद, १९१७ में जो लोग स्वदेश वापस आए थे, उनमें से ४१९ आदमी नज़रबन्द किए गए थे। इसके सिवा एडवाइज़री कमिटी ने भी इस विप्लव-व्यापार को रोकने में सरकार की काफ़ी सहायता की थी। अख़बारों पर ख़ूब कड़ी नज़र रक्खी गई थी। कितने ही पत्रों के लिए यह आज्ञा थी कि अख़बार प्रकाशित करने से पहले मज़मून पुलिस को दिखा दिया जावे। श्री० विपिनचन्द्र पाल और लोकमान्य तिलक का पञ्जाब में प्रवेश करना तक निषिद्ध था।

रौलट कमिटी की रिपोर्ट का कथन है कि इस विप्लव-काण्ड के कारण पञ्जाब में भयङ्कर ख़ून-ख़राबी होने की सम्भावना हो गई थी।

## बर्मा में विप्लव

सन् १९१५ में श्री० हसन ख़ाँ और श्री० सोहनलाल पाठक नाम के विप्लववादी श्याम होकर बरमा पहुँचे। इन दोनों का ग़दर-पार्टी से विशेष सम्बन्ध था। इन्होंने वहाँ जाकर सरकारी मिलेटरी पुलिस को भड़काने की चेष्टा की। किन्तु मेमियो की सवार-पुलिस के एक जमादार ने सोहनलाल को गिरफ़्तार करा दिया। उस समय उसके पास तीन पिस्तौल और २७० कारतूस थे। इसके पाँचवें दिन सोहनलाल का सहकर्मी नारायण सिंह भी वहीं पकड़ा गया। उसके पास भी एक पिस्तौल थी। इस समय श्याम राज्य की सीमा पर एक रेलवे लाइन तैयार हो रही थी। वहाँ बहुत से जर्मन इञ्जीनियर और पञ्जाबी सिक्ख काम कर रहे थे। अमेरिका की ग़दर पार्टी ने निश्चय किया था, कि ये जर्मन और सिक्ख अस्त्र चलाना सीखेंगे और जब बरमा की मिलेटरी पुलिस क़ब्ज़े में आ जाएगी तो फ़ौरन बरमा दख़ल कर लिया जाएगा। परन्तु अन्त में भण्डा फोड़ होगया और बहुत से विद्रोही गिरफ़्तार करके दण्डित किए गए।

रङ्गून के मुसलमानों ने भी एक विप्लवी दल बनाया था। उन्होंने १९१५ को बकरीद के दिन विप्लव करने का आयोजन किया था। परन्तु तैयारी पूरी न होने के कारण यह तारीख़ बदल दी गई थी। इसके साथ ही पुलिस को इस षडयन्त्र का पता भी लग गया और कई आदमी नज़रबन्द कर लिए गए।

## विदेशों से अस्त्र लाने की चेष्टा

ऊपर लिखा जा चुका है कि विप्लववादियों ने विदेशों से हथियार लाने की भी चेष्टा की थी। १९१५ में श्री० जितेन्द्रनाथ लाहिड़ी नाम का एक विप्लवी युरोप से भारत आया। उसने बङ्गाली विप्लववादियों को बतलाया कि जर्मनी अस्त्र और अर्थ देने को तैयार है। व्यवस्था ठीक करने के लिए उसने कुछ आदमियों को 'बटाविया' (जर्मनी) भेजने की ज़रूरत बताई। इस प्रस्ताव के अनुसार श्री० नगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य मि० मार्टिन नाम धारण कर बटाविया गया। इसके साथ ही अवनीन्द्र नाथ मुकर्जी नाम का एक युवक जापान भेजा गया।

बटाविया जाकर सी० मार्टिन ने जर्मन राजदूत से मुलाक़ात की। उसने बताया कि भारतीय विप्लववादियों की सहायता के लिए अस्त्र-शस्त्र लेकर एक जहाज़ कराची के लिए जा रहा है। मार्टिन ने कहा, उसे बङ्गाल भेजने की व्यवस्था कर दीजिए। जर्मन राजदूत ने इसे स्वीकार कर लिया। इस जहाज़ में तीस हज़ार राइफ़ल, बन्दूक़ें और प्रत्येक बन्दूक़ के लिए ८०० के हिसाब से कारतूस थे। इसके सिवा दो लाख रुपए नक़द भी थे। निश्चय हुआ था, कि सुन्दरबन (गङ्गासागर सङ्गम के पास) जहाज़ से सारा सामान उतार लिया जाएगा। सब बातें तय करके मि० सी० मार्टिन उर्फ़ श्री० नरेन्द्र भारत वापस आ गया। श्री० यतीन्द्रनाथ के साथ परामर्श करके यह भी ठीक कर लिया गया, कि यह सब सामान कहाँ-कहाँ रक्खा जाएगा। यह भी निश्चय हुआ, कि पूर्व बङ्गाल के लिए कुछ हथियार 'हाथी द्वीप' में, पश्चिम बङ्गाल के लिए 'रायमङ्गल' नामक स्थान में और बाक़ी बालेश्वर में उतारा जाएगा। साथ ही यह व्यवस्था भी कर ली गई कि विप्लव आरम्भ होने पर कलकत्ते के पास की तीनों रेलवे लाइनें ध्वंस कर दी जाएँगी, ताकि सरकार विद्रोह दमन करने के लिए पलटनें न भेज सके।

१ जुलाई को 'मैवरिक' जहाज़ के रायमङ्गल पहुँचने की बात थी। कुछ लोग उसकी प्रतीक्षा के लिए रायमङ्गल पहले ही पहुँच गए थे। परन्तु दस दिन तक इन्तज़ार करने पर भी जब जहाज़ नहीं आया तो हताश होकर लौट आए। पीछे मालूम हुआ कि सारी चेष्टा विफल हो चुकी है।

* * *

इस परिमित स्थान पर इससे अधिक विवरण देना सम्भव ही नहीं था, हाल के होने वाले काण्डों से पाठक पूर्णतः परिचित हैं, अतएव आशा है, पाठकगण इसी से सन्तोष करेंगे।
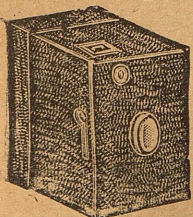
* * *



# स्वर्ण-कणिका

[ श्री० 'जौहरी' ]

अत्याचार हमें नहीं डरा सकता, बल्कि वह हमें अपने सङ्कल्प में दृढ़ कर देगा। आत्म-दलन करने वालों की शोणित-धारा से स्वाधीनता-मन्दिर की नींव मज़बूत होती है और हमारे नौजवान आत्मदाताओं के रक्त से हमारी साधना पवित्र होगी। हमारा विश्वास चाहे सत्य हो या भ्रान्त, हम अपने को सर्वशक्तिमान ईश्वर का यन्त्र-स्वरूप समझते हैं, हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि हम उसी की ज्योति से उद्भासित पथ पर चल रहे हैं। इसे विभ्रम कह सकते हो, इसे कुसंस्कार के नाम से पुकार सकते हो, इसे उन्मत्तता समझ सकते हो, हमें मानव-समाज में विभ्रान्त व्यक्तियों का समूह कह सकते हो, परन्तु हमारी तरह सुदृढ़ विश्वास लेकर जब मनुष्य कार्य करता है, तब वह अप्रतिहत-पराक्रम और दुर्धर्ष हो उठता है। इस सत्य की उपलब्धि अगर तुम नहीं कर सकते, तो तुम्हारा इतिहास पढ़ना वृथा है। मनुष्य जब इस तरह के विश्वास का विश्वासी होकर कार्य में प्रवृत्त होता है, तो वह संसार की सारी आपदाओं, बाधाओं और विघ्नों का सामना कर सकता है।

❁

पशुबल का भय मत करना, वेत्राघात के भय से भयभीत मत होना, कारागार का स्वागत कर लेने पर तुम संसार के आत्म-दान करने वालों का सम्मान प्राप्त करने के अधिकारी हो सकोगे।

❁

युवको, मातृ-भूमि की सेवा के लिए जाग्रत होओ, युवकोचित साहस और उद्यम के साथ मातृ-भूमि की सेवा-साधना में लग जाओ। स्वदेशी आन्दोलन के साथ विद्यार्थियों का सम्पर्क रखना उचित नहीं, इस युक्ति द्वारा तुम्हें भ्रान्त करने की चेष्टा होती है। ऐसी धारणा को एक क्षण के लिए भी अपने हृदय में स्थान न देना। स्वदेशी आन्दोलन की अपेक्षा पवित्र साधना युवकों के लिए दूसरी नहीं हो सकती।......महाप्राणोचित साहस, शौर्य और त्यागशीलता का परिचय प्रदान करो।

❁

स्वाधीनता-संग्राम में एक दिन में विजय नहीं मिलती। ईर्ष्यापरायणा स्वतन्त्रता देवी दीर्घकाल-व्यापी कठोर साधना से अपने भक्त के प्रति प्रसन्न होती हैं। इतिहास पढ़ो। स्वाधीनता-संग्राम चलाने के लिए कठोर सहिष्णुता, धैर्य, त्याग और निष्ठा की आवश्यकता होती है, उसे सीखो।

❁

विद्यार्थियो, हम अपने कार्य का भार तुम्हारे ऊपर दे जाते हैं। तुम इसके लिए अपने को उपयुक्त बना लो। सत्यपरायणता और पुरुषोचित निर्भीकता सीखो, अन्याय और अत्याचार के प्रति घृणा का भाव अपने चित्त में जगा लो। अपने अन्तर्तम पुरुष को जगा लो। अपनी पारिपार्श्विक अवस्था की उन्नति करो।

❁

सारा इतिहास इस बात की घोषणा कर रहा है, कि स्वेच्छाचारी शक्ति की कोई भित्ति नहीं होती। इस शक्ति को स्थायी बनाने के लिए जनता की गम्भीर अनुशक्ति में उसे प्रतिष्ठित करना अनावश्यकता है। स्वेच्छाचार शासन के परिवर्तन का एक स्वर है। उसकी मीयाद को अनावश्यक रूप से बढ़ाना उचित नहीं है। पुनर्गठन का समय अब आया है। इसलिए शक्ति जगी है, उपादान संगृहीत हो चुका है।

—स्व० सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी

❁

भारत के जल और भारत की मिट्टी में एक चिर-सत्य छिपा है। वह सत्य प्रत्येक युग में नए-नए रूप से और नए-नए भावों में प्रकट होता है। हज़ारों परिवर्तन, आवर्तन और विवर्तन के साथ वह चिर-सत्य ही प्रकट हो उठा है। साहित्य, दर्शन, काव्य, युद्ध, विप्लव, धर्म, कर्म, अज्ञान, अधर्म, स्वाधीनता और पराधीनता में, वही अपने को घोषित कर रहा है। वही भारत का प्राण, भारत की मिट्टी, जल और वायु है; वही प्राणों का बहिरावरण है।

❁

विवेकानन्द की वाणी से चित्त तृप्त हो गया। समझ में आ गया, कि भारतीय, चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, पारसी हो या क्रिस्तान, वह भारतीय है।......... इस संसार में भारत का भी स्थान है, अधिकार है, साधना और कर्तव्य है।

❁

सत्याग्रह हमारे स्वाधीनता-संग्राम का अन्तिम अस्त्र है। मैं इसे ब्रह्मास्त्र कहता हूँ। कुरुक्षेत्र के धर्मयुद्ध में महावीर गाण्डीवी ने, जिस तरह सब से पहले पाशुपतास्त्र का प्रयोग नहीं किया था, महावीर कर्ण ने भी जिस तरह, सबसे पहले 'एकाघ्नी' अस्त्र का व्यवहार नहीं किया था। कोई वीर ऐसा नहीं करता—हम भी सब से पहले अपने अन्तिम अस्त्र का व्यवहार नहीं करेंगे। किन्तु सब अस्त्र समाप्त हो जाएगा—अन्त जब स्वयं हमारे सामने आकर खड़ा हो जायगा, तब धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र के रथी को हृदय में धारण करके हम अपने अन्तिम अस्त्र के प्रयोग करने में सङ्कोच नहीं करेंगे—भयभीत न होंगे, क्योंकि हम जानते हैं, कि यह युद्ध है। यह युद्ध पशुबल के विरुद्ध मनुष्य के आत्मबल का युद्ध है। इस धर्म-युद्ध में हम विजयी होंगे या हार जायँगे—इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। हमें यह विश्वास है, कि संसार का अतीत और वर्तमान इतिहास हमारे इस संग्राम की तरह एक संग्राम भी नहीं दिखा सकता। एक ओर वर्तमान युग के नवाविष्कृत विज्ञान की सहायता से सज्जित सैन्य-श्रेणी और दूसरी ओर निरस्त्र, दुर्भिक्ष-पीड़ित—भूख और प्यास से म्रियमाण तीस करोड़ नर-कङ्काल है! कमर में वस्त्र का एक टुकड़ा लपेटे देशव्यापी क्षुधा और दरिद्रता की जीवित मूर्ति—भारत के प्रधान सेनापति, आज केवल आत्मबल को हाथ में लेकर, हमें समरक्षेत्र में बुला रहे हैं।

❁

.........तुमने इस स्वाधीनता संग्राम में बड़ा त्याग किया है, बहुत कष्ट सहा है—तुम्हारे ही ऊपर राजरोष ने संहारमूर्ति के रूप में आत्म-प्रकाश किया है। अभी समय नहीं आया है, कि हम कुछ सम्मानपूर्वक अस्त्र रख कर विश्राम कर सकें। युद्ध अभी भी तुम्हारी अपेक्षा के कल-कोलाहल से मुखरित है। जाओ वीर, युद्ध करो, इतिहास के एक अत्यन्त गौरवान्वित युद्ध के तुम सिपाही हो, इसे कदापि न भूलना। जब युद्ध का अन्त होगा, जब सन्धि हो जायगी और शान्ति का शुभा-

गमन होगा—तब संयत शान्त भाव से शान्तिमय मिलन-मन्दिर में—समुन्नत सिर से तुम प्रवेश करोगे—यह स्वप्न मैं साश्रु-नेत्रों से देख रहा हूँ।......मिलन-मन्दिर के यात्री जिसमें तुम्हें देख कर कह सकें, ये वे ही सिपाही हैं, जिन्होंने युद्ध-क्षेत्र में भय को पराजित किया है, मृत्यु को तुच्छ समझा है और युद्ध के अन्त में जयमाल धारण करने पर विभव और सौजन्य से शत्रु को भी जीत लिया है।

—स्व० देशबन्धु चितरञ्जन दास

स्वराज्य हमारा जन्मगत अधिकार है। इस संग्राम में हमें ऐक्य-बद्ध होना होगा। जब तक सर्वसाधारण हमारे कामों में सम्मिलित न होंगे, तब तक हमें सफलता नहीं प्राप्त होगी।

❀

ज्ञानहीन ग्रामवासियों की हमें सब से अधिक उपयुक्त राजनीति की शिक्षा देनी होगी। गाँव-गाँव में जाकर स्वाधीनता-वाणी की घोषणा करनी होगी। ऐसे युवकों का दल आजकल कहाँ है? ग्रामवासियों को जगाओ। अगर स्वराज्य लेना चाहते हो तो जन-शक्ति को कर्मक्षेत्र में खींच लाओ।

❀

सन्, १८१८ से १९१८ तक पूरे सौ वर्ष हो गए, दासता का असहनीय जीवन व्यतीत करते हुए! स्वराज्य-लाभ किए बिना भारत कदापि सुखी नहीं हो सकेगा। जीवित रहने के लिए हमें तुरन्त ही स्वराज्य की आवश्यकता है। तुम अगर स्वाधीनता चाहो, तो स्वाधीन हो सकते हो और अगर स्वाधीनता न चाहो, तो तुम्हारा पतन अनिवार्य है! स्वाधीनता के बिना तुम्हारी पतितावस्था कभी भी नहीं दूर हो सकती। तुममें अनेक ऐसे हैं, जो अस्त्र धारण करना पसन्द नहीं कर सकते।...... तुममें क्या आत्म-संयम की शक्ति नहीं है? तुम क्या इस प्रकार नहीं चल सकते, कि विदेशी राजशक्ति ज़रा भी सहायता न प्राप्त कर सके, इसी का नाम असहयोग है। क्या तुम इसे कर सकते हो? अगर कर सकते हो, तो तुम कल से ही स्वतन्त्र हो।

❀

राजनीति के सम्पर्क में रहने से हमें आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। मैं इस प्रकार की आपदाओं का सामना करने को सर्वदा प्रस्तुत हूँ। सरकार मुझे सता कर कुछ भी नहीं कर सकती, क्योंकि मैं दूसरों की तरह कच्चा नहीं हूँ, मैं जनता का केवल सेवक हूँ। अगर सङ्कट में पड़ कर लज्जाजनक कायरता दिखाऊँ, तो जनता उत्साह-हीन हो जायगी। अगर मैं दण्डित होऊँ तो सर्व-साधारण की सहानुभूति ही मुझे बल प्रदान करेगी।

❀

यद्यपि जूरी ने मुझे दोषी बताया है, तथापि मैं अपने को निर्दोष समझता हूँ। जिस शक्ति द्वारा यह संसार परिचालित होता है, वह शक्ति माननीय विचार-क्षमता से कहीं श्रेष्ठ है। जिस पवित्र कार्य की साधना की मैंने कोशिश की है, मेरे क्लेश भोगने से देश उसकी सिद्धि की ओर अग्रसर होगा। मालूम होता है, भगवान की ऐसी ही इच्छा है।

❀

विरुद्ध पक्ष चाहता है, कि मैं सिर झुका कर दोष स्वीकार कर लूँ। मुझसे ऐसा नहीं हो सकता। मेरे चरित्र-बल पर ही जनता के ऊपर मेरा प्रभाव निर्भर करता है और मेरी देश-सेवा का सुयोग भी उसी पर निर्भर है। ऐसी दशा में अगर मैं भय का वशवर्त्ती होऊँ तो महाराष्ट्र में रहना या अण्डमन में रहना मेरे लिए बराबर है!

❀

कर्त्तव्य की राह गुलाब-जल से सींची हुई नहीं होती और गुलाब फूल की हँसी से भरा होता है। यह बात सच है, कि हम जो कुछ चाहते हैं, वह इस तरीक़े से विप्लव है, क्योंकि हम नौकरशाही शासन-पद्धति में सम्पूर्ण परिवर्तन चाहते हैं और यह भी सच है, कि यह विप्लव रक्तपात-विहीन होगा, परन्तु रक्तपात अब न होगा, तब इसके लिए देशवासियों को कोई दुःख या कष्ट भी सहना न पड़ेगा, ऐसा विश्वास अगर किसी का हो तो वह उसकी निर्बुद्धिता का परिचायक होगा। केवल दुःख-कष्ट ही नहीं, गुरुतर दुःख-कष्ट भोगना पड़ेगा। क्योंकि दुःख-कष्ट भोगने के लिए प्रस्तुत हुए बिना, किसी विषय में भी सफलता नहीं प्राप्त हो सकती। तुम्हारा विप्लव रक्तपात-विहीन होगा, परन्तु यह न समझ लेना, कि तुम्हें उसके लिए कष्ट भी स्वीकार न करना पड़ेगा, अथवा जेल न जाना होगा।

—स्व० लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक

ब्रिटिश जनता ने भारतवर्ष को युद्ध द्वारा नहीं जीता है। एक दल के लोगों को भय न दिखाते तथा दूसरे दल वालों को काम में न लगाते तथा भारतवासियों द्वारा नैतिक और आर्थिक सहायता न प्राप्त होती, तो वे भारत को नहीं जीत सकते थे। उनके भारत के जीतने की कथा बड़ी ही कलङ्कपूर्ण है। ब्रिटिश इण्डियन कोर्ट में जिस समय भारतीय क़ानून द्वारा प्रतिष्ठित सरकार को नष्ट कर डालने के अभियोग में उपस्थित किए जाते हैं, तो उस समय वास्तव में बड़ी हँसी आती है। पूछने की इच्छा होती है, किस क़ानून के आधार पर इस देश में यह सरकार प्रतिष्ठित है?

❀

फाँसी की रस्सी, जल्लाद का कुठार, तोप का गोला, मनुष्य के जीवन का नाश कर सकता है; किन्तु जाति की शक्ति उससे बढ़ती है। निर्वासन, नज़रबन्दी कारागार, अत्याचार, जायदाद की ज़ब्ती आदि अस्त्रों द्वारा अत्याचारी स्वतन्त्रता-कामियों का ध्वंस करना चाहता है। परन्तु अब तक इस प्रकार की चेष्टाएँ व्यर्थ ही सिद्ध हुई हैं।

❀

युवकों ने कारागार का भय छोड़ दिया है। कुछ दिनों में मृत्यु का भय भी उन्हें विचलित न कर सकेगा तब सरकार क्या करेगी? गवर्नमेण्ट उन्हें जेल दे सकती है; फाँसी पर लटका सकती है; किन्तु जेल जाने में कोई हरज नहीं है, मृत्यु हो जाय तो भी कोई चिन्ता नहीं—ऐसी मनोवृत्तियों के उदय होने पर क्या होगा?

❀

स्वाधीनता-प्राप्ति की चेष्टा करने का प्रत्येक जाति को अधिकार है।.........जिस अवस्था में पड़ कर सरकार हमारी माँग स्वीकार करने को बाध्य होगी। जब तक हम उस अवस्था की सृष्टि न कर सकेंगे; तब तक पूर्ण स्वाधीनता तो क्या, औपनिवेशिक स्वायत्त-शासन भी सरकार हमें न देगी। इस सम्बन्ध में मुझे ज़रा भी सन्देह नहीं है, आप चाहे पूर्ण स्वाधीनता चाहते हों या औपनिवेशिक स्वराज्य चाहते हों, इस अवस्था की सृष्टि करने के जो काम हैं, वही वास्तविक काम हैं।

❀

धन क्या तुम्हारा है? जिसके हाथों में बल है, जिसके हाथों में फ़ौज है, धन उसी का है, तुम तो सिर्फ़ ख़ज़ाञ्ची हो। धन के साथ ही जिसमें शारीरिक बल नहीं है, बुद्धि नहीं है, सङ्गठन की शक्ति नहीं है, उसके धन का आज न सही, कल कोई दूसरा उपभोग करेगा ही। धन उसी के काम आता है, जिसमें आत्म-बल होता है। धन रहने से ही अगर सब कुछ हो सकता, तो आज हिन्दू जाति की इतनी दुर्दशा न होती। सोमनाथ का मन्दिर जिन्होंने पाया था, उनके पास धन की क्या कमी थी? परन्तु धन कुछ भी न कर सका। महमूद ग़ज़नवी की तलवार से सोमनाथ की मूर्त्ति टुकड़े टुकड़े हो गई थी।

—स्वर्गीय लाला लाजपतराय

× × × हम देखते हैं, कि हमें जो अधिकार प्राप्त हैं वे हमारे शासकों के दिए हुए दान हैं। जब तक उनकी मर्ज़ी होगी, तब तक हम उन अधिकारों का उपभोग कर सकेंगे। वे हमें अधिकार-वञ्चित कर सकते हैं—उनके हाथों में जो क्षमता है, उसके बल से बीच-बीच में, किसी प्रकार का कारण दिखाए बिना ही अधिकार से वञ्चित किया गया है। निर्यातन और निष्पेषण के लिए सरकार ने कितनी व्यवस्थाएँ कर रक्खी हैं, उसकी लम्बी-चौड़ी फ़िहरिस्त तैयार करने से कोई लाभ नहीं है। स्वर्गीय देशबन्धु ने अपने जीवन के अन्तिम कई वर्षों तक उनके लिए घोर संग्राम कर चुके हैं। हमें उस आत्मोपलब्धि, आत्मोन्नति और आत्म-विकास के सुयोग से वञ्चित रक्खा गया है। अपने देश के अभ्यन्तरीन और वहिर्व्यापार से हमें दूर रक्खा गया है।

❀

यद्यपि अनेक अन्यायों के लिए सरकार ज़िम्मेदार है। तथापि यह बात अकपट भाव से स्वीकार करना होगा, कि अपनी वर्तमान अवस्था के लिए हम स्वयं भी कई अंशों में ज़िम्मेदार हैं। एक जाति का विभिन्न अंश जिस बन्धन में बँधा रहता है, उस बन्धन के सामर्थ्य और असामर्थ्य के ऊपर ही जाति का सामर्थ्य और असामर्थ्य निर्भर रहता है। कई शताब्दियों से हमारा वह बन्धन शिथिल हो गया है। हम छोटे-बड़े बहुत से सम्प्रदायों में बँट गए हैं।.........सर्वसाधारण में अज्ञानता और दरिद्रता और उच्च श्रेणी वालों में बढ़ते हुए असन्तोष के लिए अनेक अंशों तक सरकार ही ज़िम्मेदार है, इसमें सन्देह नहीं। परन्तु अपनी सामाजिक व्यवस्थाओं के लिए, जिसके कारण अपने लाखों भाइयों को हमने दलित और अस्पृश्य बना कर रक्खा है—जिस व्यवस्था के अनुसार हमने स्त्रियों को उनके वास्तविक अधिकारों से वञ्चित कर रक्खा है; निश्चय ही इसके लिए सरकार ज़िम्मेदार नहीं है।

❀

धर्म का उच्च आदर्श चाहे कुछ भी हो, हमारे प्रतिदिन के व्यवहार में धर्म का आदर्श बन गया है! कट्टरता, धर्मोन्मत्तता, असहिष्णुता, सङ्कीर्णता, स्वार्थपरता और जो कुछ समाज के लिए कल्याणकर है, उसके विपरीत भाव! परधर्मावलम्बी को घृणा करना ही आजकल धार्मिक होने का प्रधान लक्षण है। ऐहिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जितने अन्याय होते हैं, उनसे कहीं अधिक होते हैं धर्म के पवित्र नाम पर। हिन्दुओं और मुसलमानों में जिन तुच्छ कारणों को लेकर सङ्घर्ष उपस्थित होते हैं, उन्हें देख कर विस्मित होना पड़ता है।

—स्व० पण्डित मोतीलाल नेहरू

❀

सारी ख़राबियों का मूल कारण यह है, कि तुम दुर्बल हो—अतिदुर्बल! तुम्हारा शरीर दुर्बल है, तुम्हारा मन दुर्बल है, आत्म-विश्वास तो तुम्हारे अन्दर बिलकुल ही नहीं है। शत-शत वर्षों से विदेशी विजेताओं ने तुम्हें पीस डाला है। तुम्हारे अपने जनों ने भी तुम्हारे बल का हरण किया है। इस समय तुम पददलित, घायल, मेरुदण्डहीन, फोड़े की तरह हो। इस समय तुम्हें बल और वीर्य की ही आवश्यकता है। तुम्हें विश्वास करना चाहिए, कि तुम आत्मा हो—अमर-अमोघ बलशाली!!

—स्व० स्वामी विवेकानन्द

❀

# असहयोग आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास

[ श्री० 'भुक्तभोगी' ]

ईसा की बीसवीं शताब्दी का सन्, १९१९ भारत के इतिहास का एक चिरस्मरणीय साल है। क्योंकि इस साल कुछ ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई थीं, जिनकी अमिट छाप भारतवासियों के दिलों पर रहेगी। इसी साल समस्त भारत के एक स्वर से विरोध करने पर भी सरकार ने वह 'रौलट एक्ट' नाम का काला क़ानून पास कर डाला था, जिसे महात्मा गाँधी ने "शासक-शरीर की भीतरी बीमारी का प्रकट चिन्ह" बताया था। उसी साल 'जले पर नमक' की तरह भारत को 'मॉण्टेगु चेम्सफ़र्ड' रिफ़ॉर्म मिला था, जिसे भारत के राजनीतिज्ञों ने शासन-सुधार की मृग-मरीचिका नहीं, वरन् भारतवासियों का उपहास माना था। उसी साल पञ्जाब में वह अमानुषिक घटना सङ्घटित हुई थी, जिसे देख कर अत्याचार का दिल भी दहल सकता था। देश के शासन-कार्य में कुछ वास्तविक अधिकार प्राप्त करने की आशा से, यूरोपीय महासमर में, दिल खोल कर भारत ने साम्राज्य की सेवा की थी। वह इसके बदले में थोड़े से मानवोचित अधिकारों की ओर आशा लगाए बैठा था, परन्तु इसकी वही दशा हुई, जो एक बूँद के लिए घनघटा की ओर टकटकी लगाए हुए चातकी की अकस्मात् वज्रपात हो जाने पर हो जाती है! जनता ने पञ्जाबी अत्याचार की जाँच के लिए एक 'रॉयल कमीशन' की पुकार मचाई। परन्तु उसके बदले में लॉर्ड हण्टर की अध्यक्षता में एक कमिटी बैठी, जिसे स्वयं भारत-सरकार ने नियुक्त किया, अथच उसी की नृशंसतापूर्ण कार्रवाई की जाँच होने वाली थी।

जिस समय सरकार कमीशन नियुक्त करने में आगा-पीछा कर रही थी, उसी समय कॉङ्ग्रेस ने अपनी एक स्वतन्त्र जाँच-कमिटी नियुक्त कर ली। इस कमिटी में महात्मा गाँधी, पण्डित मोतीलाल नेहरू, देशबन्धुदास और अन्यान्य कई वकील-बैरिस्टर थे। सरकार ने जेल में बन्द नेताओं को उस कमिटी के सामने आकर अपना बयान देने की अनुमति नहीं दी, इसलिए कॉङ्ग्रेस ने सरकार की नियुक्त की हुई हण्टर कमिटी का बहिष्कार कर दिया। यहीं से असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात हुआ।

### अमृतसर कॉङ्ग्रेस

'हण्टर कमिटी' तथा ग़ैर-सरकारी कमिटी की नियुक्ति के पहले ही, अमृतसर में कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन हुआ। हण्टर कमिटी के सामने जो गवाहियाँ हुई थीं उससे पञ्जाब के अत्याचार का बहुत कुछ भण्डाफोड़ हो चुका था। इसलिए सारे देश में असन्तोष की आग धधक उठी। पञ्जाब के अत्याचार के सम्बन्ध में निन्दासूचक प्रस्ताव उपस्थित करते हुए लोकमान्य तिलक ने जो वक्तृता दी थी, उसमें आपने कहा था—"प्रजा की रक्षा के लिए ही राजा होता है, न कि बेपरवाही के साथ प्रजा की हत्या करने के लिए! प्रजा की रक्षा का भार जहाँ व्यक्ति-विशेष के ऊपर न्यस्त होता है, वहाँ उसकी ज़िम्मेदारी और भी अधिक होती है। साथ ही उसका प्रभाव और वेतन भी अधिक होता है, वर्तमान क्षेत्र में इन तमाम का असद्व्यवहार किया गया है। इसलिए अगर हम इसके विचार का दावा करें, तो इसमें कोई अन्याय की बात नहीं हो सकती। लन्दन में नहीं, यहीं जालियाँवाले बाग़ में ही उनका विचार होना चाहिए और अगर आवश्यकता हो तो वहीं उन्हें दण्ड भी मिलना चाहिए। कुछ लोगों का कहना है, कि उन्हें भारत में नहीं आने देना चाहिए! मैं पूछता हूँ क्यों? विचार के समय उपस्थित रहने के लिए और उपयुक्त दण्ड ग्रहण करने के लिए, उनका यहाँ आना अत्यावश्यक है। इस सम्बन्ध में मेरा मनोभाव अत्यन्त तीव्र है। युद्ध के बाद क़ैसर के प्रति इङ्गलैण्ड वालों का जैसा मनोभाव देखा गया है, इस सम्बन्ध में मेरा मनोभाव भी वैसा ही है। फ़ौजी क़ानून के समय पञ्जाब में जो निष्ठुर अत्याचार हुए हैं, उसकी तुलना में क़ैसर के कार्य क्या दूषणीय हैं? क़ैसर को सारे संसार के विरुद्ध लोहा लेना पड़ा था। हमारी सरकार ने कहा है, कि देशवासियों ने विद्रोह आरम्भ किया था, इसलिए उनके विरुद्ध सरकार को भी हथियार धारण करना पड़ा। परन्तु वास्तव में बात ऐसी न थी। पञ्जाब के लोगों ने विद्रोह आरम्भ किया था, यह घोर मिथ्या है। देश के लोगों को भयभीत करने के लिए ही लापरवाही के साथ यह हत्या की गई है। अगर किसी सभ्य देश में इस प्रकार का कार्य हो तो मैं कहूँगा धिक्कार है, उस सभ्यता को। दूसरे किसी देश में ऐसा कार्य नहीं हो सकता। इङ्गलैण्ड में यदि यह काण्ड हुआ होता, तो वहाँ वाले अपराधी को दण्ड दिलाने के लिए नौ महीने तक चुपचाप नहीं रह सकते थे। एक महीने में ही सब मामला ख़तम हो जाता। पार्लामेण्ट में प्रश्नों पर प्रश्न होते, वितर्क पर वितर्क होते। अपराधी को दण्ड न देने पर कोई मन्त्रि-सभा अपने को निरापद नहीं समझ सकती। दुर्भाग्य की बात है कि हम लोग छः हज़ार मील पर हैं, और हमारी सरकार प्रजातन्त्रमूलक नहीं है। इसीसे ब्रिटिश सरकार अपने को सम्पूर्ण निरापद समझ रही है।" इसी तरह अन्यान्य कई वक्ताओं ने भी इस काण्ड की निन्दा की और सबकी यही इच्छा थी, इसके प्रतिकार की कोई तदबीर अवश्य होनी चाहिए।

इसी समय ब्रिटिश पार्लामेण्ट ने 'मॉण्ट-चेम्सफ़र्ड' सुधार को भी स्वीकार कर लिया था और अपनी उदारता का परिचय देने के लिए, जिन लोगों को पञ्जाब के बलवे (?) में सज़ाएँ दी गई थीं और जिन्होंने मार-काट में भाग नहीं लिया था, वे छोड़ दिए गए थे। इसके अनुसार पञ्जाब के कई नेता और अलीबन्धु जेल से छूटते ही सीधे कॉङ्ग्रेस के पण्डाल में आए तो लोगों ने बड़े उत्साह से उनका स्वागत किया।

यद्यपि पार्लामेण्ट के दिए हुए हास्यास्पद सुधारों को कॉङ्ग्रेस ने स्वीकार कर लिया; परन्तु जनता इससे सन्तुष्ट न थी। पञ्जाब के भयङ्कर काण्ड के बाद, इस आँसू पोंछने के प्रयत्न को उसने अपमानजनक समझा।

### स्पेशल कॉङ्ग्रेस

अमृतसर कॉङ्ग्रेस के दो महीने बाद, मार्च सन् १९२० में कॉङ्ग्रेस की जाँच कमिटी की रिपोर्ट प्रकाशित हो गई। उसमें प्रकट की हुई बातों के कारण सारे देश में क्रोध का सञ्चार हुआ। इधर सरकार ने हण्टर कमिटी की रिपोर्ट प्रकाशित करने में अन्यथा विलम्ब कर दिया। इससे लोगों का सन्देह और भी बढ़ गया और वह सन्देह कुछ दिनों के बाद और भी पक्का हो गया। अब हण्टर कमिटी ने 'अल्पमत' और 'बहुमत' के नाम से दो प्रकार की रिपोर्टें प्रकाशित कीं। इधर सरकार ने 'इण्डेमनिटी क़ानून' के नाम से एक नया क़ानून पास करके, अत्याचारियों के विरुद्ध क़ानूनी कार्रवाई करने का रास्ता ही रोक दिया। इसके बाद भारत-मन्त्री तथा भारत-सरकार ने हण्टर कमिटी की रिपोर्ट पर अपनी असन्तोषजनक सम्मति प्रकट की। परन्तु कॉङ्ग्रेस जनमत की उपेक्षा नहीं कर सकी। उसने तुरन्त ही कलकत्ते में अपना एक 'विशेष अधिवेशन' किया। लाला लाजपतराय इस अधिवेशन के सभापति बनाए गए। पण्डित मदनमोहन मालवीय और देशबन्धु सी० आर० दास के प्रबल विरोध करने पर भी प्रतिनिधियों ने असहयोग का सिद्धान्त स्वीकार किया। कहा गया, कि अनन्त काल से प्रजा की शिकायतों पर ध्यान न देने वाली सरकार की सहायता न करना इस देश में धर्म माना गया है। इसका उपयोग भी प्रजा ने कई बार किया है। इसी पुरानी प्रथा के कारण बङ्गाल के विच्छेद के समय भी कुछ अंशों में सरकार की सहायता न करने का भाव उत्पन्न किया था। इसके सिवा, सन् १९०६ में, बनारस-कॉङ्ग्रेस के सभापति की हैसियत से श्री० गोपालकृष्ण गोखले ने भी इसी मार्ग की ओर इशारा किया था। उन्होंने कहा था—"यदि ऐसे आदमियों की राय का भी निरादर कर दिया जाय, यदि भारतवासी गूँगे पशु की तरह हाँके जाएँ, यदि ऐसे मनुष्यों को, जिनका किसी दूसरे देश में प्रसन्नता से सम्मान किया होता, उनके ही देश में उनकी असहाय तथा अपमानजनक अवस्था का अनुभव कराया जाय, तो मैं यही कहूँगा कि जनता के हित के लिए नौकरशाही के साथ सब प्रकार के सहयोग की आशा को विदा कर दो। ब्रिटिश शासन के एक सौ वर्ष बाद भी यदि ऐसी अवस्था उत्पन्न होती है तो ब्रिटिश शासन पर मेरी समझ में इससे बढ़ कर कोई दूसरा दोषारोपण नहीं हो सकता।"

ये वाक्य गोखले महोदय ने बङ्ग-विच्छेद के प्रतिष्ठित विरोधियों के सम्बन्ध में कहे थे। इसके दो वर्ष बाद स्वर्गीय लोकमान्य ने सत्याग्रह के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। सन् १९०९ में लाहौर-कॉङ्ग्रेस में प्रवासी भारतवासियों के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव उपस्थित करते हुए गोखले महोदय ने सत्याग्रह के सम्बन्ध में कहा था—"सत्याग्रह क्या है? वह प्रधानतः आत्मरक्षा मूलक है और नैतिक और आध्यात्मिक शस्त्रों से लड़ा जाता है। सत्याग्रही अत्याचार का विरोध स्वयं कष्ट सहन करके करता है। वह पाशविक बल का सामना आत्मिक बल से करता है। वह मनुष्य के अन्दर रहने वाले पशु का मुक़ाबला मनुष्य के अन्दर रहने वाले देवता से करता है। वह अत्याचार का मुक़ाबला सहनशीलता से करता है। बल का मुक़ाबला अन्तरात्मा से करता है। अन्याय का मुक़ाबला विश्वास से और अधर्म का मुक़ाबला कर्म से करता है।"

महात्मा गाँधी ने इस असहयोग की नीति को कार्य-रूप में परिणत करने का भार लिया और असहयोगी की

---

( ४६वें पृष्ठ का शेषांश )

हम जितने प्रकार के पाप-भारों से पीड़ित हो रहे हैं, उनमें कापुरुषता सबसे बड़ा पाप है और इससे भी बड़ा है हिंसा। रक्तपात और रक्तपात के नाम पर जितने कार्य हैं, उसकी अपेक्षा भी कापुरुषता अत्यन्त कलुषित होती है। क्योंकि भगवान के ऊपर से विश्वास हटते ही और उसकी विभूति के सम्बन्ध में अज्ञान होने से ही मनुष्य कापुरुष हो जाता है।

—महात्मा गाँधी

* * *

कर्मसूत्री तैयार करके वे संग्राम में प्रवृत्त हुए। एक ओर पञ्जाब के अत्याचारों की उपेक्षा और दूसरी ओर मुसलमानों की ख़िलाफ़त के साथ अविचार, इन दोनों घटनाओं ने असहयोग आन्दोलन के लिए मैदान साफ़ कर दिया।

## ख़िलाफ़त कॉन्फ़्रेन्स

नवम्बर सन् १९१९ में दिल्ली में ख़िलाफ़त कॉन्फ़्रेन्स का अधिवेशन हुआ। मुसलमानों में बड़ी उत्तेजना फैली थी। हिन्दू भी काफ़ी तादाद में शामिल थे। महात्मा गाँधी की सलाह से कॉन्फ़्रेन्स ने निश्चय किया, कि यदि ख़िलाफ़त का मसला सन्तोषजनक भाव से हल न हो तो सरकार से सहयोगिता करना एकदम बन्द कर दिया जाय। इसके बाद कॉन्फ़्रेन्स की दूसरी बैठक, १९२० की १७ अप्रैल को मद्रास में हुई। वहाँ असहयोग नीति का स्पष्टीकरण इस प्रकार हुआ—(१) ऑनरेरी पद, सरकारी उपाधियाँ और कौन्सिलों की मेम्बरी छोड़ दी जाए, (२) सरकारी नौकरी छोड़ दी जाए, (३) पुलिस और फ़ौज की नौकरियाँ छोड़ दी जाएँ, (४) सरकारी कर देने से इन्कार कर दिया जाए।

यद्यपि अभी तक असहयोग का सम्बन्ध अधिकतर ख़िलाफ़त के मसले से ही था, तो भी महात्मा गाँधी ने इसे गर्म दल के नेताओं के सामने पेश करने का निश्चय किया और इसके लिए इलाहाबाद में एक कॉन्फ़्रेन्स बैठी। असहयोग का कार्यक्रम तैयार करने के लिए महात्मा गाँधी और मुसलमान नेताओं की एक कमिटी बनाई गई। इस कमिटी ने असहयोग का कार्यक्रम जुलाई में प्रकाशित किया और उसमें अदालतों के बहिष्कार का भी ज़िक्र आया।

इसके बाद कलकत्ते में कॉङ्ग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ था, जिसका ज़िक्र हम ऊपर कर आए हैं।

## नागपुर कॉङ्ग्रेस

नागपुर की कॉङ्ग्रेस दिसम्बर सन् १९२० में हुई थी। कौन्सिलों का निर्वाचन हो चुका था। राष्ट्रीय दल वाले नेता कॉङ्ग्रेस का आदेश मान कर निर्वाचन-द्वन्द्व से अलग रहे। फलतः इन चुनावों के बारे में तीन वर्ष तक विचार करने की कोई आवश्यकता न रही। स्कूल, कॉलेज और अदालतों के बहिष्कार का कई प्रभावशाली नेताओं ने घोर विरोध किया, परन्तु चौदह हज़ार प्रतिनिधियों में से अधिकांश ने कलकत्ते के प्रस्ताव पर दृढ़ रहने का ही निश्चय किया। फलतः थोड़े से रद्दोबदल के साथ यहाँ भी असहयोग-सम्बन्धी प्रस्ताव प्रबल बहुमत से पास हो गया।

उसी समय कनाट् के ड्यूक भारत की सैर करने आ रहे थे। इसलिए कॉङ्ग्रेस ने यह भी निश्चय किया, कि राज-परिवार से किसी प्रकार का द्वेष न रखते हुए भी, ड्यूक महोदय के स्वागत-समारोह का बहिष्कार किया जाए। फलतः जब जनवरी में ड्यूक आए तो जिस शहर में गए वहाँ पूर्ण हड़ताल रही, मानो भारत ने दिखा दिया, कि अब वह गुलाम या पराधीन नहीं रहना चाहता। दिल्ली और कलकत्ता-जैसे शहरों में जहाँ ड्यूक महोदय को सूनी सड़कों पर सरकारी स्वागत मिल रहा था, वहाँ जब महात्मा गाँधी या कोई और नेता जाता था तो उनके मुँह से स्वतन्त्रता का सन्देश सुनने के लिए लाखों की भीड़ होती थी।

नागपुर कॉङ्ग्रेस ने नवीन सङ्गठन की नियमावली बनाई। कॉङ्ग्रेस का ध्येय बदल दिया गया, कॉङ्ग्रेस तथा उससे सम्बन्ध रखने वाली कमिटियों का पुनः सङ्गठन हुआ, उनके चुनाव के सम्बन्ध में नियम बने, प्रतिनिधियों की संख्या निश्चित की गई, और कॉङ्ग्रेस के कार्य को बराबर जारी रखने के लिए एक वर्किङ्ग कमिटी भी बनाई गई।

३१ मार्च, सन् १९२१ में बेज़वाड़ा में कॉङ्ग्रेस की स्थायी समिति की बैठक हुई और निश्चय हुआ, कि आगामी जून तक कॉङ्ग्रेस का कार्य सञ्चालन करने के लिए एक करोड़ रुपए एकत्र कर लिए जायँ, कॉङ्ग्रेस के एक करोड़ सदस्य बनाए जाएँ और भारत के २० लाख घरों में चर्ख़े चलवाने का प्रबन्ध हो। इसके बाद समिति की दूसरी बैठक बम्बई में हुई और निश्चय हुआ, कि आगामी ३० सितम्बर के अन्दर-अन्दर विदेशी वस्त्र का सम्पूर्ण रूप में बहिष्कार कर दिया जाए तथा युवराज के आने पर उनके स्वागत-समारोह का बहिष्कार भी किया जाए।

## स्वयंसेवक आन्दोलन

२२ और २३ नवम्बर को समिति की एक बैठक फिर बम्बई में हुई और निश्चय हुआ कि बङ्गाल, पञ्जाब और संयुक्त प्रान्त में जहाँ सरकार ने स्वयंसेवक दल के सङ्गठन को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया है, वहाँ से सब स्वयंसेवक दलों को एक सङ्गठन के अन्दर लाकर सरकार के विधान को चुनौती दी जाए। सरकार ने पहले तो आन्दोलन की दिल्लगी उड़ाई। बड़े लाट साहब ने उसे मूर्खों की योजना बता कर उपहास किया। फिर इस बात का प्रचार किया गया, कि अगर अङ्गरेज़ भारत से अपना हाथ खींच लें तो रक्त-प्रलय आरम्भ जायगा। यह भी घोषित किया कि असहयोगी लोग बोलशेविज़्म को बुलाना चाहते हैं। अन्त में कौन्सिलों के मॉडरेट नेताओं से प्रार्थना की गई कि वे इस मुसीबत में सरकार की सहायता करें। असहयोग आन्दोलन का दमन करने के लिए प्रान्तिक सरकारों के पास नई-नई योजनाएँ भेजी गईं। 'सिडिशस मीटिङ्ग एक्ट', क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट और १४४ धारा का मनमाना उपयोग होने लगा। सरकारी अफ़सरों ने 'अमन सभाएँ' क़ायम कीं। एङ्ग्लो इण्डियन एसोसिएशन की एमरजेन्सी कमिटी ने भी आन्दोलन के विरुद्ध अधाधुन्ध प्रचार किया। अली-बन्धु गिरफ़्तार हुए और कराची में उन पर मामला चला और उन्हें भारी सज़ा दी गई। आपके मुक़द्दमे की पूरी कार्यवाही पाठकों ने 'भविष्य' के गताङ्क में पढ़ी ही होगी!

अली-बन्धुओं को १ नवम्बर को सज़ा दी गई। इस सज़ा में कॉङ्ग्रेस ने मत-स्वतन्त्रता को दबाने का प्रयत्न देखा, इसलिए उसने अली-बन्धुओं के अपराधों को अपनी कमिटियों में पास किए प्रस्तावों में भी किया। उसके समर्थन में हज़ारों आदमियों ने भाग लिया। सरकार पूर्णरूप से कुण्ठित हो गई। फिर किसी आदमी पर उन अपराधों के लिए मामला नहीं चलाया गया।

## प्रिन्स का आगमन

१७ नवम्बर को प्रिन्स ऑफ़ वेल्स भारत का भ्रमण करने आए। उस दिन सारे भारत में हड़ताल रही। वास्तव में सरकार ने उन्हें किसी राजनीति के उद्देश्य की सिद्धि के लिए बुलाया था। परन्तु देश ने उनके स्वागत-समारोह का बहिष्कार करके उसे विफल कर दिया।

इसके बाद नौकरशाही ने और भी उग्र मूर्ति धारण की, इलाहाबाद में कॉङ्ग्रेस कमिटी के ५५ सदस्य एक साथ ही गिरफ़्तार कर लिए गए, उन पर यह मज़ेदार इलज़ाम लगाया गया, कि वे स्वयंसेवक भर्ती करने के लिए मसौदा बना रहे थे। इनमें से प्रत्येक को १८ महीने की सख़्त सज़ा दी गई। परन्तु अन्त में कुछ दिनों के बाद वे छोड़ दिए गए।

## नेताओं की गिरफ़्तारियाँ

देशबन्धु चित्तरञ्जन दास, जो कि अहमदाबाद कॉङ्ग्रेस के सभापति चुने गए थे, २३ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए। उन पर वालण्टियर बनाने के लिए अपील प्रकाशित करने का अपराध लगाया गया और दो महीने तक हवालात में रक्खे जाने पर छः महीने के लिए जेल भेजे गए। हवालात के ज़माने में कहा जाता है, कि उन्हें एक सार्जेण्ट ने मारा भी था। अपने मामले के समय देशबन्धु ने अदालत की कार्रवाई में कोई भाग नहीं लिया और न अपना पक्ष समर्थन किया।

इसके बाद ही मौ० अबुलकलाम आज़ाद की गिरफ़्तारी हुई। शायद नौकरशाही ने हिन्दू नेता के बाद एक मुसलमान नेता को गिरफ़्तार करना भी मसलहत समझा। आप पर १२४-अ धारा के अनुसार मामला चला और सज़ा दी गई। आपके बाद लाला लाजपतराय, आचार्य भगवानदास, पं० जवाहरलाल नेहरू तथा अन्यान्य सैकड़ों नेता और हज़ारों स्वयंसेवक पकड़े गए। गाँधी टोपी और खद्दर तो मानो नौकरशाही के लिए मानो 'हौआ' बन गए थे। इनका उपयोग करने वालों का हर तरह अपमान और तिरस्कार होता था। खद्दर का कुर्ता, गाँधी टोपी पहनना ही राजद्रोही होने का चिह्न था। सैकड़ों नहीं, वरन् हज़ारों आदमी इसी महाभयङ्कर अपराध में पकड़े गए थे। स्वयंसेवकों को पीटना और जाड़े के दिनों में उन्हें नङ्गा करके तलाबों में डाल देना, पुलिस के लिए एक साधारण दिल-बहलाव था। जिनके ऊपर कोई विशेष अपराध नहीं लगाया जा सका, उनके लाइसेन्स ज़ब्त करके हथियार ही छीन लिए गए। राष्ट्रीय विद्यालयों के काग़ज़ात नष्ट कर देना भी विद्रोह-दमन का एक उपाय था।

जनता ने बड़ी शान्ति और संयम से काम लिया। इस आन्दोलन का इतना प्रभाव पड़ा कि श्रीमान् बड़े लाट साहब तक 'चकरा' गए। २४ जनवरी को बारदोली से सामूहिक सत्याग्रह प्रारम्भ करने का स्मरणीय निर्णय किया गया। महात्मा गाँधी ने इसे अन्तिम और अमिट निर्णय कहा था और सरकार के पास 'अल्टीमेटम' भेजा। सारा देश शारीरिक शक्ति के ऊपर आत्मिक शक्ति की विजय देखने के लिए उत्सुक हो उठा। परन्तु ईश्वर की इच्छा कुछ दूसरी ही थी।

## चौरीचौरा-काण्ड

गोरखपुर ज़िले के चौरीचौरा नामक गाँव में पुलिस के अत्याचारों से लोग घबरा उठे। संयम और सहिष्णुता का बाँध टूट गया। उत्तेजित जनता ने थाने में आग लगा दी और पुलिस के कई आदमियों को पकड़ कर आग में झोंक दिया। यह दुर्घटना का समाचार महात्मा गाँधी को मिला, तो वे अत्यन्त मर्माहत हुए। उन दिनों बारदोली में कॉङ्ग्रेस कमिटी की बैठक हो रही थी। वहाँ निश्चय हुआ कि "बारदोली तथा अन्य स्थानों में जो सामूहिक सत्याग्रह आरम्भ होने वाला था, वह मुलतवी कर दिया जावे और तब तक मुलतवी रहे जब तक कि वातावरण इतना अहिंसात्मक न हो जावे, कि गोरखपुर की जनता के अत्याचार या बम्बई या मद्रास की गुण्डेबाज़ी पुनः न होने का विश्वास हो जाय।" इसके साथ ही असहयोग-सम्बन्धी सारे आन्दोलन भी बन्द कर दिए गए और विधायक कार्यक्रम निश्चित किया गया।

इसके बाद २४ और २५ फ़रवरी को दिल्ली में कॉङ्ग्रेस कमिटी की बैठक हुई। महात्मा जी ने लोगों को समझाया कि बारदोली के प्रस्ताव के कारण नागपुर कॉङ्ग्रेस का प्रस्ताव उलटा नहीं जाता। परन्तु जनता तो निराश हो चुकी थी। महात्मा गाँधी ने भी इस नैराश्य का अच्छी तरह अनुभव किया था। वे समयोपयोगी कार्यक्रम बनाने की चिन्ता में लगे। परन्तु नौकरशाही ने इसे महात्मा जी की कमज़ोरी समझा और वे गिरफ़्तार कर लिए गए।

## महात्मा गाँधी का मुक़द्दमा

महात्मा गाँधी का विचार संसार के इतिहास की एक स्मरणीय घटना है। महामति एण्ड्रयूज़ ने इसे महात्मा ईसा के विचार से तुलना की थी। महात्मा जी के

# 'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

## राष्ट्रपति सहित सन् १९३० की कॉङ्ग्रेस-वर्किङ्ग-कमिटी के प्रतिभाशाली सदस्य

पहली पंक्ति ( बाईं ओर से ) श्री० महादेव देसाई, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सरदार शार्दूलसिंह, सरदार वल्लभभाई पटेल ( भावी राष्ट्रपति ), डॉक्टर अन्सारी, पं० जवाहरलाल नेहरू ( राष्ट्रपति ), पं० मदनमोहन मालवीय, मौलाना अब्बुल कलाम आज़ाद, श्री० जे० एम० सेन गुप्ता, श्रीमती केप्टन और कुमारी मनीबेन पटेल ।

दूसरी पंक्ति ( बाईं ओर से ) चौधरी ख़लीकुज़्ज़माँ, श्री० ब्रेलवी, डॉक्टर सय्यद महमूद, डॉक्टर पट्टाभी सीतारामय्या, श्री० जैरामदास दौलतराम, डॉक्टर सत्यपाल, बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, श्री० सुन्दरलाल, श्री० सी० राजगोपालाचारी, श्रीमती उर्मिला देवी और श्री० तसद्दुक़ अहमद ख़ाँ शेरवानी ।

तीसरी पंक्ति ( बाईं ओर से ) पं० गोविन्द मालवीय, श्री० शङ्करलाल बैङ्कर, श्री० के० एम० मुन्शी, श्री० मथुरादास टीकम जी, पं० गोविन्द वल्लभ पन्त, लाला दूनीचन्द, श्री० आसफ़अली, श्री० रफ़ी अहमद क़िदवई, श्री० यूसुफ़ इमाम और मौलाना अब्दुल बारी ।

बम्बई के कॉङ्ग्रेस फ़्री अस्पताल के उत्साही डॉक्टरों, नर्सों और वालण्टियरों का ग्रूप ; जिन्होंने सत्याग्रह-संग्राम में देश की अपरिमित सेवा की है ।

# तपोभूमि से लौटने वाली देवियों का सादर स्वागत

अभिनन्दन कर रहा मौन या वाणी से सारा संसार ! पहनाते हैं तुमको हम अनुराग-भरे हृदयों का हार !!

कलकत्ते की श्रीमती शान्तिदास, एम० ए०, जिन्हें वर्तमान आन्दोलन में चार मास का दण्ड मिला था।

देहली की प्रभावशाली प्रचारिका—श्रीमती पार्वती देवी डिडवानिया, जिन्हें छः मास की सज़ा हुई थी।

कलकत्ते की श्रीमती अशोकलता दास, जिन्हें सत्याग्रह-आन्दोलन में चार मास की सज़ा हुई थी।

कलकत्ते की श्रीमती इन्दुनलिनी भट्ट, जिन्हें वर्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में कारा-वास-दण्ड दिया गया था।

बम्बई के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री० के० नटराजन की लड़की—कुमारी नटराजन, जिन्हें वर्तमान आन्दोलन में दो मास की सज़ा दी गई थी।

उपनगर ( बम्बई ) की डिक्टेटर—श्रीमती कमला बेन, जिन्हें ६ मास का कारा-वास-दण्ड दिया गया था।

# तपोभूमि से लौटने वाली देवियों का सादर स्वागत

अभिनन्दन कर रहा मौन या वाणी से सारा संसार ! पहनाते हैं तुमको हम अनुराग-भरे हृदयों का हार !!

राष्ट्रीय महिला-समिति (कलकत्ता) की प्रेज़िडेण्ट—सौभाग्यवती चमेली देवी गुप्ता, जिन्हें पिकेटिङ्ग के अपराध में छः मास की सज़ा हुई थी।

१७ वर्षीय कुमारी सूरज चुनी, जिन्हें वर्त्तमान आन्दोलन में एक मास की सज़ा दी गई थी।

श्रीमती चमेली देवी गुप्ता की १३ वर्षीय बालिका—कुमारी सरस्वती, जिन्हें पिकेटिङ्ग के अपराध में चार मास का दण्ड मिला था।
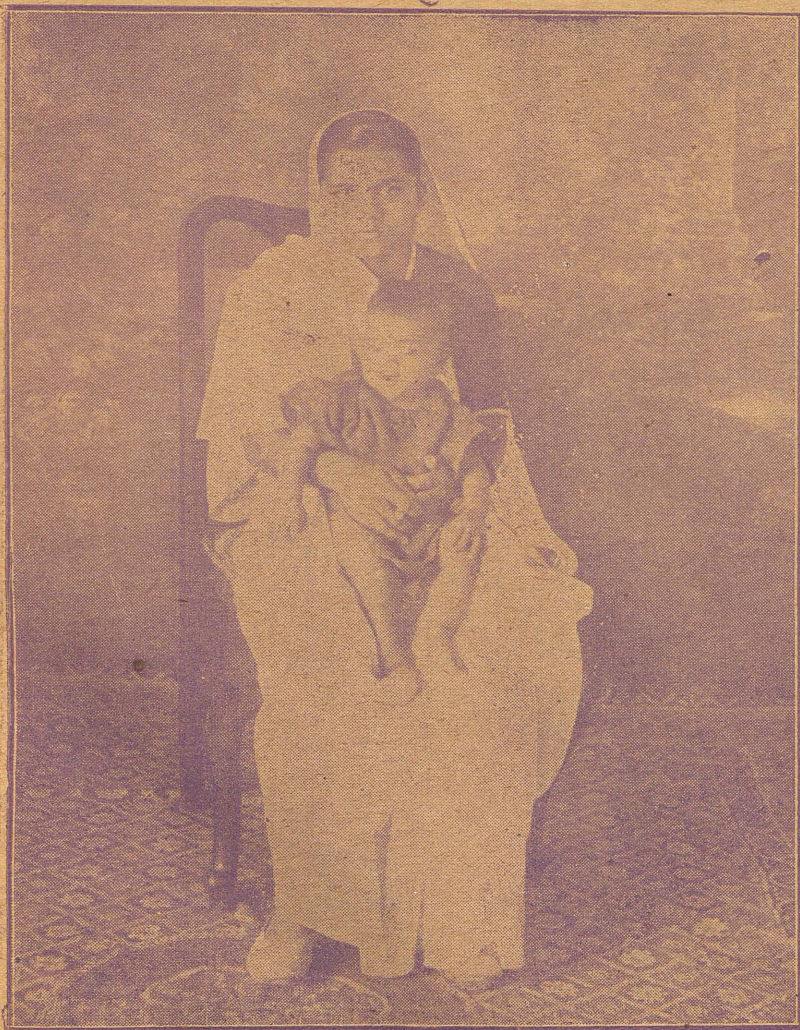
ब्यावर कॉङ्ग्रेस कमिटी की डिक्टेटर—श्रीमती सत्यभामा देवी, जो वर्त्तमान आन्दोलन में अपने बच्चे सहित जेल गई थीं।

तीरूपुर (मद्रास) 'युद्ध-समिति' की सर्व-प्रथम सदस्या—श्रीमती पद्मावती अशर, जिन्हें सत्याग्रह आन्दोलन में छः सप्ताह की सज़ा हुई थी।

# तपोभूमि से लौटने वाली देवियों का सादर स्वागत

**अभिनन्दन कर रहा मौन या वाणी से सारा संसार ! पहनाते हैं तुमको हम अनुराग-भरे हृदयों का हार !!**

बगलकोट (कर्नाटक) स्त्री-सेविका-सङ्घ की नेत्री—कुमारी सीताबाई बलबल्ली, जो हाल ही में जेल से मुक्त हुई हैं।

आगरे की सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्री—श्रीमती शान्तीदेवी, जो वर्तमान आन्दोलन में अपने बच्चे सहित जेल गई थीं।

देहली के महिला-वालंटियर-दल की प्रधान सञ्चालिका—श्रीमती कोहली, जो हाल ही में जेल से मुक्त हुई हैं।

कानपुर की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री—श्रीमती सरला देवी शर्मा, जिन्हें तीन मास की सज़ा दी गई थी।

कैरा ज़िले की सर्व-प्रथम महिला-डिक्टेटर—श्रीमती भक्तिलक्ष्मी गोपालदास, जिन्हें वर्तमान-आन्दोलन में छः मास का कारावास-दण्ड दिया गया था।

नागपुर की सर्व-प्रथम मारवाड़ी-ब्राह्मण महिला—श्रीमती गङ्गाबाई चौबे, जो जङ्गल-क़ानून तोड़ने के अपराध में जेल गई थीं।

ऊपर राजद्रोह-प्रचार का अपराध लगाया था। आपने अदालत की कार्रवाई में कोई भाग नहीं लिया था। परन्तु एक बड़ा ही मार्मिक बयान दिया था, जिसकी कुछ पंक्तियों का भाव इस प्रकार था :—

"अपना बयान पढ़ने से पहले मैं यह बतला देना चाहता हूँ कि विद्वान एडवोकेट जनरल ने मेरे सम्बन्ध में जो वक्तव्य प्रकाशित किए हैं, मैं उनका सम्पूर्ण भाव से अनुमोदन करता हूँ। उन्होंने अपने भाषण में मेरे प्रति सम्पूर्ण सुविचार किया है। क्योंकि यह बिलकुल सच है, कि वर्तमान शासन-पद्धति के प्रति असन्तोष फैलाने का मुझे नशा-सा हो गया है। मैं इस सत्य को अदालत से छिपाना नहीं चाहता। विद्वान एडवोकेट-जनरल का यह कथन सत्य है, कि 'यङ्ग-इण्डिया' से जब से मेरा सम्बन्ध है, तभी से मैंने इस असन्तोष का प्रचार आरम्भ नहीं किया है, वरन् उसके बहुत पहले से किया है। इस दुखदायी-कर्त्तव्य का पालन मैंने अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह समझ कर किया है। बम्बई, मद्रास, चौरीचौरा, की दुर्घटनाओं के बारे में एडवोकेट जनरल ने मेरे ऊपर जो दोषारोपण किया है, मैं उन सबका समर्थन करता हूँ। मैंने रात-रात भर सोच कर देखा है, कि उन घटनाओं से अपना सम्बन्ध अस्वीकार करना मेरे लिए असम्भव है। एक शिक्षित और दायित्व-ज्ञान-सम्पन्न मनुष्य की हैसियत से, मुझे इन कार्यों का फलाफल जानना चाहिए था। एडवोकेट जनरल का यह कहना भी सच है, कि मैं जानता था कि मैं आग से खेल रहा हूँ। मैंने अपनी ज़िम्मेदारी समझ कर ही काम किया है और अगर मैं अभी छोड़ दिया जाऊँ, तो वही काम करूँगा। आज सबेरे मैंने सोच कर देखा है, कि इस समय जो बातें मैंने कही हैं, उन्हें अगर नहीं कहता तो मेरे कर्तव्य-पालन में त्रुटि रह जाती।

"मैं हिंसा से बचना चाहता हूँ, अहिंसा मेरा परम धर्म है। किन्तु मुझे अपने लिए रास्ता चुन लेना पड़ा है। जिस शासन-पद्धति ने हमारे देश की अपूर्णीय क्षति की है, उसे या तो मैं स्वीकार कर लूँ, या उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने की सारी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले लूँ। मैं जानता हूँ, कि मैं तथा मेरे देशवासियों ने समय-समय पर पागलों की तरह काम किया है। मैं उसके लिए अत्यन्त दुखित हूँ, और जो कुछ मैंने किया है, उसके लिए कठोर से कठोर दण्ड की प्रार्थना करता हूँ। मैं दया की भिक्षा नहीं माँगता। मैं अपने को निर्दोष प्रमाणित करने की चेष्टा भी नहीं करता। क़ानून की दृष्टि में जो इच्छाकृत अपराध है, मैंने उसी को नागरिक का प्रथम कर्तव्य समझा है। उसके लिए मुझे जो कठोर से कठोर दण्ड दिया जा सके, मैं उसी के लिए प्रार्थी हूँ। विचारक महाशय! अगर आपकी यह धारणा हो, कि जिस शासन-तन्त्र या क़ानून की आप परिचालना में सहायता कर रहे हैं, वह देश के लिए मङ्गलकर है, तो आप मेरे सब से कठोर दण्ड का विधान करें या स्वयं पद-त्याग करें। आप मेरे मतानुसार काम करेंगे, इसकी मुझे आशा नहीं है।"

महात्मा जी का वक्तव्य समाप्त होने पर जज साहब ने अपना लम्बा फ़ैसला सुनाया और महात्मा जी को ६ वर्ष की सज़ा सुना दी गई।

* * *
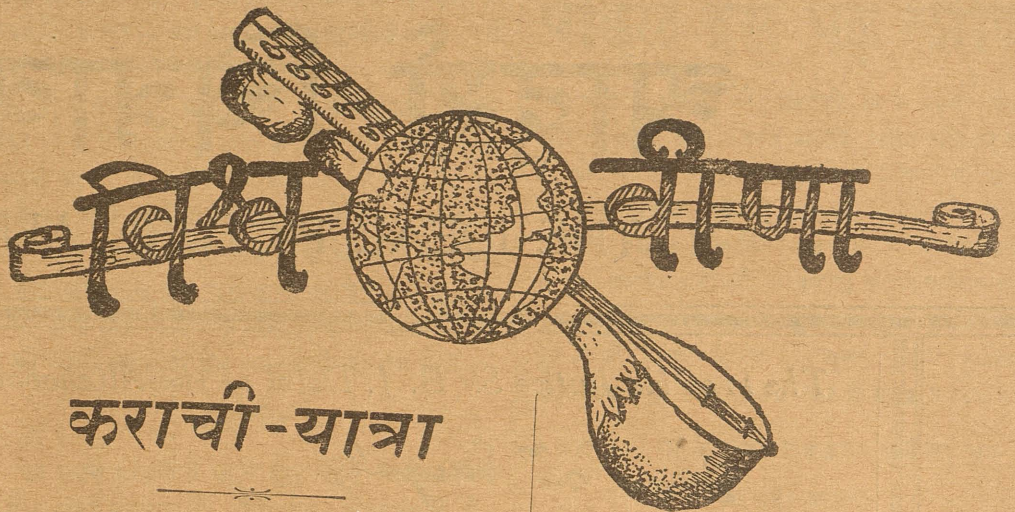


# कराची-यात्रा

[ सहयोगी 'भारत' में पं० लक्ष्मीधर जी वाजपेयी ]

एक वर्ष सत्याग्रह-आन्दोलन होने के बाद इस वर्ष कराची नगर में राष्ट्रीय महासभा होने जा रही है। इसलिए इस वर्ष की महासभा भारतवर्ष के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना होगी। इस लेख के निकलते-निकलते राष्ट्रीय यात्री कराची के लिए अपना सामान बाँधते रहेंगे। अतएव, ऐसी दशा में, उनके लिए यह लेख अवश्य ही उपयोगी और मनोरञ्जक होगा।

## शहर की स्थिति

कराची नगर हिन्द महासागर के पश्चिमी कोने पर एक बड़े भारी मैदान में बसा है। प्रयाग से कराची को दिल्ली, भटिण्डा और सामसट्टा, इन जङ्क्शनों से जाना पड़ता है। किराया रेल का, थर्ड क्लास का, इस समय चौदह-पन्द्रह रुपए के बीच में है। भटिण्डे के आगे ही राजपूताने के उत्तरी भाग का रेगिस्तान शुरू हो जाता है। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाइए, रेतीला मैदान बढ़ता जाता है। सामसट्टा जङ्क्शन है, भावलपुर रियासत के आगे। इसके आगे जब गाड़ी चलती है, तब कोसों का मैदान चारों तरफ़ नज़र आता है। कहीं वृक्षों का नाम-निशान नहीं है, हाँ, बीच-बीच में करील और थूहर की झाड़ियाँ मैदान भर में दिखलाई देती हैं, जिनके कारण मैदान के दृश्य की रमणीयता और भी बढ़ जाती है। हवा प्रायः तेज़ चला करती है, जिससे मैदान की रेत उड़-उड़ कर खिड़कियों से रेलगाड़ी के अन्दर आती और मुसाफ़िरों के कपड़ों और शरीर को धूलि-धूसरित कर देती है। खिड़कियाँ बन्द कर देने पर भी रेत से बचत बहुत कम होती है।

पाँच-छः वर्ष हुए, मैंने कराची की यात्रा की थी; और उसका सचित्र वर्णन २४ सितम्बर १९२१ की "माधुरी" पत्रिका में छपवाया था। उसी के आधार पर मैं पाठकों को यहाँ कुछ वृत्तान्त देने बैठा हूँ। प्रयाग से डाकगाड़ी के द्वारा कराची पहुँचने में अधिक से अधिक ४८ घण्टे लगते हैं। कराची का स्टेशन बहुत सुन्दर तो नहीं है, परन्तु चारों ओर कोसों का मैदान होने के कारण, लम्बा-चौड़ा ख़ूब है। रेलवे के लम्बे-चौड़े गोदाम हैं, जिनमें लाखों मन गल्ला, रूई, बिनौला, इत्यादि भारत की—विशेषकर पञ्जाब की अमूल्य सम्पत्ति विदेशों को भेजने के लिए उतारी जाती है।

शहर कोसों के रेतीले मैदान में ख़ूब खुला हुआ बसा है। सड़कें ख़ूब चौड़ी और बहुत ही साफ़ हैं। म्युनिसिपैलिटी ने सफ़ाई का बहुत ही अच्छा प्रबन्ध कर रक्खा है। अनेक घोड़ा-गाड़ियों और अन्य वाहनों के निरन्तर चलते रहने पर भी सड़कों पर कहीं गन्दगी दिखाई नहीं देती। मेहतर टोकरी और झाड़ू लिए घूमते ही रहते हैं। जहाँ ज़रा सी गन्दगी देखी, चट साफ़ कर दिया। परन्तु गलियों की दशा अच्छी नहीं है। गलियाँ यद्यपि पक्की और साफ़ बनी हैं; पर बस्ती के लोग सफ़ाई का ख़्याल नहीं रखते। ऊँचे-ऊँचे भवनों के ऊपर से स्त्रियाँ गन्दा पानी और कूड़ा-करकट दिन भर नीचे गलियों में फेंका करती हैं। वह गन्दगी कभी-कभी रास्ता चलने वालों के ऊपर भी गिर पड़ती है; और यदि कोई बिगड़े दिल का गुण्डा हुआ तो उन स्त्रियों को चलते-चलते दो-चार अभद्र शब्द भी सुना ही देता है! यह प्रथा बहुत ही बुरी है। परन्तु जब तक शहर के निवासी स्वयं इनका सुधार न करना चाहें, म्युनिसिपैलिटी बेचारी कर ही क्या सकती है।

कराची के भवन प्रायः बहुत ही साफ़-सुथरे और सुन्दर बने हुए हैं। विशेषता यह है कि सब प्रायः एक ही रङ्ग—ख़ाकी रङ्ग—से पुते हैं। इसलिए शहर की रमणीयता और भी बढ़ गई है। सवारियाँ यहाँ मोटर, ट्राम, घोड़ागाड़ी, ऊँटगाड़ी और गधागाड़ी हैं। ऊँटगाड़ी और गधागाड़ी केवल बोझा ढोने के काम आती हैं। बैलों का उपयोग प्रायः नहीं के बराबर है। ट्रामगाड़ी यहाँ पर पहले बिजली से नहीं, बल्कि मोटर से चलती थी। अब शायद बिजली से चलने लगी हो।

समुद्र के किनारे और भारत के पश्चिम कोण पर होने के कारण कराची का जल-वायु प्रायः समशीतोष्ण है। स्वास्थ्य के लिए यहाँ का जलवायु बहुत ही लाभदायक जान पड़ता है।

## व्यापार-व्यवसाय

व्यापार-व्यवसाय यहाँ जो कुछ है, वह बन्दरगाह के कारण है। अपने देश की चीज़ों को बाहर भेजना और बाहर की चीज़ों को अपने देश में पहुँचाना ही यहाँ के व्यापारियों का धन्धा है। जहाज़ी स्टेशन अर्थात् बन्दरगाह और रेलवे-स्टेशन दोनों में से किसी के गोदामों को देखिए, माल से पटे पड़े हैं। भारत से गल्ला, रुई, बिनोला अन्य तेलहन-दाना, तथा कच्चा माल रवाना किया जा रहा है, और विदेश से आने वाला कपड़ा, तथा नाना प्रकार की विलासिता की चीज़ें जहाज़ों से उतार कर, भारत के शहरों में भेजने के लिए रेलगाड़ी पर लादी जा रही हैं। यहाँ के अधिकांश व्यवसायी और कुछ नहीं, सिर्फ़ विदेशी कम्पनियों के दलाल या एजेण्ट हैं। शहर के बाज़ार विदेशी माल से सदैव पटे रहते हैं। कराची का अधिकांश व्यापार पञ्जाब, सिन्ध और दिल्ली प्रान्त के साथ होता है।

## दर्शनीय स्थान

### मनोरा

यह स्थान बन्दरगाह से लगभग डेढ़ मील दूर समुद्र के बीच में है। यह एक पहाड़ी है, जिसको घेर कर सरकार ने समुद्री क़िला बना लिया है। इसमें एक दीप-

स्तम्भ, अर्थात् "लाइट-हाउस" भी है। इससे रात को 'सर्च लाइट' डाल कर जहाज़ों के आने-जाने का पता लगा सकते हैं। क़िले में विशेषकर फ़ौजी सामान रहता है। इसको देखने के लिए यात्री लोग डोंगी पर जाते हैं। किराए की सुन्दर सजी हुई डोंगियाँ बन्दरगाह के पास समुद्र में रहती हैं।

### बन्दरगाह

कराची का बन्दरगाह शहर से लगभग तीन मील पर है। इसको वहाँ पर "केमारी बन्दर" कहते हैं। शहर से बन्दरगाह को जो लम्बी सड़क जाती है, उसका नाम भी "बन्दर रोड" है। बन्दरगाह को जाते समय बीच में समुद्र का एक बहुत बड़ा लम्बा-चौड़ा सोता पड़ता है। इसके ऊपर दो सुन्दर पुल बने हुए हैं। इस डबल पुल को "हार्डिञ्ज ब्रिज" या "नेटिव जट्टी पुल" कहते हैं। बहुत ही विशाल और भव्य पुल है। पुल के एक तरफ़ शहर के स्त्री-पुरुषों के नहाने के लिए अलग-अलग घाट बने हुए हैं। स्त्रियों का घाट चारों ओर दीवाल से घिरा है। एक पुल घोड़ागाड़ी, ट्राम और मनुष्यों के आने-जाने के लिए है, और दूसरा रेलगाड़ी के लिए। बन्दरगाह पर पहुँचने पर सामने ही "मनोरे" इत्यादि को जाने के लिए सुन्दर सजी हुई डोंगियाँ दिखलाई देती हैं। उसके एक ओर हट कर जहाज़ों का बड़ा भारी अड्डा है। जिस दिन हम बन्दरगाह देखने गए थे, उस दिन "सीटी ऑफ़ पेरिस" और "शिमला" नामक सुन्दर वृहद्‌काय जहाज़ भी इसी बन्दर पर लगे हुए थे। इनमें से एक जहाज़ मुसाफ़िरों को लेकर जाने को तैयार था। इसके सब से निचले दरजे, यानी तीसरे दर्जे, में बहुत से पञ्जाबी और सिक्ख इत्यादि जानवरों की तरह भरे हुए थे। सब अपने दर्जे के बड़े-बड़े छेदों से मुँह निकाल कर खाने-पीने का सौदा रास्ते के लिए ख़रीद रहे थे। मुझे उनको देख कर बड़ा कौतूहल हुआ।

### हवा-बन्दर या क्लिफ़्टन

यह स्थान कराची शहर से कोई ७८ मील पर समुद्र के किनारे है। यहाँ एक बहुत ही लम्बा-चौड़ा प्लेटफ़ॉर्म है। प्लेटफ़ॉर्म में एक ओर सुन्दर बेञ्चें पड़ी रहती हैं। दोनों तरफ़ और बीच में सुन्दर पत्थर की विशाल बारहदरियाँ बनी हुई हैं। बीच से एक लम्बा सा पुल नीचे समुद्र की ओर मैदान में चला जाता है। हवा खाने के लिए यह स्थान बहुत ही सुन्दर, रमणीय और भव्य है। चारों ओर कोसों तक मैदान और सामने समुद्र का मनोहर दृश्य है। हवा यों ही कराची में, मैदानों के कारण, बड़ी तेज़ रहती है—फिर "हवा-बन्दर" का कहना ही क्या है! यहाँ समुद्र-स्नान का बड़ा आनन्द है। इस स्थान को श्री० जहाँगीर कोठारी नाम के एक पारसी सज्जन ने तीन लाख रुपए लगा कर बनवाया है। परन्तु जैसे बम्बई में "चौपाटी" की सैर का आनन्द सभी ग़रीब और अमीर ले सकते हैं, वैसे यहाँ नहीं। क्योंकि यह "हवा-बन्दर" शहर की बस्ती से बहुत दूर पड़ता है। मोटर और घोड़ागाड़ी वाले ही सहज में पहुँच सकते हैं। इस स्थान के पास समुद्र के किनारे शिवजी का एक मन्दिर भी है, जहाँ शिवरात्रि के दिन बड़ा भारी मेला लगता है।

### सरकारी बाग़ या चिड़ियाघर

यह स्थान शहर से कोई तीन मील के फ़ासले पर है। बाग़ में नाना प्रकार के स्थल-चर, जलचर और नभचर जीव-जन्तु और पशु-पक्षी एकत्र करके यथास्थान पाले गए हैं। बीच में एक सुन्दर कृत्रिम तालाब बना हुआ है। उसके ऊपर सैर करने के लिए एक ऊँचा सा "हैङ्गिङ्ग ब्रिज" अर्थात् झूलता हुआ पुल भी बहुत सुन्दर बना हुआ है। इस तालाब में भाँति-भाँति के जल-पक्षी और मछलियाँ इत्यादि हैं। इनके सिवाय जगह-जगह पानी के कुण्डों में विचित्र-विचित्र अन्य जल-जन्तु भी हैं। इस बाग़ में कई प्रकार के शेर, चीते, भेड़िए, हिरन, बन्दर, दरियाई घोड़े, दरियाई हाथी और जङ्गली सुअर इत्यादि मौजूद हैं। चित्र-विचित्र रङ्ग के पक्षी भी जगह-जगह किलोलें कर रहे हैं। मैंने शेर के साथ एक बिल्ली को भी खेलते हुए यहीं पर देखा। बिल्ली शेर के मुँह से माँस का टुकड़ा खींच कर खा रही थी। दोनों को प्रेम से खेलते हुए देख कर पहले तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर अपने साथी मित्रों से मैंने कौतूहलपूर्वक कहा—बिल्ली शेर की मौसी कहलाती है। यह मौसी का प्रेम है!

### मग्गापीर

यह स्थान कराची से बहुत दूर, कोई सोलह मील पर है। यहाँ घोड़ागाड़ी, टाँगा तथा मोटर जाती है। पूरा एक दिन का सफ़र है। यहाँ की एक पहाड़ी पर "मग्घे पीर" की एक पुरानी दरगाह है। नीचे एक सुन्दर तालाब है, जिसमें बड़ी-बड़ी सुन्दर मछलियाँ और मगरमच्छ हैं। यहाँ से कुछ दूर पर गन्धक के गरम जल के सोते हैं, जिनमें स्नान करने से चर्म-रोग दूर हो जाते हैं। यह स्थान बहुत ही स्वास्थ्यप्रद समझा जाता है। यहाँ कुष्ठ रोग के बहुत से रोगी आकर निवास करते हैं। कहते हैं, इस जलवायु और स्नान से उनको बहुत लाभ होता है।

### रहन-सहन इत्यादि

कराची शहर सिन्ध प्रान्त के अन्तर्गत है। इसलिए यहाँ की मुख्य भाषा सिन्धी है, जो अरबी के समान टेढ़े और उलटे अक्षरों में लिखी और छापी जाती है। कुछ उत्साही मारवाड़ी और सिन्धी भाई राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के प्रचार की ओर ध्यान दे रहे हैं। मारवाड़ी विद्यालय, शिकारपुरी पञ्चायती स्कूल और पुस्तकालय, प्रियतम धर्म-सभा, आर्य-समाज, सिन्धु-संस्कृत उत्तेजक मण्डल, न्यू हाई स्कूल, सरस्वती मन्दिर पाठशाला, इत्यादि संस्थाओं के द्वारा हिन्दी-प्रचार का कार्य हो रहा है।

हिन्दू सभ्यता का प्रभाव यहाँ बहुत कम देखा जाता है। लोगों का रहन-सहन विलासितापूर्ण है। बड़े-बड़े कुलीन हिन्दुओं में भी मांस-भक्षण का प्रचार है। यहाँ की तरकारी-भाजी की दूकानों से अधिक हिस्से में मांस की ही दूकानें हैं। मछलियाँ तो जगह-जगह बिकती हैं। सिन्धी, मारवाड़ी, कच्छी, गुजराती, पञ्जाबी, पारसी इत्यादि जाति के लोग विशेष दिखाई देते हैं। स्त्रियों में पर्दे का रिवाज़ यहाँ बिल्कुल नहीं है। पोशाक सुन्दर पहनने का यहाँ बहुत शौक़ है। हिन्दू-धर्म के मन्दिर इत्यादि बहुत ही कम दिखाई देते हैं! आग़ाख़ानी मज़हब का यहाँ बहुत प्रचार हो रहा है। हज़ारों हिन्दू स्त्री और पुरुष इनके फेर में पड़ कर मुसलमान बन गए हैं, जिनको वहाँ "ख़ोजा" कहते हैं। आग़ाख़ाँ का एक बड़ा भारी मठ है, जिसमें उनकी ओर से एक मुसलमान गुरु महन्त रहता है। ईसाई-मिशन की तरह इनका ख़ूब प्रचार हो रहा है। लाखों रुपया हिन्दुओं ही से लेकर उन्हीं को मुसलमान बनाने में ख़र्च किया जाता है। आग़ाख़ानी गुरुओं ने कुछ ऐसे आकर्षण रक्खे हैं कि जिनमें भोले और ग़रीब ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े अमीर भी फँस जाते हैं। यहाँ हिन्दू-धर्म और सभ्यता के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। इसके बिना सच्चे राष्ट्रीय भाव भी मज़बूती से क़ायम नहीं रह सकते। इसको मैंने कराची में ख़ूब अनुभव किया है।

* * *

यह पुस्तक 'कमला' नामक एक शिक्षित मद्रासी महिला के द्वारा अपने पति के पास भेजे हुए पत्रों का हिन्दी-अनुवाद है। इन गम्भीर, विद्वत्तापूर्ण एवं अमूल्य पत्रों का मराठी, बङ्गला तथा कई अन्य भारतीय भाषाओं में बहुत पहले अनुवाद हो चुका है। पर आज तक हिन्दी-संसार को इन पत्रों के पढ़ने का सुअवसर नहीं मिला था।

इन पत्रों में कुछ को छोड़, प्रायः सभी पत्र सामाजिक प्रथाओं एवं साधारण घरेलू चर्चाओं से परिपूर्ण हैं। उन पर साधारण चर्चाओं में भी जिस मार्मिक ढङ्ग से रमणी-हृदय का अनन्त प्रणय, उसकी विश्व-व्यापी महानता, उसका उज्ज्वल पति-भाव और प्रणय-पथ में उसकी अक्षय साधना की पुनीत प्रतिमा चित्रित की गई है, उसे पढ़ते ही आँखें भर जाती हैं और हृदय-वीणा के अत्यन्त कोमल तार एक अनियन्त्रित गति से बज उठते हैं। अनुवाद बहुत सुन्दर किया गया है। मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों के लिए २।) मात्र!

आज हमारे अभागे देश में शिशुओं की मृत्यु-संख्या अपनी चरम-सीमा तक पहुँच चुकी है। अन्य कारणों में माताओं की अनभिज्ञता, शिक्षा की कमी तथा शिशु-पालन सम्बन्धी साहित्य का अभाव प्रमुख कारण हैं।

प्रस्तुत पुस्तक भारतीय गृहों की एकमात्र मङ्गल-कामना से प्रेरित होकर, सैकड़ों अङ्गरेज़ी, हिन्दी, बङ्गला, उर्दू, मराठी, गुजराती तथा फ़्रेञ्च पुस्तकों को पढ़ कर लिखी गई है।

गर्भावस्था से लेकर ९-१० वर्ष के बालक-बालिकाओं की देख-भाल किस तरह करनी चाहिए, उन्हें बीमारियों से किस प्रकार बचाया जा सकता है, बिना कष्ट हुए दाँत किस प्रकार निकल सकते हैं, रोग होने पर क्या और किस प्रकार इलाज और शुश्रूषा करनी चाहिए, बालकों को कैसे वस्त्र पहनाने चाहिएँ, उन्हें कैसा, कितना और कब आहार देना चाहिए, दूध किस प्रकार पिलाना चाहिए, आदि-आदि प्रत्येक आवश्यक बातों पर बहुत उत्तमता और सरल बोल-चाल की भाषा में प्रकाश डाला गया है। मूल्य २); स्था० ग्रा० से १॥) मात्र!

छप रही है!

प्रकाशित हो रही है!!

[ लेखक—अध्यापक ज़हूरबख़्श जी 'हिन्दी-कोविद' ]

'स्फुलिङ्ग' विद्याविनोद-ग्रन्थमाला की एक नवीन पुस्तक है। आप यह जानने के लिए उत्कण्ठित होंगे, कि इस नवीन वस्तु में है क्या? न पूछिए कि इसमें क्या है! इसमें उन अङ्गारों की ज्वाला है, जो एक अनन्त काल से समाज की छाती पर धधक रहे हैं, और जिनकी सर्व-संहारकारी शक्ति ने समाज के मन-प्राण निर्जीव-प्राय कर डाले हैं। 'स्फुलिङ्ग' में वे चित्र हैं, जिन्हें हम नित्य देखते हुए भी नहीं देखते और जो हमारे सामाजिक अत्याचारों का नग्न प्रदर्शन कराते हैं। 'स्फुलिङ्ग' देख कर समाज के अत्याचार आपके नेत्रों के सामने सिनेमा के फ़िल्म के समान घूमने लगेंगे। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि 'स्फुलिङ्ग' के दृश्य देख कर आपकी आत्मा काँप उठेगी, और हृदय? वह तो एक-बारगी चीत्कार कर मूर्च्छित हो जायगा। 'स्फुलिङ्ग' वह वैतालिक रागिनी है, जो आपके सदियों के सोए हुए मन-प्राणों पर थपकियाँ देगी। 'स्फुलिङ्ग' में प्रकाश की वह चमक है, जो आपके नेत्रों में भरे हुए घनीभूत अन्धकार को एकदम विनष्ट कर देगी।

'स्फुलिङ्ग' में कुशल-लेखक ने समाज में नित्य घटने वाली घटनाएँ कुछ ऐसे अनोखे ढङ्ग से अङ्कित की हैं, कि वे सजीव हो उठी हैं। उन्हें पढ़ने से ऐसा बोध होता है, जैसे हमारे नेत्रों के सामने दीनों पर पाशविक अत्याचार हो रहा हो तथा हमारे कानों में उनकी करुण चीत्कार-ध्वनि गूँज रही हो। भाषा में ओज, माधुर्य और करुणा की त्रिवेणी लहरा रही है। हमारा अनुरोध है, कि यदि आपके हृदय में अपने समाज तथा देश के प्रति कुछ भी कल्याण-कामना शेष है, तो आज ही 'स्फुलिङ्ग' की एक प्रति ख़रीद लीजिए। पुस्तक छप रही है। शीघ्र ही ऑर्डर रजिस्टर करा लीजिए!

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक इलाहाबाद

[ हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष ]

बड़े घर की बात है, कहते डर लगता है। इसलिए मेहरबानी करके इसे अपने ही तक रहने दीजिएगा। सुनते हैं,—सच झूठ की राम जानें—आज श्रीमती नौकरशाही और "भविष्य" के सम्पादक श्री० सहगल जी में "मन तू शुदम, तू मन शुदी, मन तन शुदम तू जाँ शुदी; ता कस न गोयद बाद अज़ीं मन दीगरम तू दीगरी।"* का मधुर व्यापार चल रहा है। एक क्षण की जुदाई भी नाक़ाबिले-बर्दाश्त हो रही है। वास्तव में जब दिल से दिल मिल जाता है, तो ऐसा ही होता है।

❀

नैनी जेल के एक दर्जन दिनों के वे मज़े अभी भूलने न पाए थे, कि क़ासिद इलाहाबाद के मैजिस्ट्रेट साहब का नामए-नामी लेकर पहुँचा;—'जल्दी मिलिए, बहुत ज़रूरी काम है; 'भविष्य' के किसी लेख के बारे में बातचीत करनी है।' हमें डर है, कि कहीं यह उल्फ़त का बाज़ार कुछ दिन यों ही गरम रह गया, तो एक दिन श्रीमती जी 'कुलकानि' गँवा कर दादा 'भविष्य' की गलियों में धूनी रमा कर बैठ जायँगी और खञ्जड़ी बजाकर अलापने लगेंगी—

"अपने पिया की मैं जोगन बनूँगी।"

❀

उधर लँगोटी बाबा को नई दिल्ली के रङ्गमहल का ऐसा चसका लगा है, कि लकुटिया के सहारे लम्बे डेग डालने के लिए हमेशा तैयार ही बैठे रहते हैं। घण्टों तक राज़ो-नमाज़ की बातें होती रहती हैं। यहाँ तक कि जेलख़ाने के कटोरे में 'मधुकरी' भी वहीं पहुँच जाती है। बताइए, इसे बसन्त का असर कहें या कलिकाल की ख़ूबी?

❀

अरे भई, समझौता हो गया, आए दिन की मुसीबत से जान बची। मुफ़्तख़ोरों के लिए दोनों वक़्त रोटी-दाल का इन्तज़ाम करने से छुट्टी मिली। बस, श्रीमती ने निश्चिन्त होकर कानों में तेल डाल लिया है, अब न श्री० सुभाषचन्द्र बोस की पुकार सुनती हैं, और न श्री० राजेन्द्रप्रसाद जी की चिल्लाहट पर कान देती हैं। मगर जनाबे आली, यह प्रथम चुम्बन में गाल-कटौअल हिज़-होलीनेस को ज़रा भी अच्छी नहीं लगती। यह तो वही कहावत हुई कि 'शोरवा' चट कर जाना और बोटी से परहेज़!

❀

इसलिए अपने राम की सीधी-सादी सम्मति है, कि श्रीमती एक बार अपने राजनीतिक 'क़फ़स' का दरवाज़ा खोल कर भरपेट शान्ति के मज़े लें या फिर वही पहले वाली 'रफ़्तार-बेढङ्गी' आरम्भ कर दें। यह 'नीमे दरूँ नीमे बरूँ' वाली नीति अच्छी नहीं। अन्यथा यह समझौता अन्त में 'हँसब ठठाई, फुलाउब गालू' की तरह हास्यास्पद ही सिद्ध होगा।

❀

भई, यह बूढ़ा भारत भी, माशा अल्लाह, तक़दीर का साँढ़ ही मालूम होता है। इसके फटे दामन में एक न एक चहल-पहल मची ही रहती है। गाँधी-इर्विन समझौते की कृपा से 'लाठी-खोपड़ी-सम्मेलन' का क्षणिक अवसान हुआ तो चट 'दाढ़ी-चोटी-सम्मेलन' आरम्भ हो गया! एक चहल-पहल गई, तो दूसरी आरम्भ हुई। मानो—

आके सज्जादनशं क़ैस हुआ मेरे बाद,
रही न सहरा में ख़ाली कोई जा मेरे बाद।

❀

'मरज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की' का मज़मून है। लीडराने-मुल्क मेल-मिलाप के लिए सिर-मग़ज़न कर रहे हैं, मगर सनीचर देव के सामने एक नहीं चलती, जैसे अल्लाह मियाँ की नहीं चलती, उस मरदूद शैतान के सामने। इसलिए क्यों न एक दफ़े दाढ़ी-दल के रुस्तमों और चोटी-पार्टी के महावीरों को दिल का बुग़्ज़ निकाल लेने दिया जाए। आख़िर, बेचारों के दिलों में जो जोशे-जवानी पिनहाँ है, वह काँटे रूँधने से थोड़े ही रुकेगा। मछली जब तक पर्वत से नहीं टकरायगी, तब तक उसे आटे-दाल का भाव कैसे मालूम होगा?

❀

मासिवा इसके, जिन तपस्वियों ने युगों की कड़ी मेहनत के बाद यह साम्प्रदायिकता की मज़बूत बुनियाद क़ायम की है, उन्होंने अपनी दाढ़ी के बाल कुछ धूप में सुखा कर सफ़ेद थोड़े ही किए हैं। लड़ने-भिड़ने की 'प्रेक्टिस' क़ायम रहेगी, तभी तो 'इक़बाली मुस्लिम भारत' का स्वप्न सार्थक होगा, या वह कोई कबाब-रोटी का लुक़्मा है, कि ज़बान पर रक्खा और चटनी के सहारे नीचे उतार दिया।

❀

और फिर, इन पवित्र कामों से महाप्रभु भी तो प्रसन्न रहते हैं और इस दृष्टि से 'आम का आम और गुठलियों का दाम' भी खड़ा हो जाता है। इहलोक और परलोक, दोनों की राह एक साथ ही साफ़ हो जाती है। इसीलिए १,००८ श्रीजगद्गुरु भी चाहते हैं, कि यह चहल-पहल ताक़यामत क़ायम रह जाए। आमीन! आमीन!!

❀

इसलिए 'भविष्य'-सम्पादक जी से प्रार्थना है, एक दिन अपने इलाहाबाद में भी दाढ़ी-चोटी-मिलन महोत्सव करा दें। क्योंकि वह तीर्थराज है, उसका काशी से पीछे पड़ जाना अतीव लज्जा की बात है। इसके सिवा चचा-चर्चिल की चिन्ता भी दूर होनी चाहिए। आख़िर बेचारे कब तक 'हाय भारत! हाय गुलझर्रा! और हाय रे वह सबूट चरणों की ठोकरों से तिल्लियों का फूटना!!!' बेचारे याद करते होंगे तो होंठ चाट कर रह जाते होंगे।

❀

यह सुन कर दाढ़ी-चोटी महा-मिलन के प्रेमी मात्र को प्रसन्नता होगी, कि बाबा ख़लीलदास साहब आजकल काशी में ही टिके हैं और गत दङ्गे का सारा दोष हिन्दुओं के मत्थे मढ़ कर चिर-शान्ति की व्यवस्था में लग गए हैं। अल्लाह आपकी साधु प्रचेष्टा को सफलता दे।

❀

श्रीजगद्गुरु को यह भी ख़बर लगी है, कि अबकी कॉङ्ग्रेस में हिन्दू-मुस्लिम मेल के लिए बड़ी-बड़ी चेष्टाएँ हो रही हैं। परन्तु चहल-पहल-पन्थियों को घबराना नहीं चाहिए, क्योंकि शुभकार्य में विघ्न तो होते ही रहते हैं और फिर उस कॉङ्ग्रेसी-मेल की वक़अत ही क्या है। जहाँ पूँछ पकड़ कर ज़रा सी मरोड़ दी, कि बेड़ा पार! एक झटका लगा कि पगहा अलग और खूँटा अलग!

❀

काशी के बाद आगरा और मिरज़ापुर के हिन्दू-मुस्लिम बहादुरों को 'रुस्तमे-हिन्द' और 'कलियुगी भीमसेन' की पदवियाँ मिलनी चाहिएँ। क्योंकि इन बेचारों ने जान पर खेल कर अपनी वीरता और बहादुरी की नाक रख ली है। अब मजाल नहीं किसी को, जो इन्हें 'अ-वीर' कह सके। मगर कानपुर वाले तो एकदम फिसड्डी निकले! खोपड़ी-मरम्मत का हाथ में आया हुआ सुवर्ण-सुयोग कमबख़्तों ने खो दिया। समझ में नहीं आता, कि ये कायर दस भले आदमियों में मुँह कैसे दिखाएँगे!

❀

लोग कहा करते हैं कि, गुण ना हिरानो गुण-ग्राहक हिरानो है!' मगर माशा अल्लाह, बम्बई कॉरपोरेशन ने हमारे ऑर्डिनेन्साचार्य श्रीमान लॉर्ड इर्विन को मानपत्र देने का प्रस्ताव पास करके इस अत्यन्त पुरानी और 'ज़ङ्ग आलूदा' उक्ति को दो कौड़ी का सिद्ध कर दिया है और साथ ही अपनी गुण-ग्राहकता का भी यथेष्ट परिचय प्रदान किया है। फलतः गुण अगर हो तो अपनी लँगोटी बेच कर भी उसके 'ग्राहक' होने वाले यहाँ मौजूद हैं।

❀

फिर बम्बई कॉरपोरेशन ने तो अपनी गुण-ग्राहकता का ही परिचय नहीं दिया है; बल्कि इस पवित्र कार्य द्वारा अपना आक़बत भी सुधार डाला है। अब अगर उसके वंशधर नास्तिक निकल जावें और मरने पर उसे पिण्डा-पानी न दें, तो भी कोई चिन्ता नहीं। क्योंकि उसका यह पुण्य-कार्य ही उसे तथा उसकी सात पुश्त को तारने के लिए काफ़ी है।

❀

बम्बई कॉरपोरेशन की तरह श्रीजगद्गुरु भी इर्विन शासन-काल के 'एडमायरर' हैं। क्योंकि जितनी काली खोपड़ियों की मरम्मत इस शासन-काल में हुई है, उतनी भारत के किसी नवाबी ज़माने में भी न हुई होगी। यही नहीं जनाब, कितने ही भाग्यशाली तो इस शासन-काल की बदौलत स्वर्ग के मज़े लूट रहे हैं, कितनी ही स्त्रियाँ सौभाग्य-सिन्दूर के विषम भार से बच गई हैं! फलतः लाट इर्विन को मान-पत्र देने का इरादा करके बम्बई कॉरपोरेशन ने डङ्के की चोट सिद्ध कर दिया है कि—'क़द्र गौहर शह बेदानद या बेदानद जौहरी।'

❀

ऑर्डिनेन्स प्रसव करने में तो 'इर्विनी रामराज्य' ने रहमत चाचा की काबुली बकरी और मदारू मियाँ की मुर्ग़ी को भी मात कर दिया था! भारत की तक़दीर खोटी है, कि आप अपनी छत्र-छाया समेटने वाले हैं, वरना कुछ दिन में 'ऑर्डिनेन्सी चूज़ों' के मारे भारत-

---

* मैं तू हो जाऊँ और तू मैं होजा; मैं शरीर होजाऊँ और तू प्राण होजा। ताकि इसके बाद कोई कह न सके कि मैं दूसरा हूँ और तू दूसरी है।

—मीर ख़ुसरो

बसुन्धरा पट जाती और 'कुकड़ूँकूँ' की कर्ण-भेदी आवाज़ के मारे भङ्ग-बूटी छानने पर सुख से निद्रादेवी की आराधना में भी व्याघात उपस्थित हो जाता।

❀

इसलिए बम्बई का गुणग्राही कॉरपोरेशन अगर एक साथ ही देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण से परित्राण पा जाना चाहता है, तो उसे लगे हाथ लॉर्ड इर्विन महोदय का कोई विमल स्मारक भी बनवा डालना चाहिए। ताकि अगली पीढ़ी वाले देखें और गुण-ग्राहकता के साथ ही भवभयहारिणी राजभक्ति की भी शिक्षा ग्रहण करें।

❀

ख़ैर, कुछ भी हो अपने राम तो लॉर्ड इर्विन की राजनीतिज्ञता के क़ायल हैं। ऐसी जादू की लकड़ी फेरी कि लँगोटी बाबा भी पिघल कर मोम हो गए। मञ्चेस्टर की तोंदों की चिन्ता मिटी और मरम्मत-तलब खोपड़ियों का सनीचर भी बिना काली वस्तु दान किए ही उतर गया! बस, अब चिर शान्ति के मज़े लीजिए और लाट साहब के जाहोजलाल की तरक़्क़ी के लिए मियाँ मदार की मज़ार पर रेवड़ी-बताशे चढ़ाइए।

❀

नैनीताल के सब-डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट साहब फ़रमाते हैं—"अतिरिक्त पुलिस-कर की वसूली में समझौता बाधक नहीं है।" एसेम्बली के गुलिस्तान के बुलबुले हज़ार-दास्तान श्री० क़ेरार का इरशाद है—"सन्धि में इस प्रकार की कोई शर्त नहीं है, कि नज़रबन्द भी छोड़ दिए जायँ और मैं विश्वास दिलाता हूँ, कि हिंसात्मक और अहिंसात्मक क़ैदियों का विचार करने में प्रान्तिक सरकारें उदारता से काम करेंगी।" बस, और चाहिए क्या? लॉर्ड इर्विन का यह गोरखधन्धा-नुमाँ समझौता है या कोई मज़ाक़ है। इसे अच्छी तरह समझना हो तो पहले भर पेट बूटी छानिए या बम्बई कॉरपोरेशन के स्वर में स्वर मिला कर 'देहिपद-पल्लव-मुदारम्' गाइए।

❀

फलतः हज़रते आला, इस इर्विनी समझौते के अनुसार अगर कुछ बाधक है तो कालों का स्वतन्त्रता के लिए रुगबगाना, वरना सखी नौकरशाही की तो 'वही रफ़्तार बेढङ्गी जो पहले थी, वह अब भी है!' वही अठ-खेलियाँ वही अल्हड़पन, वही बात-बात पर तिनकना और मुँह नोचने के लिए दौड़ पड़ना। बताइए, यह श्रीमान् लॉर्ड इर्विन साहब की जादू की लकड़ी का करश्मा नहीं तो और क्या है? ऐसी हालत में भी अगर उनके 'स्मारक-फ़ण्ड' में चन्दा देने के लिए आप जोड़ू के गहने गिरवी न रक्खेंगे तो क्या मुँह लेकर इस देश में रहेंगे?

❀

कॉङ्ग्रेस आन्दोलन की बदौलत यों तो बड़े-बड़े भाग्यशालियों का पता लगा है, परन्तु जैसी तक़दीर अल्लाह मियाँ ने कानपुर के नेशनल प्रेस को अता की है, वैसी शायद ही किसी की हो। जब से आन्दोलन आरम्भ हुआ है, तब से २२ बार उसकी लँगोटी की तलाशी हुई। फलतः हमारी राय है, कि भारत भर के प्रेसों की सभा करके उसे 'सर्च-प्रूफ़' की पदवी दी जाए और सरकार से प्रार्थना की जाए कि वह अपनी पुलिस की नाक की दवा करा डाले नहीं तो वह दिन दूर नहीं, जब उसे नौकरशाही के लहँगे में भी राजद्रोह की बू मालूम होने लगेगी।

❀

लॉर्ड लॉयड ने मञ्चेस्टर की एक सभा में भाषण देते हुए कहा कि "मि० गाँधी ने कहा है कि भारत में विलायती कपड़े न आने पाएँगे।" इस पर श्रोताओं ने कहा कि इन्हें गोली मार दी जानी चाहिए। बात ठीक है। जिनके पूर्वजों ने अफ़ीम न खाने के लिए हज़ारों चीनियों का क़त्ल करा दिया था, उनके वंशधर अगर कपड़े न ख़रीदने के कारण गाँधी को गोली मार देने की आज्ञा दें, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? अङ्गरेज़ के बच्चे से इससे अधिक और आशा ही क्या की जा सकती है? तुलसी बाबा ने क्या झूठ लिखा है कि:—

फरई कि कोदौ बालि सुसाली,
मुकुता स्रवै कि सम्बुक ताली?

❀

एक हिसाबी ने पता लगाया है, कि हिन्दू-राज्य में एक रुपए का एक मन घी बिकता था, मुसलमानी राज्य में २॥) का एक मन और अङ्गरेजी राज्य में ५७) का एक मन बिकता है। इससे मालूम होता है, कि यह राज्य पिछले राज्यों की अपेक्षा अधिक क़द्रदाँ है—यह वस्तु का मूल्य समझता है। इसलिए ईश्वर की अगर कृपा हो और यह राज्य कुछ दिन और रह जाए तो लड़के सुन कर आश्चर्य में पड़ जायगें कि इस देश में 'घी' नाम की भी कोई वस्तु होती थी और वह खाई भी जाती थी।

❀

'बॉम्बे क्रॉनिकल' को ख़बर लगी है कि गत गोलमेज़ के अवसर पर जब राजा लोग लन्दन-तीर्थ में गए थे, तो एक राजा साहब के एक वक़्त के भोजन के लिए एक दिन चार हज़ार पौण्ड ख़र्च हुए थे, दूसरे राजा साहब ने लाखों रुपए ख़र्च करके एक जहाज़ को ही रङ्गमहल बना रक्खा था और तीसरे हज़रत ने चार लाख रुपए अपनी क़मीज़ों और बनियाइनों के लिए ख़र्च किया था। किया होगा जनाब, तो आपका क्या? वही कहावत हुई कि 'तेली का तेल जले और मशालची की छाती फटे!' आख़िर राजापन को क्या कोई दुम होती है? मुफ़्त की गङ्गा और हराम का ग़ोता ही तो राजापन है।

❀

'कौवे का साची कोयल' स्वरूप भारत के पुराने नमकख़्वार लॉर्ड लॉयड ने भी चचा-चर्चिल के कन्धे से कन्धा भिड़ा दिया है और एक दिन नशे के झोंक में आकर बक गए कि 'अगर भारत को स्वायत्त-शासन दिया गया, तो इङ्गलैण्ड का दीवाला हो जाएगा।' आख़िर पुराना नमकख़्वार ठहरा, इसलिए बेचारे ने बात सवा सोलह आने सच्ची कह डाली है। मगर इन काले सङ्गदिलों की खोपड़ी में यह बात कहाँ धँसती है? इनकी तो बस यही चेष्टा है कि श्रीमती नौकरशाही के प्रेमालिङ्गन से मुक्त होकर ज़रा आराम की साँस लें। इसके बाद आपका दीवाला निकले या आपको क़ारूँ का ख़ज़ाना मिल जाए।

❀

नासिक के कलाराम मन्दिर के देवता जी पर, सम्भवतः फिर साढ़ेसाती महाराज की नज़र पड़ गई है। कई दिन हुए अछूतों की एक वृहद्वाहिनी ने देवता जी के आरामगाह पर हमला कर दिया था। परन्तु "जाको राखे साईयाँ, मारि सक नहि कोय, बाल न बाँका करि सकै जो जग बैरी होय।" फ़ौरन पुलिस पहुँची और अछूतों को मार भगाया; वरना देवता जी की ज़ात-पाँत गई ही थी!

❀

ब्रिटिश-साम्राज्य के शिर का महाशनीचर दूर हो गया! इसके साथ ही राहु और केतु की चिन्ता भी दूर हो गई। सारा देश चिल्लाता ही रह गया। मगर श्रीमती ने सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु और श्री० सुखदेव को अमर बना कर ही दम लिया! अब न चर्चिल साहब के हाथ से 'कोहनूर' के निकल जाने का खटका रहा और न लॉर्ड लॉयड को म० इङ्गलैण्ड के दिवा-लिया हो जाने की चिन्ता रही! इसलिए श्रीमती नौकरशाही को चाहिए कि इसकी ख़ुशी में एक दिन भर पेट थिरक लें। क्योंकि ताण्डव-नृत्य का ऐसा सुअवसर फिर नसीब न होगा!

❀

बला से इस उद्दण्डता के कारण सारा देश विक्षुब्ध हो उठा है और गाँधी-इर्विन समझौते की ज़िन्दगी ख़तरे में पड़ गई है। शान्ति की कामना कौन, नौकरशाही का कमबख़्त अङ्ग कर रहा है। यहाँ तो परमात्मा से प्रार्थना है कि किसी तरह फिर वह दिन आए और काली खोपड़ियों के साथ 'चौगान' खेलने का मौक़ा मिले।

* * *

छप गई ! छप गई !!

# रहस्यमयी

[ ले॰ श्री॰ ऋषभचरण जैन ]

समाज-सेवा, देशभक्ति तथा एक देशोपकारी संस्था की आड़ में यदि अत्यन्त भयङ्कर तथा वीभत्स घटनाओं का नग्न चित्र देखना हो अथवा 'महाशय जी' व 'देवी जी' नामधारी नर-पिशाचों के आन्तरिक पापों का भण्डाफोड़ देखना हो तो इस पुस्तक को उठा लीजिए। कुछ ही पन्ने पढ़ कर आप आश्चर्य की मूर्ति बन जायँगे, आपके रोम-रोम काँपने लगेंगे। जो स्त्री कि वाह्य जगत् में अत्यन्त पूज्य, अनिन्द्य सुन्दरी, विदुषी, सुशीला तथा समाज-सेविका है, वह वास्तव में व्यभिचारिणी, कलङ्किनी, पापिनी, हत्यारिणी तथा एक वेश्या से भी घृणित है। समाज में प्रतिष्ठित रहते हुए वह भीतर ही भीतर इन पापों की पूर्ति के लिए कैसे-कैसे रहस्य रचती है—इसका अत्यन्त रोमाञ्चकारी वर्णन इसमें किया गया है।

सुखवती देवी नाम्नी एक अत्यन्त सुन्दरी तथा विदुषी महिला किस प्रकार अपने पति का गला घोंट कर, एक प्रेस तथा मासिक पत्र की सञ्चालिका बन जाती है, समाज-सेवा की आड़ में किस प्रकार देवी जी ने अनेक धनिक पुरुषों को अपने जाल में फँसा कर रुपया एँठा तथा ब्रह्मचर्य के पवित्र नाम पर किस प्रकार दर्जनों होनहार नवयुवकों का सर्वनाश किया और एक नवयुवक के प्राण लेकर ही अपने प्राण त्यागे; इतना नाटक खेलते हुए भी किस प्रकार देवी जी समाज में पूज्य ही बनी रहीं—इसका सारा रहस्य जादू की क़लम से लिखा गया है। पुस्तक के एक-एक शब्द में रहस्य भरा हुआ है। पुस्तक की छपाई-सफ़ाई दर्शनीय है। पृष्ठ-संख्या लगभग २०० ; मूल्य लागत मात्र १॥) रु०, स्थायी ग्राहकों से १=) मात्र। शीघ्रता कीजिए। पुस्तक छप रही है। अभी से अपना नाम रजिस्टर करा लीजिए।

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामों को एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं, तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २।)

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका वर्णन इसमें बहुत ही रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा। मूल्य ॥)

 व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Registered No. A—2085



Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.